25

Pandit Sri Svadhyaya

इस क्याका उत्तर बहुत ही सरल और छोटा है उसका अपनी भाषाके साथ प्रेम। किसी भी देशकी भाषा और संस्कृतिका बिल्कुल चौली दामनका सम्बन्ध होता है। कोई भी विजेता जाति किसी भी विजित जाति पर अपना शासन दृढ़ और स्थायी बनानेके लिए सर्वप्रथम उसकी संस्कृतिको कुचलना या आत्मसात् करना चाहती हैं। परन्तु ऐसा करनेमें वह तबतक असफल रहती है जब तक वह विजित जाति पर अपनी भाषा लादने और उस देशकी संस्कृतिके अजेय दुर्ग उसकी भाषाको सर्वथा उपेक्षित और समूल नष्ट करनेका सनातन अस्त्र नहीं अपनाती। भारतीय इतिहाससे परिचित किसी भी व्यक्तिसे यह बात छिपी नहीं है कि भारतमें आने वाली हर विजेता जातिने इस महास्त्रको भी अपनाया। यवन कालमें फारसी और उसकी पुत्री उर्दू जैसी विदेशी भाषायें राष्ट्रभाषाके पद पर आसीन हुई। एक बार राज्याश्रयका प्रलोभन देकर हमें फारसी तथा उर्दू सीखनेको वाध्य किया गया तो दूसरी वार श्वेत महाप्रभुओंके इस भूमि पर पदार्पण और शासनके साथ ही हमें उनकी अङ्गरेजीका भी स्वागत करनेको वाध्य होना पड़ा। और आज भी इससे मुक्ति नहीं मिली है। फिर भी इस दुर्दिनके समयमें भी जो हम अपनी प्रिय संस्कृतिकी गोदमें पलते पोसते जा रहे हैं उसका एक मात्र कारण है हमारा अपनी प्रिय भाषा संस्कृतके साथ प्रेम और उसका हमारी संस्कृतिके साथ अटूट सम्बन्ध। विश्वकी प्रायः सभी प्राचीन भाषायें सचमुच निष्प्राण हो चुकी हैं। आज रोमकी लैटिन, अवेस्ताकी पश्तो और बाइबिल की मूलभाषा हिब्रू का नाम कितने लोग जानते हैं, परन्तु संस्कृत आज भी अमर है और जबतक हिन्दू जाति रहेगी इस अमर भारतीके साथ हमारी हिन्दू संस्कृति भी सदा अमर होकर रहेगी।

युग बदले, विचार बदले, नित्य नये-नये धर्म या सम्प्रदाय उत्पन्न हुए और विलीन हुए, एक या अनेक युगोंमें हमारी विचारधारा भी परिवर्तित होती रही, शासनसूत्र विदेशियोंके हाथोंमें गए, राज्य-भाषायें नित्य नई बनती और बिगड़ती रहीं, पर भारत संस्कृतसे विमुख होना अपनी संस्कृतिसे विमुख होना समझ कर निरन्तर उसकी उपासना करता रहा। वैदिक युगसे लेकर आज तक काश्मीरसे कुमारी अन्तरीप तक और अटकसे कटक तकके सभी प्रान्तों में संस्कृत न केवल धर्मभाषाके ही रूपमें प्रतिष्ठित रही, प्रत्युत व्यवहार भाषा भी यही थी और वर्तमान में भी है। इसने अपने वे दिन भी देखे हैं जब यह राष्ट्रभाषाके आसन पर विराजमान थी। राजा भोजके समयमें तो न केवल हिन्दू मात्रकी ही अपितु यहां बसने वाली विदेशी जातियोंकी भी व्यवहार भाषा थी। कुछ पाठक सम्भवतः विस्मित होंगे कि आजकल संस्कृत हमारी व्यवहार भाषा कहां और कैसे है, पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर इसकी सत्यता स्पष्ट प्रमाणित हो जाएगी। जिस भाषामें लाखों हिन्दू अपना नित्य नैमित्तिक कार्य करते और जिसके बिना हिन्दू जातिका छोटेसे छोटा कार्य साधारण गमनागमन भी नहीं सम्पन्न होता, वह व्यवहार भाषा नहीं तो और क्या है ? जन्म या उससे भी पूर्व गर्भाधानसे लेकर मृत्यु अन्त्येष्टि पर्यन्त सभी संस्कार संस्कृत भाषामें ही सम्पन्न होते हैं। हम छोटेसे छोटे भी किसी कार्यके प्रारम्भमें ईश्वर और अपने अन्यान्य इष्ट देवताओंके स्मरणके साथ स्वयं संस्कृतके मंगलाचरणात्मक श्लोकों अथवा वैदिक मन्त्रोंका उच्चारण करते या किसी संस्कृतज्ञको अपना प्रतिनिधि बना कर करवाते हैं। इस प्रकार हमारे जीवनके प्रत्येक अंशमें संस्कृत ओतप्रोत है, अनुस्यूत है। हमने यवन कालमें "नवदेत् यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि" कह कर संस्कृतके प्रति जो मोह प्रकट किया था वह वास्तवमें हमारी संस्कृतिके प्रति हमारे प्रगाढ़ प्रेम और मोहका प्रतीक है।

आज तक लाखों ब्राह्मणकुमारोंने अपनी सभी ऐहिक सुखोंकी कामनाओंको होम कर, कभी दिनमें एक बार भोजन कर और कभी सूखे चने चबा कर संस्कृत भाषाकी ही नहीं प्रत्युत आर्यसंस्कृतिकी भी रक्षा की है और आज भी कर रहे हैं। जिस भाषा

में आज भी अनेकों पाक्षिक मासिक पत्रपत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं और प्रतिवर्ष अनेकों अभिनव रचनाओंसे जिसका साहित्य भण्डार भरता जा रहा है; उस भाषा को भी यदि विश्वकी अन्य प्राचीन भाषाओंके साथ कुछ अपने नेत्रों पर पाश्चात्त्य संस्कृति और भाषा के उपनेत्र धारण करने वाले व्यक्ति 'मृतभाषा' कहें तो हम उन्हें क्या कहें। ऐसे सुकुमार बुद्धि-जनों पर हमें क्या किसीको भी दया आ सकती है। यदि हममें मानवताके नाते कुछ भी कृतज्ञता शेष रह गई है तो हमें स्मरण रखना चाहिये कि हजारों वर्षोंके हमारी पराधीनताके दिनों में यदि विश्वके अन्यान्य राष्ट्रोंके सम्मुख किसीने भारतका सिर ऊंचा रक्खा है तो हमारे संस्कृत वाङ्मय और हमारी प्राणप्रिय आर्य संस्कृतिने। मानव सभ्यताका प्रथम पृष्ठ जिन वेदों से प्रारम्भ होता है वे न केवल हिन्दुओंके ही लिए अपितु आज विश्वकी मानवजाति मात्रके लिए गर्व और गौरवकी वस्तु हैं। आज भी भारतकी विविध प्रान्तीय भाषाएं हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी प्रभृति अपनी जननी संस्कृतका स्तन्यपान कर अपनेको सबल बनानेका निरन्तर प्रयत्न करती हैं। इस प्रकार जिस भाषा और उसके उपासकोंने सुदिन और दुर्दिनमें सदैव हमारी संस्कृति और साहित्य की रक्षा कर हमारा सिर स्वाभिमानसे ऊंचा रक्खा है उसके प्रति आज यदि हमने अपने कर्तव्यका पालन नहीं किया तो यह बहुत बड़ी आत्म-प्रवञ्चना होगी और होगी पाशविक अकृतज्ञता।

आज गत महासमरने विश्वकी रूपरेखा बदल दी है। चारों ओर परिवर्तन और क्रांतिकी लहरें उठीं हुई हैं, भारत भी इससे अछूता नहीं हैं, वह आज परिवर्तन और क्रान्तिका ज्वालामुखी हो रहा है। गत सैकड़ों वर्षोंसे हमारे लिए अभिशाप बनी ब्रिटिश सरकार आज अपना प्रतिनिधि शिष्टमण्डल भेजकर हमें हमारी राज्यसत्ता हस्तान्तरित करनेको बाध्य हो रही है। आशा है कि निकट भविष्यमें ही हमारे देशका शासनसूत्र भारतीय राष्ट्रके सच्चे कर्णधार और भारतीय संस्कृति के प्रिय सपूत हमारे वर्तमान नेतृवृन्दके हाथ आने ही वाला है। आज हम भारतीयोंके सौभाग्यसे भारतको जैसे योग्य नेतृवृन्दका नेतृत्व प्राप्त है उनसे निश्चय ही हमारा भविष्य उज्ज्वल है। भारतीय राष्ट्रके अभ्युत्थानके इस शुभ अवसर पर हम अपने नेतृवृन्दसे आशा ही नहीं प्रत्युत विश्वास करते हैं कि वे समय मिलते ही अन्य आवश्यक कार्यों के साथ ही हमारी भारतीय संस्कृति और उसकी पोषिका संस्कृत भाषा को जिसको हमने युग-युगसे अधिकसे अधिक त्याग और तपस्याके द्वारा किसी भांति जीवित ही नहीं, सम्मान पूर्ण सुरक्षित रक्खा है उसकी सुरक्षा और अभ्युत्थान की ओर ध्यान देना अपना प्रमुख कर्तव्य समझेंगे।

❀ चेतावनी ❀

कबीरा जो दिन आज है, सो दिन नाहीं काल।
चेत सकै तो चेतियो, मीच खींचि है काल ॥

पांच पहर धन्धे गए, तीनि पहर रहे सोय।
एकौ घड़ी न हरि भजै, मुक्ति कहां ते होय ॥

पांच तत्त्वका पूतला, मानुष धरिया नाम।
दिना चारके कारने, फिरि-फिरि रोकै ठाम ॥

तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते

[लेखक--श्री पं० दीनानाथजी शर्मा शास्त्री सारस्वत विद्याभूषण विद्यावागीश विद्यानिधि]

आज कल बुद्धिवाद अथवा तर्कवाद – चाहे उसे काम कार कहो का दौरा खूब हो रहा है, परन्तु वह स्थिरमूल नहीं होता। जिस मतमें तर्क-प्रधानता होगी वह मत भी स्थिररूप नहीं होगा, किन्तु वह विरूप होता रहेगा। इधर सांसारिक जीवोंकी वृत्ति प्रायः निम्नगामिनी हुआ करती है, वह सदा आलस्यदोषसे वा अनर्गल आनन्दकी अभिलाषासे धर्मके कठिन बन्धनोंको तोड़कर स्वेच्छाचारसे चलना चाहती है, और उस स्वेच्छाचारकी युक्तताको सिद्ध करनेके लिये उनकी बुद्धि स्वकल्पित अनेक हेतुवादोंको उपस्थित किया करती है, परन्तु ऐसा स्वीकार करलेनेपर मानवी बुद्धि निम्नतामें ही पहुंच जाएगी, वह उच्चमार्ग गामिनी नहीं बन सकती। इसलिये उस पर शास्त्रका अङ्कुश रख दिया गया है, जिससे वह अवनत न होजाए।

यदि शास्त्र शृङ्खला को छिन्न कर दिया जाय, तो सभी उच्छृंखल होजाएं, पता नहीं कहां पहुंच जाएं। रोगीको कड़वी दवाई इष्ट नहीं होती, वह उसे नहीं पीना चाहता, उसमें कठोरता मानता है। परन्तु जब पीता है, तब परिणाममें लाभ पाता है। इस प्रकार शास्त्रीय नियम भी असंयमियोंको अनभीष्ट प्रतीत होते हैं, परन्तु वे 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्' (१८।३७) हो जाया करते हैं। हमारे शास्त्रों में एक ही प्रकारका नियम नहीं हुआ करता, किन्तु देश-काल-पात्र-बलाबल विचार कर उसमें सदाके लिये पहलेसे ही नियम नियमित कर दिये गये हैं। तब उनमें परिवर्तनकी आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि हमारा शास्त्र पूर्ण हैं।

फलतः धर्मके विषयमें जितना मूल्य शास्त्रका होता है, उतना तर्क वा बुद्धिवादका नहीं। तर्क तो प्रमाणका सहायकमात्र होता है, परन्तु तर्कके आश्रय पर निर्भर नहीं रहना चाहिये। न्यायशास्त्र तर्कशास्त्र माना जाता है, उसका दूसरा नाम आन्वीक्षिकी है, वह भी केवल तर्कपर अवलम्बन नहीं करता प्रत्युत आगम (शास्त्र) विरुद्ध तर्कको न्यायाभास कहता है, देखिये न्यायदर्शनके १।१।१ सूत्रका वात्स्यायन भाष्य।

यदि बुद्धिकी प्रमाणता हो, तो किसकी बुद्धि? तथा किस देश वालेकी बुद्धि एवं कैसी बुद्धिकी प्रमाणता हो। 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' के अनुसार प्रत्येक पुरुषकी बुद्धियोंमें परस्पर भेद स्वाभाविक है। एक ही पुरुषकी बुद्धिमें भी एक रूपता नहीं होती। उसके जीवनमें भी उसकी बुद्धिके अनेक रूप देखे गये हैं। ऐसी बुद्धि भी हो सकती है, जो धर्मको अधर्म, तथा कार्यको अकार्य जानती है, तब बुद्धिका सर्वोपरि प्रामाण्य कैसे हो सकता है।

इसके अतिरिक्त बहुतसी बातें ऐसी भी होती हैं, जो बुद्धि वा तर्कसे नहीं जानी जा सकतीं। तब बुद्धि की अन्तिमता क्या हुई। "यो बुद्धेः परतस्तु सः" गीता ३।४२ "बुद्धेरात्मा महान् परः" कठोपनिषत् १।३।१० इत्यादि में अन्तिम परमात्मा को ही माना गया है। उसी बुद्धिसे परे परमात्माने 'तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते' १६।२४ इस प्रकार कामकार (तर्कादि) की प्रतिद्वन्द्विता में शास्त्रको अधिक रक्खा है। 'किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः' ४।१६ यहां पर कविक्रान्तप्रज्ञ पुरुषोंकी बुद्धिको भी अवर माना है।

इसलिये निरुक्तमें भी ['पुरुषविद्या नित्यत्वात् कर्मसम्पत्तिमन्त्रो वेदे' (१।२।७) यहां पर पुरुषकी बुद्धिको अनित्यमान कर वेद शास्त्रकी आवश्यकता बताई है। ठीक ही तो है। पुरुषकी बुद्धि जहां

अनित्य होती है, वहां एकदैशिक भी होती है, वह अपने हितको विचारती है, स्वार्थपरा होती है, अपनी सुविधाका ही विचार करती है, अपने पक्षपातमें ही लगी होती है, क्योंकि उसमें रागद्वेष होता है, पर परमात्मामें वैसी बात नहीं। उसकेलिये न्यायदर्शनमें ठीक ही कहा है।

'आप्तकल्पश्चाऽयम् यथा पिताऽपत्यानाम् तथा पितृभूत ईश्वरो भूतानाम् (४।१।२१)

तब वह अपनी प्रजाका हिताहित ठीक जानता है, क्योंकि उसका ज्ञान एकदेशी नहीं। तभी उसका वेद परम प्रमाण है। उसमें परिवर्तन नहीं होता। ऋषि मुनियोंने समाधि द्वारा वेदार्थका स्मरण कर स्मृतियां बनाई हैं। तब उन स्मृतियों में भी परिवर्तन नहीं हुआ करता। तब बुद्धि तथा शास्त्रमें शास्त्र ही अतिशायी सिद्ध हुआ।

श्री स्वामी शङ्कराचार्यने वेदान्तदर्शनके ३।१।२५ सूत्रके भाष्यमें क्या ही अच्छा लिखा है, जिसका आशय यह है कि—यह धर्म है, या यह अधर्म है—इस विज्ञानमें कारण शास्त्र है। क्योंकि धर्माधर्म अतीन्द्रिय हैं, तथा देश, काल, निमित्तमें नियत नहीं हो सकते। जिस देश, काल, निमित्तमें जो धर्म किया जाता है, वही अन्य देश, काल निमित्तों में अधर्म हो जाता है। तब शास्त्रके अतिरिक्त धर्माधर्मविषयक विज्ञान मानवी बुद्धिको नहीं हो सकता।'

यदि हमने सिद्धि तथा परमगति पानी हैं, तो हमें कामकारता अपनी इच्छानुसारिता छोड़नी पड़ेगी, शास्त्रका अवलम्बन करना पड़ेगा—

'यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥
(गीता १६।२३)

इसलिए दृष्टशास्त्र आयुर्वेदमें ठीक ही कहा है—
तस्मात् तिष्ठेन्तु मतिमान् आगमे न तु हेतुषु
(सुश्रुतसंतिता सूत्रस्थान ४०।२१)

अतः बुद्धिवादी महाशय भगवान्का यह वाक्य सदा स्मरण रक्खें—

'तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते'

भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा स्वतन्त्रताके प्रयत्न

[लेखक—श्री १०८ योगिराज ब्रह्मनिष्ठ श्री स्वामी गोपालतीर्थ जी महाराज]



वैदिक-कालसे ही स्वतन्त्रता-प्राप्ति मानव-जीवन का सर्वप्रथम ध्येय रहा है। मनुष्य बन्धनसे छूट कर मुक्त होना चाहता है। जीव स्वभावतः संकुचित माया को छोड़ कर ब्रह्ममें विहार चाहता है। और तो क्या पशु पक्षी जीव-जन्तु सभीको स्वतन्त्रता प्रिय है।

परतन्त्रता मानव-जीवनकी त्रुटियों और निर्बलताओंकी निशानी है। सृष्टिके संघर्षमें बलवान् निर्बल पर विजय पाता है और विजयी पराजितों पर शासन करता है। जहां सभी विजयी हों वहां पराजितका क्या काम? जहां सभी स्वतन्त्र हों वहां पराधीनताका स्थान कैसा? विश्वमें मानव-जाति समाज अथवा राष्ट्र जब स्वयं स्वतन्त्र रह कर किसी दूसरेको आधीन करना चाहते हैं, तब अधर्म, अन्याय, दमन आदिका आश्रय लेना पड़ता है। मनुष्यकी स्वाभाविक वृत्ति स्वतन्त्र रहनेकी है; अतः वह अपने जीवनको पराधीनतामें नहीं रहने देना चाहता और क्रान्तिके लिये तत्पर हो जाता है।

ऐसी क्रान्तियां युग-युगोंसे चली आ रही हैं। क्रान्तियोंके कर्णधार देशके नेता और महापुरुष कहलाते हैं। उनके इतिहासोंको बड़े चावसे पढ़ा और सुना जाता है और उनका अनुकरण करके मानव-जाति स्वतन्त्र होती है।

श्रीकृष्ण एक ऐसे ही क्रान्ति-कारी महापुरुष थे जिन्होंने अपनी और अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिये साम्राज्यवादका विरोध किया। देशवासियों की पीड़ा, उन पर होनेवाले अत्याचार और दीन जनोंकी पुकारने श्रीकृष्णके हृदयमें एक आग सुलगा दी। उन्होंने इन अत्याचारोंके विरुद्ध कदम उठाया और साम्राज्य-वादी नीतिकी भारत जैसे पवित्र ऋषिप्रदेशसे जड़ उखाड़नेका संकल्प किया।

साम्राज्यवादके दो अर्थ प्रचलित हैं—

(१) वह शासन-सत्ता जिसमें बल पूर्वक अनेक राजाओंको सम्मिलित किया गया हो। (Empire)

(२) एक संगठित शासन-सत्ता जिसमें अनेक राज्य प्रजाकी रक्षाके लिये स्वयं सम्मिलित हों। (Common Wealth)

श्रीकृष्ण प्रथम प्रकारके साम्राज्यका अन्त करना चाहते थे। उन्होंने धर्मराज युधिष्ठरको बतलाया—

न चैनमनुरुध्यन्ते कुलान्येकशतं नृपाः।
तस्मादिह बलादेव साम्राज्यं कुरुते हि सः॥
(सभा० १५।२०)

जरासन्धको सौ कुलोंके राजाओंमें से कोई भी रोकनेमें समर्थ नहीं, अतः वह बलसे अपना साम्राज्य स्थापित किये हुए है।

श्रीकृष्णका भाव स्पष्ट है कि राजा लोग जरासन्ध के अत्याचारसे पीड़ित हैं, परन्तु वह बलपूर्वक साम्राज्य भोग रहा है। जरासन्धके अत्याचार यहां तक बढ़े हुए थे कि वह अत्यन्त क्रूर कर्म करके सौ राज्योंको अपने आधीन करना चाहता था—

षडशीतिः समानीताः शेषा राजाश्चतुर्दश।
जरासन्धेन राजानस्ततः क्रूरं प्रवर्त्स्यते॥

जरासन्धने ८६ राजाओंको बलात् वशमें कर लिया है, १४ राजा जीतने शेष रह गये हैं। इन चौदहोंको भी बांध लेने पर वह अत्यन्त क्रूर कर्म का अनुष्ठान करेगा।

श्रीकृष्ण इस प्रकारका अनर्थपूर्ण शासन अथवा साम्राज्य नहीं रहने देना चाहते थे; अतः उन्होंने धर्मराजको सन्देश दिया—

प्राप्नुयात्स यशो दीप्तं तत्र यो विघ्नमाचरेत्।
जयेद्यश्च जरासन्धं सम्राण्नियतं भवेत्॥
(सभा० अ० १५।२७)

जरासन्धके इस घोर कर्ममें जो विघ्न डालेगा और उसे जीत लेगा यह निश्चय ही उज्वल यश प्राप्त करके सम्राट् माना जायेगा।

श्रीकृष्ण जरासन्धके साम्राज्यको उसके अत्याचार और अनीतिके कारण नष्ट करना चाहते थे। देशकी पराधीनताको दूर करनेके लिये श्रीकृष्ण एक ऐसी केन्द्रीय शासन-सत्ताकी स्थापना करना चाहते थे, जो धर्म, अर्थ और नीतिसे संचालित हो—

साम्राज्यमिच्छतस्ते तु सर्वाकारं युधिष्ठिर।
निग्राह्य लक्षणं प्राप्तिर्धर्मार्थनयलक्षणैः॥

हे धर्मराज! धर्म, अर्थ और नीतिके द्वारा तुम्हें सब प्रकारसे वह साम्राज्य प्राप्त हो रहा है, जो जीतने योग्य शत्रुओंकी विजयसे, प्रजा-पालनसे, तपसे, शक्तिसे और समृद्धिसे सुलभ है।

श्रीकृष्णने देखा कि भारतवर्षमें राजा पृथक् पृथक् अपना अपना साम्राज्य अधर्म और पाशविक बलकी भित्ति पर स्थापित कर रहे हैं। उन्होंने तीन साम्राज्यों द्वारा प्रजाको विशेष पीड़ित देखा।

(१) मथुरामें कंसका साम्राज्य।

(२) मगधमें जरासन्धका।

(३) प्राग्ज्योतिषपुरमें भौमासुरका।

इन तीनोंसे प्रजाको स्वतन्त्र करके श्रीकृष्ण एक केन्द्रीय राष्ट्र-संघ स्थापित करना चाहते थे।

कंसका वध उन्होंने स्वयं ही कर दिया और कंसके साथ ही उसके अनेक भयंकर क्रूरकर्मी साथियोंका भी अन्त करके प्रजाको दानवीय अत्याचारसे मुक्त किया।

जरासन्धका वध करनेके लिये श्रीकृष्णने धर्म-राजसे भीम और अर्जुनको प्राप्त किया और

अपनी नीतिसे उसका अन्त करके उसकी कैदमें पड़े हुए समस्त राजाओंको स्वतन्त्र किया।

भौमासुर (नरकासुर) ने इन दोनोंसे भी अधिक अत्याचारों द्वारा प्रजाको पीड़ित किया हुआ था। उसके राज्यमें स्त्रियों तककी स्वतन्त्रता और लज्जा का अपहरण होता था। श्रीकृष्ण जैसे स्वतन्त्रता-प्रिय महापुरुष इसे कब सहन कर सकते थे। श्रीकृष्णने स्वयं उस पर चढ़ाई की और उसके साथ घोर युद्ध करके उसके साथियों सहित उसका वध किया। भौमासुर द्वारा बलात् बन्दी गृहमें बन्द की हुई १६ हजार राजकुमारियोंको श्रीकृष्णने अपने प्रयत्नसे स्वतन्त्र कराया।

इस प्रकार श्रीकृष्णने इन समस्त साम्राज्यवादी शासकोंका अन्त करके भारत-भूमि पर धर्मके आधार पर संगठित शासन-सत्ता स्थापित की। श्रीकृष्णने जो भी देश जीता उसको अपने आधीन करनेकी चेष्टा नहीं की और न उन्होंने किसी देश को जीत कर अपने भाई, बन्धु, मित्र आदिको वहां का राजा बनाया।

कंसका वध करके श्रीकृष्णने उसीके पिता उग्रसेनको राज्य दिया। इसी प्रकार जरासन्धका वध करके उसके पुत्र सहदेवको राजा बनाया और भौमासुरका वध करके उसके पुत्र भगदत्तको राज्य पर नियुक्त किया।

इन सब राजाओंको श्रीकृष्णने धर्मका मार्ग दिखा कर प्रजाका हित-चिन्तन करनेकी प्रेरणा दी और सभी राष्ट्रीय-संघमें सहर्ष सम्मिलित हुए।

श्रीकृष्णके स्वतन्त्रताके लिये जितने प्रयत्न हुए उनमें कहीं भी प्रजा पर अथवा किसी राजा पर अत्याचार करनेकी दुर्भावना नहीं थी। आजके युगमें जिस देशको जीता जाता है उसका केवल धन ही हरण नहीं कर लिया जाता, वरन् सभी भांतिसे उसे पराधीन करके अशिक्षित अधर्मी और नपुंसक बनानेका प्रयत्न किया जाता है।

श्रीकृष्णके समयमें राजा बनाने की प्रथा अवश्य थी। श्रीकृष्ण एक केन्द्रीय-सत्ताके अन्तर्गत सार्वभौम धर्म-राज्यकी स्थापना करना चाहते थे, परन्तु उस धर्म-राज्यका आदर्श आज कलकी साम्राज्यवादी नीतिसे बिल्कुल भिन्न था।

श्रीकृष्ण वेदोंके ज्ञाता थे और वेदोंके अनुसार ही उन्होंने राज्य-व्यवस्था बनाने का प्रयत्न किया था। वेदोंमें राजाकी मनोकामनाका वर्णन करते हुए लिखा है—

प्रति क्षत्रे प्रतितिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रतितिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रतितिष्ठाम्यात्मन्प्रति प्राणेषु प्रतितिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रतितिष्ठामि यज्ञे। (यजु० २०।१०)

मैं सम्पूर्ण रक्षा करने वालोंका अग्रगामी बनूं, गौओं और अश्वोंकी राज्यमें वृद्धि करूं, सबके स्वास्थ्यका हित-चिन्तन करूं, मानसिक चिन्ताओंसे मुक्त रहूँ, धन तथा समृद्धिका विस्तार करता रहूं, मैं ऐसे यज्ञ कर्मोंका सम्पादन करूं जिससे पृथ्वीसे आकाश तक मेरी कीर्ति व्याप्त हो।

वेदके इस मन्त्रसे प्राचीन समयके राजाओंकी मनोभावना और राज्य व्यवस्था प्रकट होती है।

अथर्ववेदमें ऐसा भी वर्णन आता है कि प्रारम्भमें समस्त जन-पद अथवा राष्ट्र राजा-रहित थे, उन्हें देख कर लोग भयभीत हुए कि हमारी रक्षा कौन करेगा?

(अथर्व० सू० १।१०।८)

राजनीतिके भण्डार कौटिल्यशास्त्रमें राजा को निग्रह और अनुग्रह करनेवाला कहा गया है और इसीलिये उसे यम और इन्द्र शब्दों से विभूषित किया है।

शुक्रनीतिमें कहा गया है कि जैसे सूर्य अन्धकारका नाश करके प्रकाश करता है उसी प्रकार राजा धर्मका प्रवर्तक और अधर्मका नाशक है। राजा अपनी पवित्रतासे सबके दोष-हरण करता है और अपने गुणोंसे चन्द्रमाकी भांति सबको आनन्द देता है।

(शुक्रनीति अ० १)

वेदों से ऐसा भी प्रतीत होता है कि भारतवर्ष की राज्य-प्रणाली अत्यन्त पूर्ण और प्रजा-हितकारी

थी। श्रीकृष्ण सबकी स्वतन्त्रताके लिये उसी वेदोक्त राज्य-व्यवस्थासे कर्म करने वाली केन्द्रीय शासन सत्ता स्थापित करना चाहते थे। प्रजाप्रतिनिधि सभा द्वारा हमारे देशमें सदा प्रजाके अधिकारोंकी रक्षा होती रही है, पुरोहितोंकी सभा धर्म-व्यवस्था बता कर धार्मिक कृत्योंका संचालन करती रही थी, स्वास्थ्य-सभा समस्त जन-पदोंको स्वच्छ रख कर राजा और प्रजाको आरोग्य रखनेका प्रयत्न करती थी, ज्योतिर्विद्-परिषद् सम्पूर्ण-राष्ट्रका कार्य-क्रम बनाती थी और वर्तमान तथा भावी अनिष्टोंसे बचानेका उपाय करती थी, मन्त्री-सभा प्रजाकी शान्ति सुरक्षा और स्वतन्त्रताके लिये प्रयत्नशील रहती थी। शुक्रनीतिमें इस प्रकारकी राज-सभाओं का वर्णन मिलता है

इस प्रकारकी सभाओंका वर्णन अथर्ववेदमें भी पाया जाता है। ब्राह्मण राज्याभिषेकके समय राजा से कहते हैं—

"तुम स्थिर रहो, कभी पदच्युत न होओ, जो तुम्हारे साथ शत्रुता करे उन्हें तुम नीचे गिरा दो, सब दिशाओंमें एकता और मेलसे कार्य करने वाले बनो और राज्यसभायें बनाकर अपने राज्यकी स्थिरतासे सुरक्षा करो।

(अथर्व० ८८।६।३)

इन सब सनातन राज्यआदर्शोंके श्रीकृष्ण वेत्ता थे, और वे चाहते थे कि भारतमें ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण भूमण्डलमें इसी प्रकारकी शासन-व्यवस्था प्रचलित की जाय। इस व्यवस्थामें राजा, प्रजाकी रक्षा और स्वतन्त्रताके लिये होता था न कि उसे पराधीन करके भोग भोगनेके लिये। श्रीकृष्णके अवतीर्ण होनेके समय देशकी राज्य-व्यवस्था बिगड़ी हुई थी, प्रजा कष्टमें थी, वह पराधीनता का अनुभव कर रही थी और राजाओंमें वैदिक सनातन-संस्कार शेष नहीं रहे थे।

कौरवोंकी सभा यद्यपि राज-सभाके रूपमें थी, परन्तु उसके सभासद्, मन्त्री मण्डल, पुरोहित-वर्ग तथा सभी केवल राजाको प्रसन्न करने के लिये उसके हाथकी कठपुतलीसे अधिक नहीं थे और यही कारण था कि जुआ खेलनेकी दुर्मन्त्रणाओं को कोई नहीं रोक सका। इतना ही नहीं, बल्कि द्रोपदी जैसी विदुषी राज-महिषी पर सबने अत्याचार होते देखा। श्रीकृष्ण जब दूत रूपमें पाण्डवों का सन्देश लेकर गये थे तब भी उन्होंने स्पष्ट देखा कि कौरवोंकी सभामें धांधली और मनमानी चलती है। सभा नाममात्रको एक दरबारी बैठक रह गई थी और उसमें विद्वानोंकी कोई बात नहीं सुनी जाती थी।

कंस, जरासन्ध, भौमासुर आदि साम्राज्यवादी राजाओंकी सभा भी इसी प्रकार कीं थी।

श्रीकृष्णने सबकी स्वतन्त्रताके लिये प्रयत्न करके इन अत्याचारी राजाओंका दमन किया और धर्म-राज्यका विधान करके केन्द्रीय शासन-सत्ता राजा युधिष्ठिरके आधीन स्थापित की।

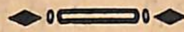
युधिष्ठिरके राजा बननेके समय राज्य नियम समझानेके लिये श्रीकृष्ण उन्हें भीष्म पितामहके पास ले गये और उनसे समस्त राजकीय विषयों पर उपदेश दिलवाया, जो ज्यों का त्यों वही था जैसा श्रीकृष्ण चाहते थे, जिसका वर्णन वेदोंके प्रमाणोंसे ऊपर किया जा चुका है और जिससे सबकी स्वतन्त्रता सुरक्षित रहनेकी आशा थी। भीष्म पितामहसे सब उपदेश श्रीकृष्णने अपनी प्रेरणा और योग-शक्ति द्वारा उनके पीड़ित और जर्जरित हृदय तथा मस्तिष्क में शक्ति-संचार करके करवाये थे। शान्तिपर्व अध्याय ६७ में इनका वर्णन विस्तारपूर्वक प्राप्त होता है।

श्रीकृष्ण स्वदेश-भक्त, धर्म-संस्थापक अवतारी पुरुष थे, उन्होंने मानवमात्रकी स्वतन्त्रताके लिये प्रयत्नशील रहनेका सन्देश केवल शब्दों द्वारा नहीं, बल्कि अपने आचरण द्वारा दिया था। श्रीकृष्णके एक भी आचारणको यदि हम अपना लें और श्रीकृष्ण की भावना लेकर स्वतन्त्रताके लिये प्रयत्न करें तो हम एक क्षणके लिये भी पराधीन नहीं रह सकते।

———

यह अशान्ति क्यों ?

[लेखक—श्री पं० रामबहादुर जी त्रिपाठी शास्त्री साहित्याचार्य]



यह संसार परिवर्तन शील है। आज हम जिस संसारमें रहते हैं वह आजसे सैंकड़ों वर्ष पहले न ऐसा था और न भविष्यमें ऐसा रहेगा ही। इसी परिवर्तनको हम दूसरे शब्दोंमें प्रगति भी कह सकते हैं। यह प्रगति ही हमारा जीवन है। इस संसारकी यही विशेषता है कि इसके प्रत्येक जीवधारी या निष्प्राण वस्तुमें दिन रात परिवर्तन होता रहता है। और इस परिवर्तन या प्रगतिका कार्य इस प्रकार धीरे-धीरे होता है कि हमें कुछ भी जान नहीं पड़ता। परन्तु इतना निश्चित है कि यह होता है और समयान्तरमें इसका प्रत्यक्ष परिणाम भी दीखनेमें आता है। यह परिवर्तनचक्र व्यष्टिमें ही नहीं अपितु समष्टिमें भी चलता रहता है। समष्टिमें होने वाले इसी कार्यके परिणामस्वरूप समाज और देशमें क्रान्तिकारी उलट-फेर देखे जाते हैं। आज सभी समाचार पत्रोंके कालमके कालम जो नित्य क्रान्ति और उसके दमनके समाचारोंसे रङ्गे देखे जाते हैं वे वर्षोंसे हमारी परिवर्त्तित भावनाओंका प्रत्यक्ष स्वरूप है जिसे जन समुदाय अब हृदयमें रखनेमें असमर्थ हैं अथवा यों कहिए कि अब उसके इस मूर्तिमान् स्वरूपका प्रत्यक्ष सबको करना ही होगा।

आजका ब्रिटिश भारत जो श्वेत महाप्रभुओं के अधीन है उसमें क्रान्तिकी जो लहरें उठ रही हैं वह तो वर्तमान शासन और समयकी देन हैं ही। परन्तु दूसरी ओर अपने ही देशवासी नरेशों द्वारा शासित रियासतोंमें राजा और प्रजाका जो सम्बन्ध दिखाई देता है उससे किसी भी सभ्य क्या अपनेको मानव भी समझने वाले व्यक्तिको घृणा हो सकती है। राजकोट फरीदपुर और काश्मीर रियासतोंके समाचारोंने राजा और प्रजाके वर्तमान सम्बन्धका नग्नस्वरूप सबके सामने उपस्थित कर दिया है। आज रह-रहके मनमें विचार उठते हैं कि क्या यह जो हो रहा है, वह उचित है! आखिर शताब्दियोंकी शान्ति आज अशान्ति रूपमें क्यों परिवर्तित हो गई है? परिवर्तन तो इस मन्द गतिसे होता है, जिसका कोई मन्द आघात भी समाज और देश पर नहीं होता। परन्तु आप कुछ गहराई तक सोचें तो यही जान पड़ता है कि जब इसका पर्याप्त कारण एकत्र हो जाता है तो वह उसे समयसे बहुत पहले ही उग्ररूपसे ले आनेमें सहायक हो जाता है।

यदि हम "राजा कालस्य कारणम्" इस उक्ति की समीक्षा करें तो इसी परिणाम पर पहुंचेंगे कि देश और समाजमें घटने वाली किसी भी अच्छी या बुरी घटनाके पीछे राजा और उसका शासन सूत्र ही कारण होता है। अपने भारको हलका करने के लिए वह भले ही कुछ इने गिने व्यक्तियोंको अपना सहायक या कर्मचारी बना सकता है, परन्तु उनके कर्त्तव्य पालनका उत्तरदायित्व भी उसीके सिर पर होता है। इस प्रकार सृष्टिके नियामक ईश्वर पर ही जैसे उसके सम्यक् सञ्चालनका भार है और इस कार्यको वह स्वयं या अपने सहायक देवता या विभूतियोंके द्वारा सुचारू रूपसे करता या कराता रहता है। आवश्यकता पड़ने पर—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

इस प्रतिज्ञाको ध्यानमें रखते हुए वह स्वयं भी घटना स्थल पर पहुँचकर अत्याचारी तथा अन्यायियों को दण्ड देकर अपने नियमोंका पालन कराता है। उसी प्रकार राजा भी अपने छोटे या बड़े राज्यका

कर्ता धर्ता और नियामक होता है। दूसरे शब्दोंमें वह अपनी शासित प्रजाका दूसरा ईश्वर होता है। तभी तो भगवान् श्रीकृष्णने गीतामें 'नराणाञ्च नराधिपम्' कह कर अपनेको मनुष्योंमें राजा बतलाया है। गीताका यह वाक्य राजाकी परिस्थिति हमारे सामने उपस्थित करता है कि जिस प्रकार ईश्वर बिना किसी भेद-भावके सृष्टिके हर छोटे बड़े जीवों पर समान रूपसे कृपा रखता है और वह चाहे जैसे भी सम विषम देश कालमें हो उसकी वहीं चिन्ता रखता है तथा जीवनोपयोगी हर वस्तु प्रस्तुत करता है। वह अनाथोंका नाथ और अपने भक्तोंका सेवक होता है। उसी प्रकार उसीका एक दूसरा स्वरूप राजा यदि अपने कर्त्तव्योंका ठीक ठीक पालन करे तो सम्भव है कि वर्तमान राजा प्रजा का कलह और अशान्तिमय सम्बन्ध इतिहासके पन्नों में काला धब्बा न होकर कुछ और ही रूपमें होता। परन्तु ऐसा न होकर आज जो हो रहा है वह आपके सामने है। और इसका उत्तरदायित्व किस पर है, यह भी कहने की बात नहीं। सर्वविदित हो है।

यदि आप राजा और प्रजाका सच्चा रूप देखना चाहते हों तो आप उस पैराणिक युगमें चले जाइए जिसे आपने पुराना समझकर छोड़ दिया है। मार्कण्डेयपुराण २४ वें अध्यायमें भारतीय आर्य महिलाओं में उच्च स्थान रखने वाली मदालसा एक आदर्श माता के रूपमें तुरन्त राज्य सिंहासन पर बैठ अपने प्रिय पुत्र अलर्कसे कहती है कि—

विश्वासो न तु कर्तव्यो राज्ञा मित्राप्तबन्धुषु
कार्ययोगादमित्रेषु विश्वसीत नराधिपः ॥
कामः क्रोधश्च लोभश्च मदो मानस्तथैव च।
हर्षश्च शत्रवो ह्येते नाशाय कुमहीभृताम् ॥
इतमैलं तथा लोभान्मदाद्वेनं द्विजैर्हतम्।
मानादनायुषः पुत्रं हतं हर्षात्पुरंजयम् ॥
दण्डेन प्रकुर्वीत नीत्यर्थं पृथवीच्छिता।
प्रज्ञा नृपेण वा देया तथा चाण्डालयोषितः ॥
यथेन्द्रश्चतुरोमासान् वार्योघेणैव भूतलम्।
आप्यायते तथा लोकान्परिचारैर्महीपतिः ॥
मासानष्टौ यथा सूर्यस्तोयं हरति रश्मिभिः।
सूक्ष्मेणैवाभ्युपायेन तथा शुल्कादिना नृपः ॥
यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति।
तथा प्रियाप्रिये राजा दुष्टादुष्टे समो भवेत् ॥
उत्पथग्राहिणो मूढान्स्वधर्माचलितान्नरान्।
यः करोति निजे धर्मे स राजा स्वर्गमृच्छति ॥

अर्थात् राजाको अवसर पर मित्र, हितचिन्तक व्यक्ति एवं बन्धुबान्धवोंमें भी विश्वास नहीं करना चाहिए और कभी काम पड़े तो जो अपना मित्र नहीं है उसका भी विश्वास कर लेना चाहिये। काम क्रोध, मद, लोभ, मान और हर्ष बुरे राजाओंके नाशके कारण होते हैं। जैसे कि लोभसे राजा ऐल, मदसे द्विजों द्वारा राजा वेन, अभिमानी होनेके कारण आयुषका पुत्र और हर्षके कारण पुरंजय मारा गया। नीति पालनके लिए राजाको दण्डका अवलम्ब लेना चाहिए तथा चाण्डालकी स्त्रियोंको भी सद्बुद्धि देनी चाहिए। जैसे इन्द्र चार महीने जल वर्षाकर पृथ्वीको तृप्त एवं शस्यश्यामला कर देता है वैसे ही राजाको भी अपनी सेवाओंसे अर्थात् प्रजाकी उन्नतिके साधनोंसे उसे सन्तुष्ट एवं सम्पन्न करना चाहिए और जैसे सूर्य आठ महीने अपनी किरणोंसे धीरे धीरे कुछ मालूम भी नहीं होता जलाशयोंका जल खींचता रहता है। उसी प्रकार सूक्ष्म उपाय तथा करसे प्रजासे इस प्रकार धन लेना चाहिए कि उसे देनेमें कुछ भी मालूम न हो और जैसे यम भले बुरेका पक्षपात न कर समय पर नियमन करता है। वैसे ही राजाको भी दुर्जन सज्जन सबके साथ समान रूपसे अपने कानून को बरतना चाहिए। कुमार्ग पर चलने वाले मूर्खों को तथा अपने धर्मसे विचलित मनुष्यको जो राजा सन्मार्ग एवं अपने धर्ममार्ग पर लाता है वह स्वर्ग को प्राप्त करता है। इस प्रकार अपनी प्रजाको अपनी ही सन्तान समझकर जहां राजाको अधिकसे अधिक उदार और उसके सुख दुःखका साथी होना चाहिए वहां उसे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि दुर्जन उसकी सज्जनता एवं उदारतासे

अनुचित लाभ उठाकर समाजमें कहीं अशान्ति न उत्पन्न कर दें, ऐसा होने पर मनुके शब्दोंमें राजा अपने उभय लोकोंको नष्ट करता है। यथा—

अदण्ड्यान्दण्डयन्राजा दण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्।
अयशो महदाप्नोति नरकं चैवाधिगच्छति॥

अर्थात् धनादिके लोभसे अदण्डनीय व्यक्तिको जो राजा दण्ड देता है और किसीकी सिफारिश से दण्डनीय व्यक्तिको यदि छोड़ देता है तो इस लोकमें तो उसकी अपकीर्ति या निन्दा होती है, परलोकमें भी नरक का भागी होता है।

मदालसा और मनुके उक्त उपदेशोंसे जहां हमें किसी राजाके कर्त्तव्यका ज्ञान होता है वहीं हमें आजसे हजारों वर्ष पहलेके तत्कालीन कुवासनाओं में आसक्त वेन, ऐल आदि कुनृपतियोंके राज्य नाश और उनके विनाशका भी पता चलता है। इस प्रकार हमारा पुराण और इतिहास साक्षी हैं कि कोई भी अत्याचारी और अन्यायी राजा अपने सैन्य बल या शस्त्र बलसे प्रजा पर शासन नहीं कर सकता। शासन शरीर पर नहीं हृदय पर होता है और हृदय पर शासन करनेके लिए शस्त्रास्त्रोंकी आवश्यकता नहीं होती! वह तो नीति, न्याय और कर्तव्य पालनसे ही सम्भव हो सकता है। वस्तुतः जब तक राजा और प्रजामें अपने क्षुद्र स्वार्थोंको छोड़कर 'परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ' परस्पर कल्याण कामना तथा एक कुटुम्बी जैसा प्रेम भाव नहीं होगा तब तक वहां शान्ति और सुखकी कल्पना नहीं की जा सकती। पुराणोंमें ऐसे राज्योंके अनेक उदाहरण मिलते हैं। मार्कण्डेय पुराणके ही १०६ वें अध्यायमें राजा राज्यवर्द्धनका वर्णन आता है। "७ हजार वर्ष तक अपने सानन्द शान्तिमय शासन करनेके बाद भी जब वह अपनी वृद्धावस्थाका सूचक कानके समीपका एक सफेद बाल देख कर राजकार्य अपने पुत्रको सौंप कर स्वयं वानप्रस्थ लेकर वनमें तप करने जाने लगा है तो उसकी प्रजा रो पड़ी है और कहने लगी है कि हाय! अब हमें ऐसा राजा कहां मिलेगा। अन्तमें इस दुःखसे दुखी प्रजामण्डल एकत्र होता है और निश्चय करता है कि राजाकी आयु वृद्धिके लिए देश के ब्राह्मण सूर्यकी तपस्या कर वरदान मांगे और साधारण प्रजा भी व्रत करे। परिणामस्वरूप तपसे सूर्य प्रसन्न होकर राजाकी आयु दश हजार वर्ष और बढ़ा देते हैं।

यह सुनकर सभी प्रसन्न होते हैं परन्तु राजा और भी चिन्तित हो जाता है कि जिस प्रजाने हमारे लिए इतना कष्ट उठाया, जब वही नहीं रह सकती तो फिर हमारा राज्य किसके लिए होगा। इस चिन्ता में चिन्तित और आकुल होकर वह प्रजाकी भी उतनी ही आयुके लिए स्वयं सूर्यकी उपासना करने चला जाता है, फिर उसके तपसे सूर्य प्रसन्न होकर प्रजाको भी उतनी ही आयु प्रदान करते हैं। इस प्रकार दशहजार वर्ष तक राजा राज्यवर्द्धनने सानन्द राज्य किया।" इस कथानकसे आप प्राचीन राजा और प्रजाके प्रेमभावको भलि-भांति समझकर वर्तमानसे उसकी तुलना कर सकते हैं।

इस समय प्राचीन राजा प्रजाका सम्बन्ध प्रायः कहीं भी देखनेमें नहीं आता, फिर भी वसुन्धरा आदर्शों से कभी रिक्त नहीं होती। वर्तमान कालीन अनेकों छोटी बड़ी रियासतें और उनके राजाओंसे जहां तक परिचय है प्रायः सर्वत्रसे ही आज क्रान्ति नहीं तो भावी क्रान्तिकी खबरें मिल रहीं हैं। परन्तु आश्चर्य है कि आज भी शिमलामें साधारण धरातलसे ऊपर पर्वतों पर बघाट नामका एक ऐसा राज्य सौभाग्यसे मौजूद है जहां इस उथल पुथल के युगमें भी वहांकी प्रजा और राजामें घनिष्ठ प्रेम है। प्रजा राजाकी भूरि-भूरि प्रशंसा करती हुई राज्यकी मंगल कामना करती है। इस राज्यके राजा बघाट महीमहेन्द्र श्री १०५ मान् दुर्गासिंह जी बहादुर सी० आई० ई० महोदय स्वयं एक आदर्श-चरित्र एवं अन्य भाषाओंके साथ संस्कृतके भी विद्वान् व्यक्ति हैं। संस्कृत-साहित्यसे आपके प्रगाढ प्रेमका निदर्शन इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है कि आपने वर्तमान संस्कृत भाषाके

कोषोंको ही पर्याप्त न समझ कर आजसे कुछ दिनों पहले गत वैशाख शुक्ला त्रयोदशीको एक 'अभिनव संस्कृतवाङ्मय कोष कार्यालय' का उद्घाटन अपने ही करकमलोंसे महामहोपाध्याय श्रीमान् पं० मथुरा प्रसादजी दीक्षित महोदयके तत्त्वावधानमें बहुत समारोहके साथ किया है। आपमें वर्तमान राजाओंका कोई दुर्गुण नहीं है। यहां तक कि मद्यपान तो दूर रहा, आप धूम्रपान तक नहीं करते। भोजन आपका बहुत ही सात्विक होता है। उसमें शास्त्रोक्त किसी भी अभक्ष्य पदार्थको स्थान नहीं मिलता है। मनुष्यके सबसे बड़े शत्रु काम पर आपका इतना अधिकार है कि क्षत्रिय राजाओंके लिए आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामकी भांति आप एक पत्नीव्रतके आदर्शका ही पालन करते हैं। इतना होते हुए भी खेद है कि आपको कोई पुत्र नहीं है, अनेकों शुभचिन्तकोंके द्वारा प्रेरणा मिलने पर भी दूसरा विवाह करनेका नाम तक नहीं लेते। आपको दैव पर इतना विश्वास है कि यदि होगा तो एकसे ही होगा, नहीं तो अनेकसे भी कुछ न होगा। धर्मकी ओर आपका इतना ध्यान है कि नित्य घंटों प्रातःकाल पूजा पाठ करते और साधु ब्राह्मण तथा पण्डितोंका सम्मान करते हैं। प्रथम परिचयमें ही वर्तमान पण्डितोंकी चर्चा चलनेपर सखेद आपकेमुंहसे निकला हुआ यह वाक्य अब भी मेरे कानोंपर गूंजा करता है कि "पण्डित जी! आजकल भी विद्वान् तो मिलते हैं परन्तु आस्तिक नहीं होते"। इसीसे हम आपकी आस्तिक और धार्मिक भावनाओंका सहज अनुमान कर सकते हैं। साथ ही राज्य-कार्यको स्वयं देखना और छोटे बड़ेसे मिलना आपके दैनिक कार्योंमें से एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। आज देशमें ऐसे ही नृपतियोंकी आवश्यकता है। वर्तमान राजाओंके लिए आप अनुकरणीय हैं। यदि सौभाग्यसे वर्तमान राजा ऐसे ही आदर्श-चरित्र और कर्त्तव्य-परायण होते तो प्रजा उनसे चरित्रकी शिक्षा लेती और आज वर्तमान अशान्ति नहीं दिखाई देती। चारों ओर सुख शान्तिका साम्राज्य होता।

———

वेदवीथी–पथिकोंका उद्बोधन



विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि।
असूयकायानृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्य्यवती तथा स्याम् ॥ (यास्क)

"ज्ञान–विज्ञानमयी वेदविद्या ब्राह्मणके समीप आई और उसे कहने लगी, हे ब्राह्मण! तू मेरी रक्षा कर, तेरे द्वारा सुरक्षित बन कर मैं तेरी रक्षा करूंगी। (मेरी रक्षा करनेका एकमात्र यही साधन है कि) जो मनुष्य सदा दूसरोंकी निन्दा करता रहता है—ऐसे असूयक (परनिन्दक) के लिए, एवं जिसके मानस संकल्प, कर्म्म, वाणी; कभी स्थिर नहीं रहते, अपितु जो सोचता कुछ और है, करता कुछ और है, कहता कुछ और है ऐसे अपवित्र दुष्टबुद्धि मानवके लिए तू कभी मेरा स्वरूप बखान न कर। यदि तूने इस प्रकार दुष्ट बुद्धियोंसे मुझे बचाया, तो मैं तेरे लिए बलशालिनी बन जाऊंगी।"

———

ज्यौतिष-शास्त्र और आधुनिक विज्ञान

[ले०—श्री प्रो० बी० व्ही० रमन M.R.A.S. सम्पादक—'एस्ट्रालाजिकल मेग्जीन']



ज्योतिष आजकल उपहासका विषय बन गया है। कारण यह है कि कुछ लोग तो समझते हैं कि उसमें वैज्ञानिकता की अपेक्षा अंधपरंपरा ही अधिक है। कुछ लोग एक-एक रुपयेमें जन्मपत्रियां बनाकर मनमाना फलादेश करते हुए इस शास्त्रकी बदनामी करा रहे हैं। और कुछ लोग अपने ही ज्ञानकी संकीर्णता लिये हुए बैठे हैं। इसलिये इस शास्त्रका ठीक ठीक प्रचार हो नहीं पाता।

व्यवस्थित ज्ञान ही को तो शास्त्र कहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि शास्त्रकी प्रत्येक सबबातें सच ही उतरें। वैद्यक एक शास्त्र है। कानूनकी व्यवस्था भी एक शास्त्र है, परन्तु हम देखते हैं कि कई रोगोंके निदान और चिकित्सामें त्रुटियां हो ही जाया करती हैं। आश्चर्य है कि डाक्टर और वकील अपने शास्त्रों की ये त्रुटियां समझते हुए भी ज्योतिषको शास्त्रका पद देनेमें हिचकिचा रहे हैं। जब मेटिरियालाजी (ऋतु परिवर्तन शास्त्र) के लिये जिसके परिणामों के विषयमें कोई निश्चित बात बहुत कम रहा करती है लाखों रुपये खर्च किये जा रहे हैं, तब ज्योतिष शास्त्रके लिये लोगोंकी और सरकारकी ऐसी उपेक्षा किसी प्रकार भी शोभनीय नहीं कही जा सकती।

ज्योतिषशास्त्र कालसूचक शास्त्र है। वह व्यक्ति और राष्ट्रके उत्थान पतनका हाल बताता है। राज्यों, युद्धों, राज्यक्रांतियों इत्यादिकी बातें इस शास्त्रके द्वारा ज्ञात हो सकती हैं। भविष्यके अंधकारमय प्रदेशमें इस शास्त्रके सहारे प्रवेश किया जा सकता है। भविष्यका ऐसा निर्णय केवल अटकलके द्वारा नहीं, वरन् गणितके स्थिर नियमोंके सहारे ही किया जाता है। विद्वानोंने अनुभव, प्रमाण और अनुमानके द्वारा यह भली-भांति देखा कि मानव जीवनकी घटनाओंके साथ ग्रहोंकी स्थिति गतिका घनिष्ठ संबन्ध है। यह जानकर ही ज्योतिष शास्त्रकी रचना की गई है। और आज दिन भी इस संबंधकी परीक्षा कोई भी विज्ञ व्यक्ति आसानीसे कर सकता है।

भारतके पुराने महर्षियोंने समाजशास्त्र कामशास्त्र इत्यादि कई ऐसे शास्त्रोंका इतना गंम्भीर ज्ञान प्राप्त कर लिया था जो आजकलके पाश्चात्त्य पंडितोंके लिये दुर्लभ है। वे दूरबीन खुर्दबीन सरीखे भौतिक यंत्रोंपर विश्वास नहीं करते थे। क्योंकि उनके द्वारा सत्य वस्तुका यथार्थ ज्ञान नहीं होता। वे योगपर विश्वास करते थे जिसे आजकलकी विज्ञानकी भाषामें चतुर्थमापकी चेतना कह सकते हैं। इस योगके सहारे वे सूक्ष्मसे सूक्ष्म और महान्से महान् तथा निकटतमसे लेकर सुदूरतमकी वस्तुओंके दर्शनकर लेते थे और इस प्रकार ज्योतिष ज्ञानको उन्होंने ऐहिक वस्तुओं तक ही सीमा बद्ध नहीं किया था वरन् उसको आध्यात्मिक क्षेत्र तकमें पहुंचा दिया था। इसलिये यह कहना भूल है कि ज्योतिष-शास्त्र केवल आध्यात्मिक जगत्की वस्तु है, न कि अन्य विज्ञानों की भांति भौतिक जगत्की वस्तु है। उसके द्वारा महर्षियोंने मनुष्यके लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकारके कल्याणोंका प्रबंध किया था।

भौतिक विज्ञानियोंका विकासवाद केवल भूतकाल की चर्चा करता है। परन्तु कपिलमुनीका विकासवाद जो इस सिद्धांतके सर्वप्रथम आचार्य थे भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों पर दृष्टि रखता है। ज्योतिषशास्त्र कर्मवादका शास्त्र है। हमारी आर्थिक और बौद्धिक विषमताओंको इसी कर्मशास्त्रके आधार पर ठीक ठीक समझाया जा सकता है। ग्रहोंकी स्थिति बताती है कि हमने पूर्व जन्ममें किस प्रकारके कर्म किये थे जिनक इस जन्ममें हमें किस प्रकार फल भोगना है। वह ऐसे भविष्यकी ओर भी संकेत करता है जिसमें

आगे बढ़कर देश और काल से भी अतीत अवस्था प्राप्त हो सकती है। ज्योतिष कोई काल्पनिक नहीं वरन् एक ध्रुव शास्त्र है।

काल विकासशील है और किसी भी कालमें जो भी कार्य किया जाय उसका फल भोग्य अवश्य ही होता है, इन्हीं दो सिद्धान्तोंका आधार लेकर ज्योतिष शास्त्र बना है। अनुभवसे मालूम हुआ कि कालके विकासके ज्ञानमें ग्रहोंकी स्थिति और गतिका ज्ञान बहुत सहायक है। इसलिये ज्योतिष शास्त्रमें इस विषयकी चर्चा हुई। यह तत्व प्रोफेसर सूर्यनारायण रावके अंग्रेजी ग्रन्थ (ज्योतिषशास्त्रके अध्ययन की भूमिका) में भली भांति समझाया गया है।

ग्रहोंका असर भौतिक जगत्में भलीभांति देखा जा सकता है। उनसे मानसिक प्रवृत्तियां और आध्यात्मिक आकांक्षाएं भी जागृत होती हैं। भौतिक जगत् में हम देखते हैं कि भूकम्प आदिकी घटनाएं गुरु और शनिकी गतियोंके साथ घनिष्ठ तया संबद्ध हैं। वृक्षोंके पीडमें जो घेरा पड जाता है वह सूर्यकी गति के अनुसार होता है। प्रत्येक परमाणुकी बनावट और शक्तिके साथ सौर जगत्की स्थिति गतिका घनिष्ठ संबंध है। मनुष्यका शरीर ऐसे कई परमाणुओंसे बना है। तब फिर उसपर सौर जगत्का प्रभाव कैसे नहीं पड़ेगा?

चट्टानोंका बनना बिगड़ना तथा वर्षाका होना न होना यह सब सूर्यके ऊपर ही निर्भर है। तथा वर्षाका असर हमारी फसल, हमारे स्वास्थ्य और हमारी आर्थिक स्थिति पर कितना अधिक है यह हर कोई समझ सकता है।

ध्वनि, उष्णता, प्रकाश, आकर्षण, विद्युत् और ईथर ये सब भिन्न-भिन्न प्रकारकी शक्तियां हैं। ये सब शक्तियां सूर्यसे आती हैं। कालके गर्भमें समायी हुई ये शक्तियां ही उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयका कार्य करती हैं। इसीलिए संस्कृतके वैज्ञानिक पंडितोंने कहा है कि उत्पत्ति, स्थिति और प्रलयकी संपूर्ण शक्तियां सूर्यमें निहित हैं। प्रत्येक पलमें हम लोग इन शक्तियोंसे प्रभावित होते रहते हैं। और ग्रहोंकी स्थितियोंके अनुसार इन शक्तियोंमें घट बढ़ हुआ करती है, तथा इनके भिन्न भिन्न परिणाम भी हुआ करते हैं। जल पवनमें जो कुछ परिवर्तन हुआ करता है वह सूर्यकी दशा हीके कारण होता है। और जल वायुका असर प्रत्यक्ष ही भिन्न जातियों पर पड़ा करता है। हम देखते ही हैं कि मद्रासियों और पंजाबियोंकी बनावटमें कितना अंतर रहा करता है।

मनुष्यका निर्माण न केवल जन्मसे ही होता है वरन् परिस्थितियोंके अनुसार भी होता है। बालक जैसे ही पैदा होता है वैसे ही उसकी परिस्थितिका उसके ऊपर पूरा प्रभाव पड़ जाता है और उस समय ग्रहोंकी जैसी स्थिति होती है—उसका प्रभाव पड़ना अनिवार्य हो जाता है। अपने-अपने कर्मोंके अनुसार ही मनुष्यको भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ भी प्राप्त हुआ करती हैं। कोई जन्मसे ही राजपुत्र होता है और कोई कंगालके घर जन्म पाकर दुख उठाया करता है। यह देखा गया है कि जो बात पिण्ड में है वही ब्रह्माण्डमें है। चन्द्रमा मनका अधिपति माना गया है इसीलिए हमें दिखायी भी पड़ता है कि मनकी विकृतियाँ भी चन्द्रमा की अवस्था पर निर्भर रहा करती हैं। भिन्न-भिन्न स्थानों पर और भिन्न २ क्षणों पर ग्रहोंकी गतियां बदला करती हैं। इसलिए यह आवश्यक नहीं है कि एक ही समय पर पैदा होने वाले दो बच्चोंका भविष्य ठीक एक ही प्रकारका हो। लोग यह शंका करते हैं कि जो ग्रह इतनी दूर हैं वे हम पर किस प्रकार प्रभाव डाल सकते हैं? उन्हें जानना चाहिये कि आईन्सटाईन आदि विद्वानोंने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रकाश अथवा विद्युत् लहरोंकी भांति गुरुत्वाकर्षणकी लहरें भी ग्रहोंके द्वारा तरंगित हुआ करती हैं। और इन लहरोंके सम्बन्धमें दूरीका कोई प्रश्न ही नहीं उठता, वे सूर्य, चन्द्र आदि अनेकानेक ग्रहोंकी गतियों पर भी प्रभाव डाला करती हैं तब फिर मनुष्य जो इतना छोटा प्राणी है उस पर इन लहरोंका प्रभाव कैसे नहीं पड़ेगा।

इस तरह हम भलीभांति देख सकते हैं कि सजीव और निर्जीव सभी पदार्थ ग्रहोंसे प्रभावित हैं। और ज्योतिषशास्त्र हमें बताता है कि यह प्रभाव कब और कैसे पड़ता है, वह अच्छा प्रभाव है अथवा बुरा प्रभाव है और यदि बुरा प्रभाव है तो महर्षियोंके द्वारा बताए हुए उपायोंसे कैसे टाला जा सकता है। भविष्यको जानकर हम अपनेको कई प्रकारकी आपत्तियोंसे बचा सकते हैं। अथवा आपत्तियोंसे मुकाबला करनेके लिए प्रसन्नता पूर्वक प्रस्तुत हो सकते हैं।

केपलर, बेकन, ड्रायडन, न्यूटन प्रभृति अनेकानेक पाश्चात्य विद्वानोंने ज्योतिषशास्त्र पर पूर्ण विश्वास किया है, अज्ञ लोग ही इस शास्त्रका मजाक उड़ा सकते हैं। स्वतः मैंने इस महायुद्ध और इसके पहलेके महायुद्धके संबन्धकी अनेकानेक घटनाओंके संबंधमें भविष्य बताया था और वे सब बातें समय पाकर ठीक २ उतरीं। राष्ट्रके भविष्यके सम्बन्धमें भी ज्योतिषशास्त्र बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। अंतर्राष्ट्रिय समस्याएं हल करनेके लिए यदि एक ज्योतिषपरिषद्की आयोजना की जाय तो वह निःसन्देह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। यदि उसके निर्णय साठ प्रतिशत भी ठीक २ उतरे तो भी वे निर्णय करोड़ोंका लाभ पहुँचा सकते हैं। वह दिन दूर नहीं है जब लोगोंका ध्यान इस उपयोगी शास्त्रकी ओर आकृष्ट होगा क्योंकि वैज्ञानिक लोग हरएक वस्तुको गणितके नियमोंसे नियन्त्रित देखना चाहते हैं। और ज्योतिषशास्त्र इन्हीं गणितके नियमोंका प्रमाण स्पष्ट रूपसे दे रहा है।

श्रीबाल्मीकि जाति विचार

[लेखक—श्री पं० दीनानाथ जी शास्त्री सारस्वत विद्याभूषण विद्यावागीश विद्यानिधि]



अन्त्यजोद्धारके इस समयमें पुराने मुनियोंको ढूंढ ढूंढ कर अन्त्यज सिद्ध करनेकी चेष्टा की जा रही है। उससे श्री बाल्मीकि मुनि भी नहीं बच पाये। उन्हें 'भंगी' कहा जाता है। पर यह बात सर्वथा निर्मूल है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि—उनका कुछ समय कुसंगतिमें अवश्य बीता, पर वे थे ब्राह्मण ही। इस विषय पर लिखना असामयिक न होगा। 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक अवधान दें।

श्रीबाल्मीकि-रामायणके कर्त्ता श्रीबाल्मीकि मुनि माने जाते हैं। तब उस रामायणसे उनका जो परिचय मिले, वह समूल कहा जावेगा। बाल्मीकि रामायणके अन्तमें कहा है-'कृतवान् प्रचेतसः पुत्रस्तद् ब्रह्माप्यन्वमन्यत' (७।१११।११) इसमें रामायणके कर्त्ता श्रीबाल्मीकिको प्रचेताका पुत्र कहा गया है। इसलिए ही श्रीबाल्मीकिको 'प्राचेतस' यह संज्ञा प्रसिद्ध है। जैसा कि—'मुनिः प्राचेतसस्तदा' बाल्मी० (७।९३।७) प्रचेताको मनुस्मृतिके—'मरीचिमत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम्। प्रचेतसं वसिष्ठं च भृगुं नारदमेव च, (१।३५) इस पद्यमें ब्रह्माका पुत्र कहा गया है। तब ब्रह्माके पुत्र प्रचेताके लड़के बाल्मीकि भंगी कैसे हो सकते हैं?

अश्वमेधयज्ञके समय जब श्रीबाल्मीकि मुनि सीताको साथ लाए, तब उन्होंने अपना परिचय दिया कि—'प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन! न स्मराम्यनृतं वाक्यम्' (७।९६।१८) यही श्लोक अध्यात्म रामायणमें (७।७।३१) भी मिलता है। इसमें बाल्मीकिने अपने आपको प्रचेताका दसवां

पुत्र कहा है। प्रचेताका परिचय दिया ही जा चुका है। इससे बाल्मीकि स्पष्टतया ब्राह्मण सिद्ध हुए।

अध्यात्मरामायणमें बाल्मीकिकी कुसङ्गतिका वृत्त इस प्रकार दिया गया है—'अहं पुरा किरातेषु किरातैः सह वर्द्धितः। जन्ममात्रं द्विजत्वं मे शूद्राचाररतः सदा अयोध्याकाण्ड ६।६५ यहां पर बाल्मीकिजीने श्रीराम को स्वयं बताया है कि—मैं जन्ममात्रसे ब्राह्मण था, छोटी आयुमें मैं किरातों (भीलों) में रहा, मेरे शूद्रों जैसे आचार रहे। फिर बाल्मीकिजीने बताया कि मैंने विवाह भी एक शूद्रा स्त्रीसे कर लिया। उससे कई लड़के भी हुए, जैसा कि—'शूद्रायां बहवः पुत्रा उत्पन्ना मेऽजितात्मनः। ततश्चौरैश्च संगम्य चौरोऽहमभवं पुरा २।६।६६ इससे स्पष्ट सिद्ध हुआ कि बाल्मीकि जन्मसे ब्राह्मण थे। परन्तु भीलोंकी कुसङ्गतिसे शूद्रों वाला व्यवहार करने लगे थे, शूद्रा से विवाह कर लिया, कई लड़के भी हो गये। यहां बाल्मीकिने अपने आपको 'अजितात्मा' कहा है। यदि वह शूद्र होते, तो शूद्रामें सन्तान पैदा करनेसे वे अपने आपको 'अजितात्मा' न कहते। अस्तु। चोरी करते हुए उन्हें मुनि मिले।

'दृष्ट्वा मां मुनयोऽपृच्छन् किमायासि द्विजाधम !' अध्यात्मरामा० (२।६।६९) दुर्वृत्तोऽयं द्विजाधमः (७८) इत्यादि श्लोकोंमें मुनियोंने उसे चोरी आदि करनेसे अधम ब्राह्मण कहा। इससे स्पष्ट हुआ कि बाल्मीकि जन्मसे ब्राह्मण थे, परन्तु कुसङ्गतिमें पड़कर शूद्रोंके काम करने लग पड़े थे, वे जन्मसे शूद्र नहीं थे। यह बात सिद्ध हो गई।

'बाल्मीकिर्यस्य चरितं चक्रे भार्गवसत्तमः, मत्स्य पुराण (१२ अध्याय ५१) के इस पद्यमें बाल्मीकिको भार्गव कहा गया है, विष्णुपुराणके तृतीयांश तृतीया ध्यायायमें भी कहा है- 'ऋक्षोऽभूद्भार्गवस्तस्माद् बाल्मीकिर्योऽभिधीयते' भार्गवं शब्द पर रामाभिरामी टीकाकारने लिखा है- 'प्राचेतसत्वेन अस्यापि भार्गवत्वम्, भृगोर्वरुणपुत्रत्वाद्, भृगोर्भ्राता भार्गव इत्यन्ये, ७।६४।२५ अर्थात् प्रचेता वरुणको कहते हैं, इधर भृगु वरुणका पुत्र है, भृगुके भ्राता होनेसे बाल्मीकिको भार्गव कहते हैं। तब वह चाण्डाल कैसे ?

स्कन्दपुराण (प० १, २४, ७, १, २७८) में बाल्मीकि सुमति नामक ब्राह्मणके पुत्र कहे गये हैं, तथा ब्रह्मर्षि भी। परन्तु श्रीमद्भागवतपुराणकी सुबोधिनी नामक टीकामें 'श्वादोपि सद्यः सवनाय कल्पते' (३।३३।६) इस पद्यकी टीकामें यह शब्द मिले हैं—'स्मरणस्य तु वाल्मीकेः। स हि चाण्डाल एव मार्गघातकः। ऋषेरुपदेशात्पूर्वं महर्षित्वभावनां कृत्वा पश्चात् रामस्मरणेन तस्मिन्नेव जन्मनि वाल्मीकिर्जातः इति न किञ्चिदनुपपन्नम्'। पर यह शब्द विश्वसनीय नहीं जान पड़ते, क्योंकि पूर्वोक्त प्रमाणोंमें वाल्मीकि जन्मसे ब्राह्मण माने गये हैं। उसी सुबोधिनीमें 'सद्यः' का अर्थ 'तदुत्तर जन्मनि' किया गया है। तब स्यात् सुबोधिनीकारको नारद की भांति वाल्मीकि भी पूर्वजन्ममें चाण्डाल अभीष्ट हों—यह सम्भव है। श्रीमद्भागवतमें— 'चर्षणी वरुणस्यासीद्यस्या जातो भृगुः पुनः। वाल्मीकिश्च महायोगी वल्मीकादभवत् किल' ८।१८।५ यहां पर श्रीमद्भागवतकार जब वाल्मीकिकी उत्पत्ति चाण्डालसे नहीं बताते, तब श्रीमद्भागवतकी सुबोधिनी टीकाकार उसे इस जन्ममें चाण्डाल कैसे कह सकते हैं ? वल्मीकसे श्रीवाल्मीकिकी यह तपस्या अभीष्ट है, जिसके कारण उन पर मट्टी जम गयी थी, उसमें वल्मीक (बांबी) बन गये थे, उस वल्मीकसे निकलनेसे उनको वाल्मीकि कहते थे—यह कथा स्कन्दपुराण (१।२४।७।१।२७८) में स्पष्ट है। इस पर रामाभिरामी टीकाकार कहते हैं—'वाल्मीकिः—वल्मीकस्यापत्यम् 'वल्मीकप्रभवो-यस्मात् तस्मात् वाल्मीकिरित्यसौ' इति ब्रह्मवैवर्तोक्तेः वल्मीक प्रभवत्वेन गोणीपुत्रादिवद् गौणमस्य वल्मीकापत्यत्वं गृहीत्वा इञ् साधुरपत्यार्थः। यद्वा—वल्मीक इति ऋषिविशेषस्य इत्यादि०' वाल्मीकि १।१।१ अर्थात् जिस प्रकार शेषके अवतार पतञ्जलि गोणी नामक स्त्रीके हाथमें आ पड़े थे, उनको गौणतासे 'गोणीपुत्र' कहा जाता है, वैसे ही वल्मीकसे निकलने

के कारण गौणरूपसे वल्मीकका अपत्य मानकर इन्हें अपत्यार्थक् इञ् प्रत्ययसे 'वाल्मीकि' यह कहा जाता है, या वल्मीक किसी ऋषिका नाम है—उसके अपत्य होनेसे इन्हें वाल्मीकि कहा जाता है।

इससे स्पष्ट है कि वे जन्मसे चाण्डाल नहीं थे। हां, सुबोधिनीकारका उन्हें चाण्डाल कहना और ढंगसे माना जा सकता है। मार्गघातक कई चाण्डाल विशेष होते हैं, यह भी उन्हींका कार्य करते थे जैसा कि—अध्यात्म रामायणसे पहले स्पष्ट कर चुके हैं, पर वहां उन्हें 'शूद्राचाररत' 'जन्ममात्रसे द्विज' माना है। तब सम्भव है कि मार्गघातक चाण्डाल वत् से ही उन्हें चाण्डाल कहा गया हो। जैसे कि महाभाष्यमें कहा गया है-'अन्तरेणापि वतिमतिदेशो गम्यते तद् यथा - एष ब्रह्मदत्तः। अब्रह्मदत्तः ब्रह्मदत्त इत्याह, तेन मन्यामहे ब्रह्मदत्तवद् अयं भवतीति १।१।२३। अर्थात् तत्सदृशको भी उस शब्दसे कहा जाता है, जैसे अब्रह्मदत्तको ब्रह्मदत्त कहने से उसका भाव ब्रह्मदत्त सदृशमें होता है।

अथवा उनकी चाण्डाल प्रसिद्धिका एक अन्य कारण भी हो सकता है। मनुस्मृतिमें कहा है— 'शूद्रां शयनमारोप्य ब्राह्मणो यात्यधोगतिम्। जनयित्वा सुतं तस्यां ब्राह्मण्यादेव हीयते, (३।१७) अर्थात् शूद्रासे सन्तान पैदा करनेसे—ब्राह्मणत्वकी हानि होती है। अध्यात्मरामायणके वचनसे बताया जा चुका है कि—वाल्मीकिने शूद्रासे विवाह कर रक्खा था; उससे कई लड़के भी पैदा हो गये थे, तब ब्राह्मण्यकी भ्रष्टतासे उसे कर्मचाण्डाल कहीं कहा गया हो; यह सम्भव है। परं पातित्यमें भी जाति नहीं जाती—यह शास्त्रीय मत है। तभी तो उक्त अध्यात्मरामायणके वचनमें कहा है—'जन्ममात्रं द्विजत्वं मे'।

यहां पर यह भी जानना चाहिये कि—ब्राह्मणको भ कहीं—चाण्डाल कहा जा सकता है; वहां पर चाण्डाल शब्द वास्तविक नहीं होता, किन्तु पारिभाषिक होता है। देखिये इस पर अत्रिस्मृति—'देवो,मुनिर्द्विजो, राजा, वैश्यः, शूद्रो,निषादकः। पशुर्म्लेच्छोऽपि, चाण्डालो विप्रा दशविधाः स्मृताः, (३७१, अत्रिसंहिता ३७३)। यहां पर ब्राह्मणके दश भेद कहे गये हैं। उसमें ब्राह्मणका एक भेद 'पशु' भी कहा गया है; तो क्या वादी लोग उसे वास्तवमें 'पशु' मान कर उस दिनसे उसे खल भूसा खिलाना प्रारम्भ करेंगे? यदि नहीं तो इसी प्रकार ब्राह्मणको वहां चाण्डाल कहने पर भी उसे वास्तविक चाण्डाल नहीं समझना चाहिये, किन्तु उसे पारिभाषिक शब्द समझना चाहिये। वह परिभाषा यह है—'क्रियाहीनश्च मूर्खश्च सर्वधर्मविवर्जितः। निर्दयः सर्वभूतेषु विप्रश्चाण्डाल उच्यते' अत्रि-स्मृति ३८१ (अत्रिसंहिता ३८३)। यह लक्षण 'शूद्राचाररत' जन्म ब्राह्मण वाल्मीकिमें घट जानेसे उसे कहीं चाण्डाल कहा हो; यह सम्भव है; पर वह वास्तविक चाण्डाल सिद्ध न हुआ; किन्तु जन्म ब्राह्मण ही सिद्ध हुआ। मत्स्य पुराणमें वरुणका वीर्य वल्मीकमें गिरनेसे यह वरुणपुत्र थे-ऐसा सूचित किया है।

कहीं यह भी लिखा मिला है कि—यह ब्राह्मणपुत्र थे। उसके माता पिता इसे वनमें छोड़कर तपस्या करने चले गये। तब यह बालक एक भीलनी को मिला। उसने इसे पाला। उसने इनका नाम 'रत्नाकर' रखा। उसका विवाह भी भिल्लकन्यासे किया। भिल्लसंसर्गसे यह अपना स्वरूप भी भूल गये, जिसका नारदजीने स्मरण कराके उद्धार किया।

फलतः—श्री बालमीकि जन्मसे ब्राह्मण सिद्ध हुए। यद्यपि किरातोंकी सङ्गतिसे वह बाल्यमें अपना स्वरूप भूल बैठे; तथापि ऋषियोंकी सङ्गतिसे फिर सम्भल गये। भारी तपस्या करके इन्होंने पूर्वका प्रायश्चित्त कर डाला। कहावत एक प्रसिद्ध है कि 'सुबहका भूला शामको घर लौट आए; तो भूला नहीं कहा जा सकता'। तब इनको 'भंगी' बनाने वाले भारी भूल कर रहे हैं। फिर 'बालमीकि का भंगियोंसे सम्बन्ध कैसे हुआ; यह बात विचारणीय है, हो सकता है कि बालमीकिके शूद्रा गर्भज लड़कोंकी परम्परा चल पड़ी हो; और उन्होंने बालमीकिकी तपस्यामें प्रसिद्ध हो

जानेके समय अपने आपको 'वाल्मीक' प्रसिद्ध कर डाला हो। पर वे धर्मशास्त्रविरुद्ध होने से न्याय्य (जायज) लड़के नहीं थे; तब उनका सुधरे हुए तपस्वी ब्राह्मण वाल्मीकिसे सम्बन्ध जोड़ना भी व्यर्थ है, क्यों कि—उस समय वे 'रत्नाकर' थे वाल्मीकि नहीं।

इस अनुसन्धानसे स्पष्ट हुआ कि वाल्मीकि चाण्डाल वा अन्त्यज वा भंगी नहीं थे, वे दिव्य वा उच्च ब्राह्मण थे। वे ब्रह्माके पौत्र थे, तभी उनकी रामायणका ब्रह्माजीने रामायणके अन्तिम पद्यके अनुसार अनुमोदन किया। आरम्भमें नारद तथा ब्रह्मा इसी सम्बन्धसे उनके पास गये थे और उन्हें रामायणके बीज समझाये थे। अन्त्यजोद्धार-बद्ध-बुद्धि सज्जनोंको उचित है कि उनका मर्यादामें रह कर उद्धार करें, ऋषि मुनियोंको अन्त्यज सिद्ध कर देनेसे अन्त्यजोंका उद्धार नहीं होगा। श्रीवाल्मीकि रामायण जिसे सभी लोग प्रामाणिक मानते हैं—उसमें एतद्विषयक कोई गन्ध भी नहीं मिलती। नाहीं किसी अन्य मूलपुस्तकमें ऐसी कोई बात मिली है। तब इन प्रसिद्ध प्रमाणोंको छोड़ कर अप्रसिद्ध एवं निर्मूल किसी अन्य अनाप्तकी निष्प्रमाण बातोंको मान लेना अपना अविवेक प्रकट करना है। आशा है—विद्वान् लोग फैले हुए एतद्विषयक भ्रमको मिटानेमें सहायक बनेंगे।

तुलसीसे रोग नाश

[लेखक—श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालङ्कार]

स्वास्थ्य सुधारके लिए आजकल पुराने रोगियोंको पहाड़ों पर भेजनेके लिए चिकित्सक आदेश दिया करते हैं। वहां पर जो लम्बे-लम्बे चीड़के वृक्ष रहते हैं उनके बीचमेंसे गुजरती हुई वायु उनके तैलीय रेजिन [ales-resin की स्वास्थ्यप्रद गन्धको साथ ले लेती है। खोये हुये स्वास्थ्यको पुनः प्राप्त करानेमें यह वायु रोगियोंके लिए वरदान होती है। हमारे देशमें एक समय रोगियोंको तुलसी के जंगलों या बगीचोंमें रखनेका रिवाज रहा है। तुलसीमेंसे उड़ने वाले सुगन्धित तेल आस-पासकी वायुमें भरे रहनेसे उस वायुको सुगन्धित और शुद्ध रखते हैं। यह वायु अन्तःश्वासमें जब फेफड़ोंके अन्दर पहुंचती है तो सामान्य रक्त-संचारमें तुलसीके निःसंक्रमण करनेके तथा दूसरे प्रभावोंको पहुँचा देती है, जिससे शरीरके प्रत्येक कोष पर इसका सूक्ष्म असर पड़ता है, फेफड़े नीरोग होते हैं, शरीरका हर एक अवयव चाहे वह सूक्ष्म हो या स्थूल, नई स्फूर्ती और प्रेरणा पाता है। दुःसाध्य रोगी भी स्वस्थ हो जाता है।

तुलसीकी सुगन्धको लिए हुए वायु जहां-जहां जाती है उस स्थानकी हवा, मिट्टी, पानी और चारों ओरके वायुमंडलको शुद्ध करती जाती है। इस प्रकार तुलसीवनके पासके गाँवोंमें रहने वाले सब प्राणी स्वास्थ्य लाभ कर सकते हैं। इसी बातको सोचकर प्राचीन कालमें तुलसीवनोंमें स्वास्थ्यगृह (सेनेटोरियम) बनानेकी प्रथा रही है। तुलसी सेनेटोरियमके कमरोंके फर्श और दीवारें उस मिट्टीसे लीपी जाती थी जो तुलसीके पौदोंके नीचेसे ली गई होती थी। यह इसलिये किया जाता था कि रोगोंके कीटाणु उस फर्श पर न पनप सकें। जिन रोगियोंको घरसे दूर नर्मदा या गंगा के तट पर रहकर स्वास्थ्य सुधारनेकी सुविधायें प्राप्त नहीं हो सकती थी वे तुलसीवनोंमें ही रहकर अपने स्वास्थ्य

को बनाते थे और उन्हें वैसा ही लाभ होता था जैसा कि वे गंगाके तट पर रहकर प्राप्त करनेकी आशा रखते थे।

शोधक रसायन

मध्यकालके एक लेखके अनुसार तुलसी देखने, विचारने, सूंघने, बोलने, स्वाद लेने आदि सब शक्तियोंको स्थिर रखने वाली है। मुख, आंख, नाक, गला, कन्धे, हृदय, नाभि, कमर, जांघ, पैर आदि सब अंगोंको सुरक्षित रखने वाली है। तुलसीका सेवन शरीरमेंसे संचित मलोंको निकालता है जिससे प्रत्येक अवयव पवित्र हो जाता है। मन, वाणी और शरीर शुद्ध हो जाते हैं। तुलसीकी मिट्टीको या तुलसी की लकड़ीको चन्दनकी तरह घिस कर माथे पर सदा लेप करनेसे वंश परम्परामें चलने वाले रोगोंको रोकनेमें सहायता मिलती है। तुलसी सब रोगोंसे बचाकर मन और शरीरको पवित्र करती है। दूषित जलको शुद्ध करनेके लिये तुलसीके पत्ते पानीमें डाल देते हैं।

व्रत-कौमुदीमें तुलसीके 'लक्षव्रत' का उपदेश है। एक-एक करके लाख पत्तोंको शय्या पर चढाया जाता है। जब तक पूरे लाख पत्ते न चढा दिये जाय व्रत करने वाला उपवास रखता है। आयुर्वेद शास्त्रमें बहुत सी वनौषधियोंको हजारोंकी संख्यामें प्रयोग करानेके आदेश लिखे मिलते हैं। 'हजार हरडों' और हजार पिप्पलियोंके प्रयोगसे प्रत्येक वैद्य परिचित है। यहां भी तुलसीके हजार और लाख पत्तोंके प्रयोगकी ओर संकेत समझ कर वैद्य महोदय रोगियों पर इनका प्रयोग करके बहुत लाभ पहुंचा सकते हैं। रोगकी अवस्था, रोगीकी प्रकृति और देश काल आदिको विचार कर वैद्यको निश्चय करना चाहिये कि 'बर्धमान कर्म'से अथवा दूसरी किसी विधिसे हजार या लाख पत्तोंका प्रयोग कराना है। बडी आयुके एक स्वस्थ ब्राह्मणको मैं जानता हूं, जो सालोंसे रोज तुलसीके पन्द्रह हरे पत्ते नियमसे खा रहे हैं। अपने उत्तम स्वास्थ्यका रहस्य वे स्पष्टतया तुलसीका नियमित सेवन बताते हैं।

मस्तिष्क और हृदय।

तुलसीके पांच सात पत्तोंको तीन चार काली मिरचोंके साथ सरदाई (ठण्डाई) की तरह रगड़ कर एक गिलास बना लें। सुबह खाली पेट इक्कीस दिन बराबर दिया जाय तो यह पेय दिमागकी गरमी को दूर करता है और दिमागको ताकत देता है। हृदय उत्तेजक होनेसे यह हृदयको बलवान् करता है। अमीर लोग इस पेयमें बादाम, चारों मगज, इलायची आदि भी रगड़ लेते हैं।

भरतपुरके एक वैद्यने एक लेखमें लिखा था कि उनके पास 'तुलसीकल्प' नामक एक हस्तलिखित प्राचीन पुस्तक है। उसमें लिखा है—ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर स्नानादिसे निवृत्त होनेके बाद प्रतिदिन तुलसीके पांच पत्ते एक घूंट जलसे निगल जाने वालेका बल और तेज बढ़ता है, उसकी मेधा और स्मरणशक्ति तीव्र हो जाती है।

चरक और गोविंददासके महानील तैलमें तुलसी के पत्ते डाले जाते हैं। पीनेसे, सिर पर मलनेसे और नाकमें डालनेसे यह तैल मस्तिष्क तथा सिर के सब रोगोंको दूर करता है, बालोंको सफेद होंने देनेसे रोकता है, आंखोंकी ज्योतिको बढ़ाता है और दीर्घ आयु प्रदान करता है।

तुलसीके हरे पत्तोंको पीसकर मृगीके रोगीके शरीर पर रोज उबटन करना चाहिये। पत्तोंके रसमें थोड़ा नमक मिलाकर नाकमें टपकानेसे मूर्च्छा और बेहोशी तत्काल दूर हो जाती है।

वातनाडियोंके रोग

वातनाडियों [Neres] के विकारोंमें जैसे गृध्रसी आदि नाडियोंकी शूल और शोथ (शियाटिका) में पत्तोंको पानीमें उबाल कर रोगग्रस्त वातनाडीको पसीना देते हैं। इस क्रियाको नाडीस्वेद कहते है। मारेशस द्वीपमें इसके गरम काढ़ेसे आमवात (रहुमे-

टिज्म) और पक्षाघात (पैरेलिसिस) से आक्रान्त भागों को धोया जाता है और रसमें से उठते हुये वाष्पसे भाफ दी जाती है। लकवेके रोग (उरुस्तम्भ) में गरम काढ़ेसे टांगको धोते हैं और तुलसीके बीजोंको पीसकर उस पर लेप करते हैं। पत्तोंको दही और सैन्धा नमकके साथ रगड़कर लेप करने से टांगका लकवा ठीक हो जाता है। 'वैद्य-जीवन' में लोलिम्बराज बताते हैं कि पत्तोंके रसको कालीमिर्चके चूर्णमें और घीमें मिलाकर प्रबल वातव्याधिमें भी देने से रोग शान्त हो जाता है।

प्रजनन संस्थानके रोग।

तुलसी-पोषक और बाजीकरण गुणके लिये उपयोग की जाती है। यह वीर्यको गाढ़ा करती है और पुंसत्व शक्तिको बढाती है। बीज लेसदार और लेपक होते हैं। जननेन्द्रिय और मूत्रसंस्थानके विकारों में दिये जाते हैं। नपुंसकता में दी जाने वाली अनेक दवाओंमें पीसे हुये बीज भाग लेते हैं। ये वीर्यवर्द्धक हैं और वीर्यकी तरलता को दूर करते हैं। तुलसीके बीज पांच तोला, पोस्तके डोडे चार तोला, गोखरु पांच तोला, कौंचके बीज तीन तोला, मूसली चार तोला और मिसरी छः तोला। इन सबको कूटकर कपडछान कर लें। दश रत्तीकी मात्रामें यह चूर्ण वीर्यकी निर्बलतामें दिया जाता है। स्तम्भनके लिये लोग बीजोंके चूर्णको या जड़के चूर्णको पानमें रखकर सेवन किया करते हैं, इससे बलकी भी वृद्धि होती है। तुलसीके बीजोंका या जड़का चूर्ण करके समान भाग पुराने गुड़में मिलाकर डेढ़से तीन माशे तक सुबह शाम गायके दूधके साथ लिया जाये तो वीर्यके विकार दूर हो जाते हैं। वीर्यको पुष्टि देकर पुंस्त्व शक्ति बढ़ाने वाली दवाओंको ढूंढने वाले युवकों और अधेड़ोंको इसके पांच छः सप्ताहके सेवनसे बहुत लाभ होता है। स्वप्नदोषोंको रोकनेके लिये जड़को घोटकर पिलाया जाता है। थोड़ीसी इलायची और एक तोला सालममिश्रीके चूर्णके साथ पत्तोंका काढा प्रति दिन लिया जाय तो यह एक पोषक वृष्यपेयका काम करता है।

स्त्रियोंके रोग।

पिसे हुये बीज मासिक धर्मको जारी करनेके नुस्खें में डाले जाते हैं। पत्तोंके काढ़ेकी एक प्याली हर महीने रजोदर्शन के बाद तीन दिन तक पी ली जाया करे तो गर्भ ठहरनेकी सम्भावनायें बहुत कम रह जाती हैं। देहातोंमें स्त्रियां गर्भनिरोधके लिये इसका प्रयोग करती हैं। तुलसीके बीज और नई आमाहल्दीको समभागमें पीसकर योनिमें छिड़कनेसे योनिभ्रंश ठीक हो जाता है। गर्भावस्थामें पेटकी दीवारके खिच जानेसे त्वचाकी निचली स्तर फट जाती है, जिससे पेट पर दरारें सी दिखाई देती हैं, ये दरारें उरःस्थलके नीचे भी पड़ जाती हैं। इन दरारों को किक्किस (stria gravidarum) कहते हैं। इनमें खुजली हुआ करती है। तुलसीके पत्तोंको सिलबट्टे पर पीस कर इनपर मलते हैं। इससे खुजली शान्त हो जाती है।

मनुष्योंके लिए अमृततुल्य यह महौषध पुत्र चाहने वालोंकी इच्छा पूर्ण करती है। जिस स्त्रीके बच्चे मर जाते हों, रोज सेवन करानेसे यह उसके उत्पादक अङ्गोंको शुद्ध कर देती है और तब वह दीर्घजीवी नीरोग बच्चे पैदा करने लगती है। बांझ औरतोंको एक साल तक खिलायी जाय तो उसके सुन्दर गर्भ ठहर सकता है। लड़का चाहने वालोंके घर लड़का पैदा हो सकता है। तुलसीके प्रयोगसे स्त्रीको वशमें कर लेना भी ब्रह्माण्डपुराणमें लिखा है। इसमेंसे जो प्रिय गन्ध निकलती है उसे स्त्रियां बहुत पसन्द करती थीं। आजका युवक तो अपनी प्रेयसीको प्रसन्न करनेके लिए तरह तरहके सेण्टोंके उपहार देता है, परन्तु एक समय वह था जब रूठी हुई सुन्दरियोंको तुलसी सुंघाकर ही मना लिया जाता था। तुलसीगणका पौदा बर्बरी तो आज भी परफ्यूमरीमें बहुत पसन्द किया जा रहा है।

कुछ अनुभूत अद्भुत प्रयोग

दांत दाढ़ और नकसीर पर—

प्रिय पाठक वृन्द ! मैं कोई वैद्य डाक्टर या हकीम नहीं हूँ, किन्तु एक महात्माकी बताई हुई दो अव्यर्थ अनुभूत औषधियां यहां आपकी भेंट कर रहा हूँ। ये औषधियां हैं तो बिल्कुल मामूली पैसों या कौड़ियोंके दामकी; परन्तु समय पर जहां बहुमूल्य औषधियां व्यर्थ हो जाती हैं वहां ये फकीरी औषधियां रामबाणका काम करती हैं। हमने सैकड़ों रोगियों पर इनका प्रयोग किया और सबको लाभ हुआ। अतः 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकों से निवेदन है कि वे इन औषधियोंको विशेषरूपसे नोट करें और रोगियोको बतावें या बनाकर बिना मूल्य देकर पुण्यके भागी बनें।

(१) दांत या दाढ़में बादीसे या कीड़ा लगजानेसे पोल या छेद (फोका) हो गया हो अथवा अन्य किसी कारणसे दांत दाढ़में भयंकर पीड़ा हो रही हो, तो एक माशा नोसादर तथा एक माशा कपूर लेकर दोनोंको पीस लेवें, और जिस दांत या दाढ़में पीड़ा हो उस पर रख देवें तो पीड़ा तत्काल बन्द हो जावेगी।

(२) ग्रीष्मकालमें प्रायः कई मनुष्योंकी नाकसे नकसीर चलती अर्थात् खून निकलने लगता है। कहीं २ सैकड़ों रुपयोंकी औषधियोंसे भी यह नकसीर (नाकसे खून जाना) बन्द नहीं होता और रोगी भयंकर स्थितिमें फंस जाता है। इस रोगके लिए गधेकी ताजा लीदको बारीक कपड़ेमें रखकर ६ माशा रस निचोड़ लेवें। इसमें एक माशा कपूर मिलाकर नाकके दोनों नथनों (नासा छिद्रों) में दो-दो तीन-तीन बूंदें डालनेसे नकसीर बन्द हो जावेगी। चाहे नाकसेखूनकी धारा ही क्यों न बहती हो, इसके प्रयोगसे तत्काल बन्द हो जावेगी।

—मदनलाल गुप्त

शीतपित्तकी अनुभूत औषधी

ग्रीष्मकालमें वैशाखसे भाद्रपद तक जब गरमी अधिक पड़ती है तो प्रायः अनेक मनुष्योंके शरीर पर पित्ती निकल आती है, जो लाल-लाल फुन्सियां जैसी होती हैं और अधिक बढ़ने पर सारे शरीरमें लाल रंगके बड़े बड़े चकत्ते (दफ्फड़) से पड़ जाते हैं तथा शरीर पर भयंकर जलन और खाज होती है। रोगी कोई भी वस्त्र शरीर पर नहीं रख सकता, चित्तमें अत्यन्त व्याकुलता होती है और बहुत औषधियां करने पर भी तत्काल शांति नहीं मिलती। अभी सोलनसे दिल्ली आते हुए ट्रेनमें ही मैं स्वयं इस रोगसे पीड़ित हो गया था। दिल्ली स्टेशन पर पहुँचने तक सारे शरीरमें भयंकर पित्ती निकल आई, जलनसे चित्तमें अत्यन्त व्याकुलता हो रही थी। ट्रेनसे उतरते ही इसकी चिकित्सार्थ गाडोदिया मार्केट आर्य आयुर्वेदिक औषधालयमें पहुंचा; वहां प्रातः वैद्यराज पं० मोहनलालजी शास्त्री तो पहुंचे नहीं थे, पर सौभाग्यसे मेरे चिरपरिचित परमस्नेही श्रीयुत प० भागीरथजी जोशी आयुर्वेदाचार्य (मोहता आयुर्वेदिक औषधालय उदयपुरके प्रधान वैद्यराज) मिल गये, आपने तत्काल एक अपनी अनुभूत औषधि बनाकर मुझे लाभ पहुँचाया। वही अनुभूत औषधि उक्त वैद्यराजजीकी आज्ञानुसार पाठकोंके लाभार्थ मैं यहां प्रकाशित कर रहा हूँ। इस औषधिका उपचार करते ही १५ मिनटमें मेरी पित्ती विलीन होकर शरीर पूर्ववत् स्वस्थ हो गया, वैद्यराजजीकी यह औषधि जादूसे भी बढ़कर प्रभावशाली और इस रोगके लिए रामबाण सिद्ध हुई है। प्रयोग यह था:—

भुने हुए चने (भूगड़े) दो पैसेके और थोड़ा सा नमक दोनोंको खरलमें खूब पीस कर इस सूखे

आटेका शरीर पर जहां दफ्फड़ खुजली एवं जलन हो रही हो वहां पर खूब मालिश करना (रगड़ना) चाहिए। रगड़ते-रगड़ते ही जब दफ्फड़ विलीन हो जावे तब कुछ नमक मिले गर्म पानीसे स्नान कर लेना चाहिए। यदि कोष्ठबद्धता हो तो मजीठ एक भाग नीमकी पत्ती सूखी एक भाग और इन्द्रायणकी जड़ आधा भागका चूर्ण बनाकर ३ माशा प्रातः सायं उन्नाब शर्बतसे लेना चाहिए। इस सर्वसुलभ सस्ते और अत्यन्त लाभदायक अनुभूत योगके कुछ दिन सेवनसे सब प्रकारकी पित्ती एवं चर्म रोग समूल नष्ट हो जाते हैं। उक्त वैद्यराज महोदयने तत्काल मेरा उपचार करके स्वस्थ बनाया इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ आशा है 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी-पाठक भी इस प्रयोगसे अवश्य लाभ उठायेंगे।

—ह० श० त्रिवेदी (सम्पादक)

महर्षि श्री बाल्मीकिके विषयमें भ्रम निराकरण

[ले० —श्री पं० दुर्गादत्तजी आचार्य राजपुरोहित बघाटराज्य]

आजके बदलते हुए संसार में हम तो बदलते ही जा रहे हैं, आश्चर्य और खेद है कि साथ ही हम अपने पूर्वजोंको भी अपनी बदलती दृष्टिसे ही देख रहे हैं। वर्तमान शिक्षा और पाश्चात्त्य संस्कृतिने हमारी वेषभूषा ही नहीं मन और मस्तिष्क तक विकृत कर दिया है। तभी तो आज बहुतसे लोगों को अपने पुराण और इतिहासका ज्ञान न होनेसे अपने ही पूर्वजोंके विषयमें मिथ्या भ्रम होने लगा है। महर्षि बाल्मीकि जिन्होंने रामायणकी रचना कर हिन्दू समाजके कल्याणके साथ अपनेको अमर बना लिया है, उनको आज शूद्र या अछूत जातिका कहने वाला हिन्दू समाज अपने इस पूजनीय प्रातः-स्मरणीय महर्षिके प्रति उनकी जाति तक भुलाकर कितना अकृतज्ञ हो रहा है! इससे किसी भी विचार शील व्यक्तिके हृदयमें गहरी चोट लग सकती है। परन्तु इतना निश्चित है कि आज यह प्रश्न सारे हिन्दू समाजका नहीं अपितु उन कुछ सुधारवादी हिन्दू नामधारी व्यक्तियोंका है जो अछूतोद्धारके प्रवाहमें स्वयं बहकर पूर्वजोंको भी बहानेमें संकोच नहीं करते। मैं नीचे कुछ प्रमाण देता हूं जिससे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि बाल्मीकिजी ब्राह्मण ही थे।

बाल्मीकिजीने रामायणकी रचना की है यह तो निर्विवाद है अतः उसी रामायणसे यदि ब्राह्मण होने का प्रमाण दिया जाय तो वह सर्वथा मान्य हो सकता है। बाल्मीकि रामायणका अन्तिम श्लोक है कि—

एतदाख्यानमायुष्य सभविष्यं सहोत्तरम्।
कृतवान् प्रचेतसः पुत्रस्तद्ब्रह्माप्यन्वमोदत॥

इस श्लोकसे प्रमाणित होता है कि श्रीबाल्मीकि जी प्रचेताके लड़के थे। और प्रचेता ब्रह्माके पुत्र थे। जैसा कि मनुने भी लिखा है कि—

'मरीचिमत्र्यङ्गिरसौ पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम्। प्रचेतसं वसिष्ठं च भृगुं नारदमेव च'॥ इससे यह सिद्ध हुआ कि ब्रह्माके पुत्र प्रचेता और प्रचेताके पुत्र बाल्मीकि थे जिन्हें प्राचेतस भी कहते हैं। 'प्राचेतसश्चादि कविः' इससे भी यही सिद्ध हुआ कि प्रचेता के पुत्र बाल्मीकि जिन्हें आदि कवि माना जाता है निश्चय ही ब्राह्मण ही थे। हां, बादमें कुछ कुसंगके कारण लूटमार आदि कुत्सित वृत्ति हो गई थी पर इससे उनके ब्राह्मण जातीय न होनेकी कोई युक्ति समझमें नहीं आती। अस्तु, महर्षि बाल्मीकि ब्राह्मण ही थे यह निर्विवाद है।

राशि स्वामियोंकी विशिष्ट उपपत्ति

[लेखक—राजकुमार गुरु ज्योंतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्तजी राजज्यौतिषी]

[शरदङ्कसे आगे]



पूर्व लेखोंमें प्रकाशित क्रमविचार प्रधान उपपत्तिकी दृढ़ताके लिए कुछ स्थूल प्रकृति-विचारसे उपपत्ति लिख रहा हूँ। पूर्व लेखोंमें शास्त्र और युक्तियोंसे सिद्ध किया गया है कि सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, धनु, मकर ये सौर विभागकी राशियां और कर्क, मिथुन, वृष, मेष, मीन, कुम्भ ये चान्द्र विभागकी राशियां हैं। इन विभागोंमें भी विषम राशियां उग्र होनेसे सौर और सम राशियां सौम्य होनेसे चान्द्र हैं। उग्रत्व-स्थिरत्व सौर अंश हैं। सूर्यमें अत्यन्त उग्रत्व प्रत्यक्ष हैं। स्थिरता कारक होनेसे उसमें स्थिरत्व भी निश्चित है। चन्द्रमामें अत्यन्त सौम्यता प्रत्यक्ष है, चञ्चलता कारक होनेसे उसमें चरत्व भी निश्चित है। इस प्रकार सौम्यत्व-चरत्व चान्द्र अंश हैं।

"रविः स्थिरः शीतकरश्चरः स्यात्" (जातक पारिजात) उग्रत्व सूर्यका प्रधान अंश और स्थिरत्व उसका अप्रधान अंश हैं। सौम्यत्व चन्द्रमाका प्रधान अंश और चरत्व उसका अप्रधान अंश है। कुम्भ चान्द्र-विभागमें उग्र स्थिर राशि है। उसमें उग्रत्व प्रधान सौर अंश और थिरत्व अप्रधान सौर अंश है। उसमें चान्द्र अंशका अभाव है। उग्रत्व-सौम्यत्व आदि भेदोंसे सौर-चान्द्र विभाग परस्पर विपरीत हैं। यही भेद यहां अपेक्षित हैं। इसलिए कुम्भमें उग्रत्व-स्थिरत्व ये दोनों अंश विपरीतविभागमें होनेसे अत्यन्त दूषित हैं। शनि भी अधिक क्रर होनेसे अत्यन्त दूषित है। इसलिए 'आनुकूल्यं धर्म साहश्यात्' इस सूत्रके अनुसार कुम्भ राशिसे शनिकी अनुकूलता सिद्ध हुई। (यह सूत्र ज्यौतिष-मीमांसा-दर्शनके उत्तर खण्डमें है) इस प्रकार कुम्भ राशिका स्वामी शनैश्चर सिद्ध हुआ।

मेष चान्द्र-विभागमें उग्र-चर राशि है। इसमें उग्रत्व प्रधान सौर अंश और चरत्व अप्रधान चान्द्र अंश है। उग्रत्वरूप प्रधान सौर अंश विपरीत विभागमें होनेसे दूषित है। अनुकूल विभागमें होनेके कारण चरत्वरूप अप्रधान चान्द्र अंश दोष रहित हैं। इसलिए यह राशि कुम्भसे कम दूषित है। अतएव इसका स्वामी शनिसे कम पाप ग्रह मङ्गल सिद्ध हुआ।

मीन चान्द्र-विभागमें सौम्य द्विस्वभाव राशि है। इसमें सौम्यत्वरूप प्रधान चान्द्र-अंश अनुकूल विभागमें होनेके कारण दोष रहित हैं। द्विस्वभावत्व चरत्व-स्थिरत्वात्मक है। इसमें द्विस्वभावत्वका अन्तर्गत चरत्वरूप अप्रधान अंश गुण युक्त है। क्योंकि यह चान्द्रअंश अनुकूल विभागमें है। स्थिरत्व रूप अप्रधान अंश दूषित हैं। क्योंकि यह सौर अंश विपरीत विभागमें है। चरत्वके गुणोंसे स्थिरत्वके दोष, स्थिरत्वके दोषोंसे चरत्वके गुण सुन्दोपसुन्द न्यायसे यहां प्रभाव हीन हैं। इसलिए यह राशि अत्यन्त गुण युक्त है। इसलिए इसका स्वामी अत्यन्त शुभ ग्रह बृहस्पति सिद्ध हुआ। वृष चान्द्रविभागमें सौम्य स्थिर राशि है। इसमें सौम्यत्वरूप चान्द्र प्रधानअंश अनुकूल विभागमें होनेसे गुण युक्त है और स्थिर स्वरूप अप्रधान सौर अंश विपरीतविभागमें होनेसे दूषित है। इसलिए यह मीनसे कुछ कम गुण वाली राशि है। इसलिए इसका स्वामी अत्यन्त शुभ बृहस्पतिसे कुछ कम शुभ शुक्र सिद्ध हुआ।

सूर्यका सिंहका आधिपत्य और चन्द्रमाका कर्कका आधिपत्य कालिदासने "पञ्चाननाख्यो हि यथेभ चक्रे"

इत्यादि पद्योंके द्वारा प्रकृति विचारसे स्वयं निरूपित किया है। अर्थ-सहित ये पद्य सं० २००१ के 'हेमन्ताङ्क'में लिख दिये हैं। इनके संकेतके आधारपर यह प्रकृतिविचारानुसारिणी ताराग्रहोंके राश्यधिपत्य की उपपत्ति लिखी जा रही है।

धनुः सौर-विभागमें उग्र द्विस्वभाव राशि है। इसमें उग्रत्वरूप प्रधान सौरअंश अनुकूल विभागमें होनेसे गुण युक्त अर्थात् शुभ फल देने वाला है। द्विस्वभावत्व चरत्व-स्थिरत्वात्मक है। इसलिए द्विस्वभावत्वके अन्तर्गत चरत्वरूप अप्रधानअंश विपरीत विभागमें होनेके कारण दूषित है। स्थिरत्वरूप अप्रधान अंश अनुकूल विभागमें होनेके कारण गुण युक्त है। चरत्वके दोषोंसे स्थिरत्व और स्थिरत्वके गुणोंसे चरत्व सुन्दोपसुन्द-न्यायसे प्रभावहीन हैं। इसलिए यह राशि दोषांश रहित होनेसे अत्यन्त गुण वाली हैं। अत एव इसका स्वामी अत्यन्त शुभ ग्रह बृहस्पति सिद्ध हुआ।

तुला सौर-विभागमें उग्र चर राशि है। इसमें क्रूरत्व रूप सौर अंश अनुकूल विभागमें होनेसे गुण युक्त हैं। चरत्वरूप अप्रधान चान्द्र अंश विपरीत विभागमें होनेसे दूषित है। इसलिए यह राशि धनुःसे कम गुण वाली है। इसलिए इसका स्वामी अत्यन्त शुभ बृहस्पतिसे कुछ कम शुभ शुक्र सिद्ध हुआ।

मकर सौरविभागमें शुभराशि है। इसमें सौम्यत्वरूप प्रधान चान्द्र अंश विपरीत विभागमें होने से दूषित है। स्थिरत्व सौर अप्रधान अंश भी इसी प्रकार दूषित है। इसलिए यह राशि अत्यन्त दूषित है। अतएव इसका स्वामी अत्यन्त पाप ग्रह शनि सिद्ध हुआ।

वृश्चिक सौर विभागमें सौम्य स्थिर राशि है। इसमें सौम्यत्वरूप प्रधान चान्द्र—अंश विपरीत विभागमें होनेसे दूषित है। स्थिरत्वरूप अप्रधान सौर अंश अनुकूल विभागमें होनेसे गुणयुक्त है। इसलिये यह राशि मकरसे कुछ कम दूषित है। अतएव इसका स्वामी शनिसे कुछ कम पापग्रह मङ्गल सिद्ध हुआ।

कन्या सौर विभागमें सौम्य द्विस्वभाव राशि है। इसके चान्द्र अंश सूर्य राशि सिंहके अत्यन्त सामीप्यके कारण "विषजातो यथा कीटो न विषेण प्रबाध्यते तद्वत् प्रकृतयो मर्त्यं शक्नुवन्ति न बाधितुम्" इस नियम के अनुसार अधिक दूषित नहीं है। इसी प्रकार चान्द्र विभागमें क्रूर द्विस्वभाव राशि मिथुनके सौर अंश चन्द्र राशि कर्कके अति सामीप्यके कारण अधिक दूषित नहीं है। यह श्लोक भावप्रकाश नामक वैद्यकके प्रसिद्ध ग्रन्थमें हैं इसकी व्याख्यामें ग्रन्थ कारने लिखा है कि 'अत्रेषदर्थेनञ्' इसलिए "विष-कीट भी विषसे कुछ पीडित होता है" ऐसा अभिप्राय है। जिस प्रकार विष-कीट विषसे कुछ दुःखी होता है उसी प्रकार ये राशियां भी कुछ दूषित होती हैं। अतएव इनका स्वामी शुक्रसे न्यून शुभ पापग्रहके संयोगसे पाप होने वाला ग्रह बुध सिद्ध हुआ।

इस लेखके सार रूप-स्वनिर्मित श्लोक—

विश्वेश्वरं नमस्कृत्य स्वभावस्य विचारतः।
निर्णयो राशिनाथानामिह युक्त्या निरूप्यते ॥१॥

अर्थः— यहां जगदीश्वरको प्रणाम कर प्रकृति विचारसे राशि स्वामियोंकी उपपत्ति निरूपित की जा रही है ॥१॥

उग्रत्व— स्थिरत्व यहां सौर अंश माने गये हैं। उग्रत्व प्रधान सौर अंश और स्थिरत्व अप्रधान सौर अंश हैं ॥२॥

सौम्यत्व— चरत्व यहां चान्द्र अंश माने गये हैं। सौम्यत्व प्रधान चान्द्र अंश और चरत्व अप्रधान चान्द्र अंश हैं ॥३॥

जो अंश प्रतिकूल सौर या चान्द्र विभागमें है वह दूषित जानना चाहिए। उस अंश वाली राशिका स्वामी पापग्रह है ॥४॥

जोअंश अनुकूल सौर या चान्द्र विभागमें है, वह गुणयुक्त जानना चाहिये। उस अंश वाली राशिका स्वामी शुभग्रह है ॥५॥

यदि प्रधान अंशका अप्रधान अंशासे विरोध हो तो वहां कुछ न्यून प्रधान अंश जानना चाहिये ॥६॥

जो राशि कुछ कम दूषित है उसका स्वामी कुछ कम दोषवाला पापग्रह है ॥७॥

जो राशि कुछ कम गुण वाली है, कुछ न्यूनता वाला शुभ ग्रह उसका स्वामी है ॥८॥

अत्यन्त दूषित राशिका स्वामी अत्यन्त दोष वाला पापग्रह जनना चाहिये। अत्यन्त गुण वाली राशिका स्वामी पूर्ण शुभफल देने वाला शुभग्रह जानना चाहिए ॥९॥

जो दो राशियां प्रतिकूल विभागमें होने पर भी सूर्य-चन्द्रमाकी राशियोंके समीपमें हैं वे विषकृमि न्यायसे किंचिन्मात्र ही दूषित हैं ॥१०॥

किञ्चिन्मात्र दूषित होनेसे उनका स्वामी वह ग्रह है, जो क्रूरसंसर्गसे दूषित होता है, अर्थात् क्रूर होता है ॥११॥

यहां विचार्यमाण कालिदास वृद्ध यवनेश्वरका सिद्धान्त जो पूर्व निरूपित किया गया है मूल रूप जानना चाहिये ॥१२॥

इतिहासकी आवश्यकता

[लेखक—श्री पं० बलजिन्नाथ जी शास्त्री B. A.]



वैदिक-कालमें भारतवर्षमें इतिहासको भी ऋग्वेद आदि विद्याओंमें गिना जाता था। इतिहासको एक उच्चस्थान प्राप्त था। परन्तु अर्वाचीन कालमें जबकि वैदिक भारतकी समस्त विद्याएं उन्नतिके चरमशिखर पर पहुँच गईं, इतिहास कुछ पीछे अवश्य रह गया। इतिहासकी सामग्री उस समय भी पर्याप्त मात्रामें विद्यमान थी, परन्तु जिस औत्सुक्यसे वेद, दर्शन, व्याकरण धर्मशास्त्र ज्योतिष आदि विद्याओंका पठन पाठन होता था उस औत्सुक्यसे इतिहासका प्रचार नहीं किया गया। इस अवहेलनाका घोर दृढ परिणाम वह निकला जिसको हम अब भी झेल रहे हैं। यदि इतिहासका हममें पर्याप्त प्रचार होता तो जो प्रमाद हमने एक बार किया वह हम पुनः दुहराते नहीं। यवनोंने सिकन्दर महान्के आक्रमणका वर्णन किया है। तदनुसार हिन्दुकुश पर्वतसे इस पार होनेके अनन्तर भारतवर्षके कई राजा उसके मित्र बने और उनकी सहायतासे उसने मध्य पंजाबके राजा पौरवको परास्त कर लिया। फिर एक-एक करके अनेक शक्तिशाली राजाओंके साथ घोर युद्धोंको बड़ी कठिनाईसे जीतता हुआ वह शतद्रु (सतलज) नदी तक पहुंचा। उसके अनन्तर दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर क्रमशः अनेक हिन्दु राज्योंको जीतता हुआ वह पश्चिम समुद्र (अरब सागर)के तट पर पहुंच गया। उस समय यदि भारतमें एक संयुक्तशासन होता, अथवा यदि कमसे कम विदेशीय राजाका सामना करनेके लिए सभी राज्य एक हो जाते तो सिकन्दर सुलेमान पर्वतसे इस ओर दृष्टि भी नहीं डाल सकता। कुछ ही वर्ष अनन्तर सिकन्दरके उत्तराधिकारी सेल्यूकसने भारत पर पुनः आक्रमण किया, परन्तु उस समय समस्त भारत चन्द्रगुप्त मौर्यके एकच्छत्र शासनका सुख भोग रहा था। अतः सेल्यूकस परास्त हो गया और अफगानिस्तानका अधिकांश प्रदेश मौर्यसाम्राज्यमें मिलाया गया। इन दो घटनाओंको तुलनात्मक ऐतिहासिक रूपमें लिखकर इनका प्रचार भारतमें नहीं हुआ और फल उसका यह निकला कि भारतीय एकत्वके महत्त्वको समझे ही नहीं। और

अशोकके अनन्तर साम्राज्यके पुनः खण्ड हो गए। इसके अनन्तर पुनः भारत एक न हो सका और नाहीं इसे पुनः एक बनानेका प्रयत्न ही हमने किया। परिणाम यह हुआ कि पुनः शक कुशान, यवन और हूण जातिके लोग भारत पर आक्रमण करने लगे। दुष्परिणाम अधिकाधिक वृद्धि करते गए। और भारतके जनसाधारणमें इतिहासका कोई प्रचार नहीं हुआ। पुनः सिन्धु देश पर मुसलमानोंका आक्रमण हुआ। मुसलमानोंका व्यवहार भारतने देखा, पर इतिहास-बद्ध करके इसका प्रचार भारत ने नहीं किया। शीघ्र ही महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरीके आक्रमण हुए और भारतवर्ष अपनी स्वतन्त्रताको सर्वथा खो बैठा। बाबरके समयमें भारतके महाराणा संग्रामसिंहने राजपुत्रोंको संगठित करनेका प्रयत्न किया, पर सामान्य जनतामें इतिहासके प्रचार द्वारा संगठित होने और विदेशियों का विरोध करनेकी भावनाको अङ्कुरित नहीं किया गया। मुगल-साम्राज्यके अन्त होने पर भारतमें तीन शक्तियोंका उदय हुआ। दक्षिणमें मराठे, राजस्थानमें राजपूत और पंजाबमें सिक्ख उठ खड़े हुए। परन्तु तीनों शक्तियां कभी इकट्ठी न मिलीं, अतः भारतका उत्थान न कर सकीं। कारण यही था कि लोगोंमें ऐतिहासिक दृष्टिकोणसे देखनेका अभ्यास ही नहीं था। ऐतिहासिक दृष्टि तो नष्ट हो चुकी थी। महाराष्ट्रके कुछ वीर इस एकताके महत्त्वको समझ गए थे और उन्होंने सभी महाराष्ट्र राज्योंको कुछ समय तक संगठित बनाकर रखा और दक्षिणमें कुमारी तक, पूर्वमें बंगालकी सीमा तक, पश्चिममें दिल्ली तक, मराठोंकी शक्ति फैल गई। पानीपतके युद्धमें पराजित होनेका भी कारण आन्तरिक पूर्ण एकताका अभाव ही था। फिर भी उस हारके अनन्तर भी यदि वे पुनः उठनेका प्रयत्न करते तो समस्त भारतको पुनः स्वतन्त्र बना सकते थे। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। क्योंकि संगठनकी नींव जिन वीरोंने डाली थी उन वीरोंके मर जाने पर संगठन देर तक ठहर न सका। क्योंकि संगठनके लिए लोगोंमें कोई जोश नहीं था। सामान्य जनतामें यदि संगठनकी वैसी इच्छा होती जैसी नाना फरनवीसके मनमें थी तो कोई भी शक्ति मराठोंको विघटित नहीं कर सकती। लोगोंमें संगठनकी उमंग इतिहासके अध्ययनसे उत्पन्न होती है। परन्तु इतिहासका अध्ययन नहीं हुआ। और फल यह हुआ कि भारतमें आए हुए एक नए तूफानने भारतकी स्वतन्त्रताको बहा लिया। अंग्रेजोंने एक-एक करके समस्त महाराष्ट्र राज्यों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया, कइयोंको तो समूल नष्ट कर दिया। पंजाबमें सिक्ख साम्राज्यको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और राजपूतों पर भी अपना प्रभुत्व जमा लिया। इस प्रकारसे समस्त भारत पराधीन हो गया और अब भी पराधीन ही है। यह इतिहासकी अवहेलनाका सारा दुष्परिणाम है। इस समय भी जो स्वातंत्र्यकी अभिलाषा भारतीयों में प्रबल हो गई है और समस्त हिन्दु भारतवर्षकी अखण्डताकी रक्षाके लिए कटिबद्ध हो गए हैं, तो यह इतिहासके ही अध्ययनका फल है। अतः इतिहासका भली प्रकारसे खूब प्रचार होना परम आवश्यक है।

एक भावपूर्ण कहानी—

मन्दिरका देवता

[लेखक – श्रीराम शर्मा 'राम']

एक दिन एकाएक ही आनन्दीका पति घरसे कहीं दूर — बहुत दूर चला गया। जाते समय वह केवल इतना ही कह गया 'मैं एक विशेष कार्यसे बाहर जा रहा हूँ। देरमें भी आ सकता हूं और जल्दी भी।'

आनन्दीने अपने पतिके उन सन्दिग्ध वाक्यों को सुन, अपने मनको सन्तोष तो नहीं दिया, परन्तु उस समय उसने अवरोह का भाव भी प्रदर्शित नहीं किया। उसने पतिको सादर सानुमोदित हो विदा कर दिया।

लेकिन उसका पति कितनी दूर गया, कब तकके लिये गया, एक-एक दिन कर, उसने महीना क्या, पूरा एक वर्ष पार कर दिया, तो आनन्दीके हृदय में कोलाहल और आत्म-पीड़ाका भाव जागृत हो गया। उसे दिन और रातका समूचा पहर पहाड़ दिखाई देने लगा। किसी प्रकार दिन कटता तो रातका वह काला समूह भयानक और विकराल-सा जान पड़ता। नित्य ही उसे रातके पहरमें पतिकी स्मृतियों, उसकी बातों और आनन्दीसे उसका जिस प्रकार निष्कपट व्यवहार होता, वह अनायास ही याद आ जाता। यही कारण था कि आनन्दीको केवल एक भय अपने मानसमें दिखायी देता था और वह यह कि उसका पति कहीं किसी आपदामें तो नहीं फंस गया है....वह जरूर कोई कठिन बात कर बैठा है....उसे जीवनकी कठिनताओं और व्याघातोंको ही सहनेका अभ्यास पड़ गया है....

यों आनन्दीके मनमें अपने पतिके लिये विद्रोहका भाव भी उठता और सम्मान भी। दिनमें वह स्त्रियोंसे पुरुषकी, संसारकी और मनुष्यसे सम्बन्धित कठिनाइयोंकी जितनी भी दन्त-कथायें सुनती; उन्हींको वह रातमें छायाकी तरह अपनी आंखोंके सामने देखती। वह भयसे आविर्भूत हो शंका करती कि उसका पति किसी लम्बी मंजिलको तय करता हुआ घरकी ओर आ रहा है और वह पहाड़ों, बनों और घने जंगलोंको पार कर रहा है कि तभी किसी अजगर... शेर, चीता या भालू ने उसके पति पर प्रहार किया है। वह भयानक शेर....अजगर....उसका पति....और यह देख आनन्दीका मन एकाएक चीख उठा है। वह रौरव नादसे परिव्याप्त हो दहल गया है और धक-धक कर उसकी छातीको वेगसे धड़कानेमें समर्थ हो सका है। कभी आनन्दी यह भी सोचती कि निश्चय ही किसी काम और अर्थके प्रयोजनसे ही उसका पति इस प्रकार रुका है। लेकिन अब तो वह जरूर आ रहे होंगे और रास्तेमें चोर, डाकू....

कभी कभी आनन्दीके मनमें इस शंकाने भी घर किया कि कहीं बीमार तो नहीं हो गये अथवा यहां आनेके लिये रेलमें चढ़ते हुए पैर फिसल गया हो..हां ऐसे किस्से भी आनन्दी ने अनेक सुन पाये और जाने कैसी शंकाके साथ अपने हृदयके अंधकारमें उतार कर रख लिये।

पड़ोसिनें आती हैं और आनन्दीके पास बैठ उसे समझाती हैं 'इस नारी जीवनका मोल क्या बहिन! गायकी बछियाकी तरह चाहे जिस खूंटेसे बांध दी जाय। इस जीवनका हर्ष क्या, विषाद क्या! इतने दिन तो हुए, तुम्हारा पति नहीं आया दीखता है, उसने नहीं आना चाहा। कहीं दूर गया होगा और वहीं पैसा और सुन्दर नारी पा गया होगा।'

किन्तु आश्चर्य तो यह था कि आनन्दीके मन में अपने पतिके लिये ऐसा दुर्भाव किसी एक दिन भी आकर नहीं समाया। उसे अपनी पड़ोसिनों से यह सुनना भी कभी पसन्द नहीं आया। किन्तु जितने मुंह उतनी बातें। एक दिन उसे इतना भी सुना दिया गया कि 'अरी आनन्दी! तू तो सच, रो-रो कर मर जायगी। ऐसे तो, तू एक दिन भी अपने जीवनका कर्म और सुख नहीं पा सकेगी। पति गया, गया। जाने कहां गया....कहां। जब नहीं आया, आना नहीं चाहा, तो तुझे रोना क्यों! खा-पी और सुख मना। सबकी तरह तू भी अपने जीवनकी साध मना, आनंदी! भला, आदमीका क्या, इसकी जड़ और साख क्या! तेरा पति जीवित होता, तो अब तक न आता क्या!

परन्तु अपने पतिके प्रति इतनी बात सुनकर भी, आनन्दीको कोई किनारा मिल सका, ऐसा उसने अनुभव नहीं किया। वह शांतिसे बैठ जाये और पतिको भूल जाये, ऐसा कुअवसर और कुविचार उसके मनमें एक दिन भी न आया। जाने किस भावनाके आधार पर इतना वह अवश्य जानती है कि उसका पति जीवित है, वह आनन्दीके प्रति उपेक्षित भी नहीं है, वह एकाकी और एकचित्त है।

कदाचित् इसी लिये आनन्दी नित्य ही मंदिर में जाती और उस जगत्के देवताके चरणोंमें धूप-दीप और फूल-पत्ती चढ़ा कर उसके सामने हाथ जोड़ कर बैठती और नितान्त दीन बन, आंखोंमें आंसू भर प्रार्थना करती—'ऐ, जगत्के देवता! तुम मेरी भावना जानते हो, तुम समझते हो, मेरी इच्छा! वह जहां रहें सुखी रहें.... प्रसन्न!....

और नित्य ही आनंदी देखती कि वह जगत्का देवता उसकी प्रार्थना सुन जैसे मुसकराता, आंखों से हंसता और बिलकुल शुभाकांक्षी हो उस आनंदीको देखने लगता।

अपने घर रातमें चारपाई पर पड़ी हुई आनंदी सोचती कि जब इस घरमें आयी थी, तो इसी जगह पतिके पलंग पर बैठ, जीवनकी जाने कितनी सरस और शुभ घड़ीमें पतिसे वह यह सुन सकी थी—आनंदी, विश्वास और भरोसा करना कि मैं तेरा हूँ...तेरा पुजारी....

उस समय आनंदी अपने पतिकी बातको सुन कर नितान्त गद्गद् हो गयी थी। वह फूली-फूली-सी हो, पतिकी छाती पर मुंह रख बस इतना कह सकी थी—मेरे नाथ...मेरे जीवन!

और आज आनंदी सोचती है कि हाय! वे ऐसे निष्ठुर!...पत्थर!

किन्तु जाने कैसा मन है आनन्दीका कि वह अपने पतिको निष्ठुर और पत्थर कह कर भी उसे स्वीकार नहीं करती। वह नहीं मानती कि उसका पति सभी जैसा पति है। वह तो सबमें अकेला है और अनुपम। वह आनंदीको छोड़ न किसी और नारीको देख सकता है, न स्वीकार कर सकता है।

उसे याद आता कि उसका पति तो बस एक ही लक्ष्य अपने सामने रखता और मानता है। वह उसीको पूजता, वह तो अपने देश और अपनी माताकी पराधीनताको देख कर ही क्षुब्ध और चञ्चल बना रहता है। अब आनन्दीको यह भी याद आता कि उसका पति रातों-रात जागते और अपने देशकी चिन्तामें बैठे बिता देता। वह सोते-सोते भी जाग पड़ता। और हां, ऐसा तो कई बार हुआ कि जब उसका पति सोतेमें ही रो पड़ता और हिचकियां भरने लगता। जब आनन्दी उसे जगाकर और पास बैठकर रोनेका कारण पूछती तो वह तुरन्त कहता—अरी आनंदी! देख तो यह हमारा देश.... कंकाल....खण्डहर! और वह तब आनंदीका हाथ पकड़ कर, मानो पीड़ासे भरकर रोता हुआ कहता—इस देशके बच्चे और माताएं दीन तथा अयाचित हैं आनन्दी। वे भूखे हैं। हाय हाय! उन्हें खाने को नहीं मिलता....वस्त्र भी नहीं।

ऐसे समय जब कि आनन्दी अपने पतिकी उस चिर-अभिलाषा और चिर-क्रदनको याद करती, तो सचमुच वह आत्म-विभोर सी हो, अपने-आपमें लीन हो जाती। वह गद्‌गद् हो जाती और उस समय सचमुच ही अपने स्वार्थकी भावनाको भूल यह बात सोचने लगती—हां, तेरा पति तो लोक-कल्याण और जनता-जनार्दनकी सेवा करनेके लिए गया है, आनन्दी! इसका दुःख क्या....क्षोभ!

और जब पड़ौसकी स्त्रियां उसे बार-बार अभागी और अपमानित हुई नारीके सदृश समझ कर, उसे पति द्वारा तिरस्कृत हुई मानती तो आनन्दी उस समय उनसे तो कुछ नहीं कहती, वह केवल अपने पतिकी एक बात ही अपने सामने देखती और उसी को लक्ष्यकर आत्म-सन्तोषकी भावना अपने आपमें पा लेती। वह उसके पतिकी जैसे चिर मर्यादित और चिर लक्ष्य पर टिकी हुई बात थी, जो यह थी—'आनन्दी हम स्त्री-पुरुषोंका विषय-भोग, वासना इह लोककी स्वार्थ भावना भले ही हो और इन्द्रिय सुख भी हो, पर इसमें जीवन कहां है.... मनुष्यता! यह तो जानवरोंसे भी गया बीता कर्म है आनन्दी! देखो, आनन्द कहां है, जहां कि हमारा यह समाज, देश और इसके स्त्री, बच्चे और वृद्ध स्वेच्छाचारिता के पैरों तले रौंदे जा रहे हैं—निरन्तर कुचले जा रहे हैं वह, उन्हींके प्रति सद्‌भावना और प्रेममें मनुष्यता और मानवताको देखा जा सकता है। तुम अगर जीवन पाना चाहती हो, इसकी कल्पना और सुन्दरता देखना चाहती हो, तो दरिद्रों और अपाहिजोंके चरणोंमें अपने-आपको अर्पित कर दो, आनन्दी! तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा। तुमने जो युग-युग से इस मानवताको पानेकी अर्चना की उसे अब मानव बन कर छोड़ मत दो, इसकी ओर से उपेक्षित और उदासीन मत बन जाओ। तुम समय रहते पीड़ितोंकी पीड़ामें मिलकर उनकी वेदना को बंटा लो और उनका आशीष प्राप्त कर लो—बस, यही है जीवन! यही है मानवकी मानवता और नारीकी महानता!'

पति द्वारा इस प्रकारके अनेक सुने हुए उपदेशों को याद कर अब आनन्दी सोचती है—हां, ठीक तो कहा....सत्य!

परन्तु उसकी तो कठिनाई यह है कि उसके पास नारीका हृदय है, जिसमें ममता, प्रेम और ममत्वका प्रगाढ स्रोत आये दिन उछालें लेता रहता है। उसने तो समस्त विश्वकी ओर से आंखें मूंदकर अपने मानस पर अंकित केवल पतिके चित्रको ही देखना और पूजना अपना कर्तव्य मान लिया है। सोते तो, जागते तो, उसे यही सूझता है। मन्दिरमें जाकर देवताके सामने आरती उतारती है और हाथ जोड़ जब आंख मूंदकर उसकी प्रार्थना करती है, तो तब भी उस पत्थरकी मूर्तिमें उसे पतिकी सूरत ही दिखाई देती है। उसे लगता है कि देवता की प्रस्तर-प्रतिमा हट गयी है और वहां उसका पति आकर खड़ा हो गया है। उस समय सचमुच ही, आनन्दी उल्लसित और हर्षित हो अपनी बहती हुई आंखोंके जलसे उस प्रतिमाके पैरोंको पखार देती है।

किन्तु उस दिन सचमुच ही, देखनेवालोंके लिए नितांत पीड़ा और अचरजका विषय बन गया। उन्हें कदाचित् ही उससे पूर्व वैसा करुण दृश्य देखनेको मिला कि जब हजारों व्यक्तियों द्वारा आनन्दीके पतिका शव उसके द्वार पर लाकर रखा गया। आनन्दीके पतिने अन्त तक भी अपना पता नहीं बताया था। लेकिन जब राजद्रोहके अपराधमें उसे फांसीका दण्ड सुना दिया गया और फांसी लगनेके अवसर पर उससे किसी इच्छाके लिए पूछा गया, तो उसने तब अपने घरका पता बताया और कहा कि उसका शव उसकी पत्नीके पास पहुंचा दिया जाये। सरकारने अपने अभियुक्तकी इस अन्तिम इच्छाको स्वीकार कर लिया। जब फांसी दे दी गयी, तो उस शवको जनताके प्रतिनिधियोंको सौंप दिया और उसके घर भेजनेका प्रबन्ध कर दिया गया।

(शेष पृष्ठ ४६ पर देखिये)

सोलनमें नेताओं तथा सन्त महात्माओंका शुभागमन

[गत ज्येष्ठमासमें शिमला शैल पर बृटिश मन्त्रि-मिशन और राजनैतिक नेताओंका जो त्रिदल सम्मेलन हुआ था, उसमें भाग लेनेके लिए नेतागण शिमला पधारे थे उन सबके दर्शन सोलनकी जनताको सहज ही प्राप्त हो गये। सोलनके राजमार्ग पर नेताओंके नाम पर द्वार आदि बनाकर जनताने स्वागतका समुचित प्रबन्ध किया था। लौटते हुए पहले श्रीमती अरुणा आसफअली और पीछे श्री पं० जवाहरलालजी नेहरू सार्वजनिक सभामें पधारकर कुछ समय सोलनमें ठहरे थे। नेताओंके लौटनेके कुछ दिन पश्चात् ही श्री १०८ मती आनन्दमयी माताजीने सोलनमें पदार्पण किया, आप श्रीगुरुपूर्णिमा ता० १४ जुलाई तक सोलनमें विराजकर जनताको उपकृत करेंगी। माताजीके दर्शनार्थ अनेक सन्त महात्मा और भक्तगण नित्य आ रहे हैं। नीचे हम क्रमशः संक्षिप्त विवरण प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

श्रीमती अरुणा आसफअली—

भारतकी विख्यात क्रांतिकारिणी कांग्रेस नेत्री श्रीमती अरुणाआसफअलीने शिमलासे लौटते हुए यहां सोलनमें पदार्पण किया। आपका स्थानीय गंजके मैदानमें बहुत ही समारोहके साथ जनताने स्वागत किया। आपने देशकी स्वतन्त्रता और उसके लिए आये हुए मन्त्रि-मिशनकी अब तककी प्रगति पर प्रकाश डालते हुए तथा आलोचना करते हुए जनताको हर परिस्थितिका सामना करनेके लिए तैयार और संगठित रहनेका सन्देश दिया।

श्री पण्डित जवाहरलालजी नेहरू—

नवयुवक हृदयसम्राट् राष्ट्रपति श्रीमान् पण्डित जवाहरलालजी नेहरू महोदयने शिमला त्रिदल-सम्मेलनसे दिल्लीके लिए वापिस जाते समय बहुत आग्रह करने पर सोलनमें रुकने और कुछ कहनेका आमन्त्रण स्वीकार किया। जनताने स्थानीय गंजके मैदानमें आपका शानदार स्वागत किया। पण्डितजीने कहा कि—'अब हम देशकी स्वतन्त्रताके द्वारपर खड़े हैं, परन्तु द्वार बन्द हैं, उसे खोलनेके लिए हमें एक और धक्का देनेकी आवश्यकता है। फिर तो हम एक ऐसे राष्ट्रका निर्माण करेंगे जो मानव जीवनके आवश्यक सभी साधनोंसे सम्पन्न होगा और वहां किसीको किसी प्रकारका कष्ट न होगा। अन्तमें आपने जनताको देशकी स्वतन्त्रताके लिए अधिकसे अधिक त्याग करने और संगठित रहने का आदेश दिया। आपके साथ आजाद हिन्दफौज के कैप्टेन श्री शाहनवाज महोदय और आपकी भानजी श्रीचन्द्रलेखा देवी भी पधारीं थीं।

श्रीस्वाध्यायसदनकी ओरसे श्री नेहरूजीको 'श्रीस्वाध्याय'का साहित्याङ्क तथा 'श्रीविश्वविजयपंचांग' भेंट किया गया। पण्डितजीने 'श्रीस्वाध्याय' पत्रकी प्रगति एवं पंचांगको देखकर प्रसन्नता प्रकट की और इसके लिए श्रीस्वाध्याय-सम्पादकको विशेष धन्यवाद दिया।

श्री आनन्दमयी माताजी——

महामहिमामयी विख्यात योगिनी श्री १०८ मती आनन्दमयी माताजीने अनेक विरक्त तथा गृहस्थ भगवद्भक्त साधक साधिकाओंके साथ सोलन में पधारकर यहांकी धराको पवित्र किया है। आप और आपकी भक्तमण्डलीका स्वागत भार बघाटमहीमहेन्द्र श्री १०५ मान् राजासाहब महोदयने लिया है। राज्यकी ओरसे आप लोगोंके ठहरनेके लिए समुचित स्थान और भोजनादिकी व्यवस्था की गई है। आपके साथ युक्तप्रान्तके प्रसिद्ध भगवद्भक्त महात्मा बांध वाले श्री १०८ हरिबाबाजी महाराज भी पधारे हैं—— जिन्होंने गंगाकी बाढ़से प्रतिवर्ष त्रस्त होने वाले सैंकड़ों गांवोंकी रक्षाके लिए एक बहुत बड़ा बांध बंधवाकर जनताका अत्यधिक कल्याण किया है। आपने श्रीस्वाध्यायसदनका निरीक्षण कर पत्र और संस्थाको शुभाशीर्वाद प्रदान किया है। श्री आनन्द

मयी माताजीकी उपस्थितिमें आजकल समागत महात्माओं भगवद्भक्तोंके सदुपदेश तथा ग्रीष्मकालमें बाहरसे आई हुई जनता एवं स्थानीय स्त्री पुरुषों द्वारा भगवन्नामसंकीर्तनामृतकी वर्षासे सोलनका वायुमण्डल बहुत ही पवित्र हो गया है। सोलन पधारनेवाले महात्माओंमें श्री १०८ स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज, श्री १०८ ब्रह्मनिष्ठ योगिराज गुजराती महात्माजी, श्री स्वामी शरणानन्दजी प्रज्ञाचक्षु और गदापुर वाले श्री अवधूतजीका शुभनाम विशेष उल्लेखनीय है। कीर्तन और सत्संगके अवसर पर स्वयं श्री १०५ मान् बघाटनरेश महोदय एवं राजपरिवारके प्रायः सभी सदस्य उपस्थित होते हैं। आस-पासकी जनताका श्री माताजीके दर्शनोंके लिए दिन-रात तांतासा लगा रहता है। यह सोलन की जनताके लिए बहुत ही आनन्द और आत्मकल्याणका अवसर हैं।

श्रीस्वाध्याय-सदनमें श्री माताजीका शुभागमन और सदुपदेश

श्री आनन्दमयी माताजीने श्रीस्वाध्यायसदनमें भी अपने शुभ पदार्पणके द्वारा हमें आनन्दित किया है। आप 'श्रीस्वाध्याय' पत्र तथा श्रीस्वाध्याय-सदनकी अन्य प्रगतियोंको देखकर परम सन्तुष्ट हुईं और इसकी उत्तरोत्तर उन्नतिके लिए शुभकामना प्रकट की। 'श्रीस्वाध्याय'में प्रकाशनार्थ प्रश्नोत्तरके रूपमें आपने निम्नलिखित सदुपदेश दिया।—

प्रश्न—कोई ऐसा सरलतम उपाय बताइए जिससे मनुष्य अपनी जाति, समाज व देशका कल्याण कर सके ?

उत्तर—मनुष्यको सर्वप्रथम आत्म-कल्याणकी ओर अभिमुख होना चाहिए। जब तक जीव अपनी उन्नति या कल्याण नहीं कर पाता है तब तक देश की भी सच्ची सेवा कर उसका कल्याण नहीं कर सकता। यह आत्मकल्याण सद्गुरुके द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलनेसे ही होता है। अतः प्रथम आत्मज्ञानी वीतराग सद्गुरु द्वारा दीक्षित होकर उनके द्वारा बताई हुई विधिसे भगवच्चिन्तन करना चाहिये। इसके लिए एकान्तनिष्ठा और अटूट श्रद्धाकी परमावश्यकता होती है। बिना श्रद्धा तथा निष्ठाके आत्मकल्याणका मार्ग उपलब्ध नहीं हो सकता। यद्यपि यह ठीक है कि संसारमें आसक्त मन प्रारम्भमें भगवद्भजनमें नहीं लगता। फिर भी मनुष्यको भगवच्चिन्तन अवश्य करते रहना चाहिये। जैसे खेल कूदके आमोद-मय जीवनमें आसक्त छोटे बच्चेका प्रारम्भमें पढ़नेमें मन नहीं लगता है, फिर भी उसे पढ़ना ही होता है और इस प्रकार पढ़ते-पढ़ते वह विद्योपार्जन कर लेता है, उसी प्रकार भजनमें मनके न लगने पर भी बल पूर्वक ही सही, उसे संसारसे अलग करनेका प्रयत्न और भगवच्चिन्तन तो अवश्य करते रहना चाहिये। इस प्रकार मनुष्य पहले अपना, फिर जाति, समाज और देश का क्रमशः कल्याण करनेमें समर्थ हो सकता है।

प्रश्न—भगवती दुर्गाके नाम पर पशुबलि कहां तक उचित है ?

उत्तर—यद्यपि तन्त्रशास्त्रमें जो बलिविधानका उल्लेख पाया जाता है वह कभी भी निस्सार या निष्प्रयोजन नहीं हो सकता। फिर भी वर्तमान समय में तान्त्रिक प्रक्रियाओं और उसके उद्देश्योंके समझाने वालोंका नितरां अभाव होनेके कारण आज जो आसुरी बुद्धिसे मूक पशुओंकी बलि चढ़ाई जाती है वह अनुचित ही कही जा सकती है। वस्तुतः पशु की बलिसे प्रयोजन पाशविक वृत्तियोंकी बलिसे है न कि मूक पशुओंकी बलिसे। अतः उत्तम तो यही है कि मनुष्य अपनी पाशविक वृत्तियोंको बलिदान कर पहले मनुष्य और फिर मनुष्योंमें भी देवोपम बननेका प्रयत्न करे। तभी उसका सच्चा कल्याण हो सकता है।

एक महात्मा—

श्री माताजीके दर्शनोंके लिये बदरिकाश्रम हिमालय निवासी एक परमभक्त ब्रह्मनिष्ठ योगारूढ गुज-

राती महात्माजीने सोलनमें पदार्पण किया है। आपने श्रीस्वाध्याय-सदनमें पधार कर 'श्रीस्वाध्याय' पत्रको देखकर उसके प्रति अपनी शुभकामना प्रकट की। आपसे यह पूछनेपर कि भक्तिका मार्ग साधारण जन-कल्याणकी दृष्टिसे सरल होते हुये भी बहुत ही कठिन जान पड़ता है, क्या यह मार्ग सर्वथा निरापद हो सकता है? इसके उत्तरमें उक्त महात्माजीने बहुत ही हृदयग्राही उपदेश दिया जो निम्नलिखित है:—

'मनुष्यके आध्यात्मिक कल्याणके लिये योगका मार्ग बहुत ही दुर्गम और अधिकाधिक श्रमसाध्य है। हां, भक्तिका मार्ग सरल है पर साथ ही बहुत विघ्न भी हैं। साधकके साधारण धरातलसे कुछ ऊपर उठते ही वह ज्यों-ज्यों संसारसे दूर भागना चाहता है विकराल माया उसके पीछे पड़ जाती है और उसके सामने मान, यश, रुपया पैसा, स्त्री, सुस्वादु अन्न, उत्तमोत्तम वस्त्र तथा सुन्दर निवास-स्थान आदि पुरस्कार रखकर उसको अपने लक्ष्यसे भ्रष्ट कर इन तुच्छ वस्तुओंमें ही फंसाये रखनेका यत्न करती है। और गृहस्थ जिन्हें इन वस्तुओंकी आवश्यकता है उनसे इनको दूर रखती और दुष्प्राप्य बना देती है। यह बिल्कुल शरीरकी छायाके समान है जो विमुख होने पर पीछे लग जाती और सम्मुख होने पर दूर भागती जाती है। अतः भक्तको सर्वदा अपने लक्ष्यका ध्यान रख सावधान रहना चाहिये। उसे वहां तक पहुंचनेके पहले ही मार्गमें ही उसकी तपस्याकी मजदूरी देकर वापिस करनेके अनेकों यत्न किये जाते हैं। जो अपनी मजदूरीके अनुसार यश मान या क्षणभंगुर सुखोंको ही फल मानकर सन्तुष्ट हो जाते हैं वह वहां तक पहुँच नहीं पाते। वहां तक पहुंचनेके लिए इनकी ओर दृष्टि तक न देकर प्रभुमें अनन्य प्रेम भाव रखना चाहिए। प्रभु भक्तकी बड़ी कठिन परीक्षाएं लेता है और जब तक बीचमें कुछ भी पा जानेसे भक्त सन्तुष्ट रहा करता है तब तक वह उन्हींमें फंसाये रखता है। परन्तु अन्तमें सच्चे भक्तका अनन्य भाव देखकर उसे भक्तको दर्शन देनेके लिए वाध्य होना पड़ता है। इस शुद्ध दर्शनकी तीव्र भूखका होना ही उस तक पहुँचनेका द्वार है। यदि यह भूख अधिकसे अधिक सुन्दर भक्ष्य पूड़ी खीर और मेवा मिश्री आदिसे ही बुझा दी गई और भक्त सन्तुष्ट हो गया तो चलो उसकी इधरसे चिन्ता हट जाती है और फिर वह जगत्प्रभु जगत्के अन्य अपने आवश्यक कामोंमें लग जाता है। जैसे लोकमें माता जब तक बच्चेकी कच्ची भूख होती है तब तक उसे मीठी-मीठी लोरियोंसे और थपकियोंसे सुला देती है। परन्तु जब दूधके लिए बच्चा इतना आतुर हो जाता है कि वह माताको भी अपनी आतुरतासे आतुर कर देता है तब उसे दुग्धामृतका पान करनेका अवसर मिलता है। अतः भक्तोंको प्रभुके दर्शनामृतका पान करनेके लिए अत्यधिक आतुर होनेकी आवश्यकता होती है। अन्यथा वह न्यायी ईश्वर किसी की भी मजदूरी कब रख सकता है। जितनी भी मजदूरी होगी भक्तको उसकी मनचाही धन, मान, यशादि वस्तुएं देकर उऋण हो जायगा। इसलिए अपने लक्ष्यका सर्वदा ध्यान रखना चाहिए।

———

सर्वान् परित्यजेदर्थान् स्वाध्यायस्य विरोधिनः।
यथातथाध्यापयँस्तु सा ह्यस्य कृतकृत्यता ॥ (मनुः)

"वेदस्वाध्यायीका यह आवश्यक कर्तव्य है कि, वह उन सब आर्थिक सहयोगों (एवं सहयोगियोंका भी) परित्याग कर दे, जो अर्थसहयोग, एवं अर्थसहयोग देने वाले इसके स्वाध्याय कर्म्ममें विघ्न डालने वाले हैं। ऐसे स्वाध्यायविरोधी सहयोगकी अपेक्षा दुख-सुख पा कर जैसे बने तैसे अपनी स्वाध्यायनिष्ठा सुरक्षित रखना ही इसके लिए श्रेयःपन्था है, और यही है इसके जीवनकी कृतकृत्यता"।

ज्यौतिषशास्त्रके एक सफल साधक—

श्री मुकुन्द दैवज्ञ पर्वतीय

[लेखक—श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य सम्पादक 'विक्रम']

[श्रद्धेय व्यासजी यहां जिन दैवज्ञकुलमूर्द्धन्य विद्वान्‌का परिचय दे रहे हैं—उनसे यद्यपि हमारा साक्षात्कार नहीं हुआ, तथापि हमने उनके कुछ मुद्रित ग्रन्थ अवश्य देखे हैं और कई सज्जनोंसे प्रशंसा भी सुनी है। खेद है कि उक्त पंडितजीकी अथाह ग्रन्थ सम्पत्ति अभी अमुद्रित ही पड़ी है और हममेंसे अधिकांश व्यक्ति अभी इस महान् वैज्ञानिक एकान्त साधककी साधनासे भी अपरिचित ही हैं। देशके शिक्षा-प्रेमी शासकों एवं धनी मानी सज्जनों का कर्तव्य है कि वे पण्डितजीके ग्रन्थोंको प्रकाशित करवाकर अपने कर्तव्यका पालन करें। जहां इस महान् तपस्वी ने अपना अमूल्य जीवन लगाकर निष्कामभावसे एकान्त-साधना द्वारा भारतीय ज्योतिर्विज्ञानको २५ तीस सहस्र श्लोकात्मक नवीन साहित्य प्रदान किया है, वहां हमारा क्या इतना भी कर्तव्य नहीं है कि उस साहित्यको प्रकाशित कराके हम अपने विज्ञानका गौरव बढ़ा सकें ? साथ ही हम देवप्रयागके सुप्रसिद्ध सहृदय विद्वान् और उक्त पण्डितजी के प्रधान शिष्य श्री पं० चक्रधरजी जोशीसे भी निवेदन करेंगे कि वे अपने गुरुदेवकी ग्रन्थराशिको प्रकाशित कराने की शीघ्र ही सुव्यवस्था करें। वे एक बार इस ओर कटिबद्ध हो जावें तो हमें आशा है कि इस विषयमें अन्यान्य सहृदय सज्जनोंका सहयोग भी उन्हें अवश्य प्राप्त होगा। —सम्पादक]

श्री मुकुन्द दैवज्ञ महोदय



देवप्रयाग (बदरिकाश्रम)

निः स्वार्थ साहित्य सेवामें अपने जीवनका विपुल-भाग समर्पित कर देनेवाले व्यक्ति-विशेष विरल ही होते हैं, उनका जन्म विशेष-हेतुकी परिपूर्तिके लिए ही होता है। ज्योतिःशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है; जिसकी फल-निष्पत्तिके लाभवश तो अनेक इसमें प्रवृत्ति रखते हैं, परंतु केवल खगोल और गणितके शास्त्रीय ज्ञानमें अवगाहन कर आनन्द-निमग्न बनने वाले वे ही विद्या-रसिक होते हैं, जिन्हें दुर्गम विज्ञानोदधिके तल-स्पर्श कर रत्नराशि—समुच्चयका दर्शन करना अभीष्ट होता है। समस्त सौर-मण्डलकी सैर करनेकी भावना रखने वाले विद्वान् 'करतल-कलितामलकवत्' गोलको तौल कर वैसा ही सुखानुभव करते हैं; जैसा पुरातन जन (धार्मिक) चारों धामकी यात्रा करके अपनेको कृत-कृत्य समझता है। अथवा आधुनिक जन विश्वपर्यटनका अपनेमें आत्म-विमुग्धताका अनुभव करता है। विभिन्न—साहित्य पर विभिन्न-कालमें विविध प्रवृत्तियोंने परिणाम किये हैं। और नवीनतम रचनाएं हुई हैं। परन्तु वैज्ञानिक-साहित्य पर 'रुक्षता' का आरोप किया जाता है। वह सर्वगम्य या साधारण गम्य नहीं, अतएव केवल तत्त्व-चिन्तनकी भावना रखने वाला सुधीवर्ग ही उसमें रस-स्रोतका अनुसंधान कर अनुरक्त बना रह सकता है। विषयकी गूढता और

गंभीरता ही इसका कारण है। लक्षावधि जग-मगाते नक्षत्र-गणों तेजस्वी-तारक-पुञ्जोंकी मर्म-मंजुलता को जानना उनके रहस्य विज्ञानकी और 'चिन्तक' की प्रवृत्ति रख कर निरीक्षण करना उन नेत्रोंका विषय नहीं, जो निरंतर नीहारिकाओंमें उलझ कर नयनानंद ही लेते रहते हैं। और कल्पनालोकसे उनका सम्बन्ध जोड़ स्वप्न-संसारमें उलझ जाते हैं। किंतु उनकी गति-विधि-स्थिति-उत्पत्ति, और परिणाम कारणोंकी मीमांसाकर निष्कर्ष पर पहुंचनेका जो लोग प्रयत्न करते हैं वे वास्तवमें प्रणम्य हैं। पश्चिम प्रदेशमें साधन-सुविधा, और शासन सहयोगसे विज्ञानोन्नतिमें जन—मनोवृत्ति संभवित है। पर भारत देश पुराकालसे पर्णकी कुटी— एकांत तपः-साधना-पूत निःस्वार्थ ज्ञान-विज्ञान साधनामें जीवनानन्द मानता रहा है। तत्त्वचिन्तक जनोंने इस देशमें साधन हीनावस्थामें भी वे चमत्कार किये हैं कि उनकी साधनाके समक्ष समस्त जगको नतमस्तक होना पड़ा है। आधुनिक शिक्षा एवं तज्जनित वातावरणने अवश्य ही परमुखापेक्षिता और साधन-हीनतामें आत्म-विश्वासके अभावकीभावना उत्पन्न की है, परन्तु आज भी उस युगके संस्कारोंमें समुत्पन्न कतिपय साधक विद्यमान अवश्य हैं— जो आत्मावलंबनानन्द पर निर्भर हो अपना यथा कथञ्चित् उदर निर्वाह मात्र कर बिना किसी फल कामनाके शास्त्र-सिन्धुका अवगाहन कर इस अज्ञानान्धकारके विस्तृत वायुमण्डलमें भी प्रकाश पथका अनुसंधान करते हुए रत्नराशिके थाह पानेके लिए सतत यतमान बने हुए हैं। इस युगके ऐसेही एक महर्घ-रत्नका हम यहां परिचय करवाने जा रहे हैं। वराहमिहिर, भास्कराचार्य, आर्यभट्ट-आदि गणनशास्त्र-विचक्षणोंने जिस प्रकार ज्योतिर्विज्ञानकी सफल साधना की है, और ग्रन्थ-सम्पत्तिसे इस विज्ञानको प्रतिभा-प्रसाद समर्पित किया है। उसी प्रकार देश-कालानुरूप, एकांत निर्जन पर्वत-प्रदेश पर अवस्थित, सौध-शिखरकी मनोहारिणी रविरश्मिस्नात-सुषमाको निहारता हुआ, देवप्रयागकी देवोपम-भूमिके निकट-वर्ति उत्तुंग-अभ्रंलिहाग्रा 'दशरथ पर्वत' की पर्ण-कुटीमें एक दुर्बल-देह किन्तु सबल आत्मा, स्वार्थसाधनकी परिधिसे विलग हो निरंतर शास्त्रावगाहनमें निरत रहता है। ज्योतिःशास्त्र, जिसका एक ग्रह भी जब स्मृतिका विषय बन जाये तो सम्पत्तिका संग्रह सुलभ हो जाता है। शनिदेवका आतंक कृपणकी कुञ्जीको भी कमरसे शिथिल करानेकी क्षमता रख सकता है। (क्योंकि वह 'लोह'का स्वामि है) पर जिसकी आराधनामें नवों-ग्रह, अपनी-गति विधिका सूक्ष्मतम विवरण लिए निरंतर उपस्थित रहते हों, और इशारे पर सारे खगोलका सहज संचार कर सकते हों, वह यदि सम्पत्ति साधनासे वंचित बना रहे, और उपेक्षित जैसा जीवन व्यतीत करे तो उसका यह निःस्वार्थ तप है, और तीव्र-साधनाकी सिद्धि ही है। ज्योतिर्विदांवरिष्ठ मुकुन्दजी उसी पर्वतीय उपत्यकामें अधिवसित एक छोटेसे असंस्कृत-ग्राम 'खण्डग्राम' के महान् संस्कृति साधक पुरुष हैं, निकटवर्ति देवप्रयाग और ऋषिकेशमें अपना अध्ययनावसर पूर्णकर वे आजकल दशरथ-पर्वत पर ज्ञान सुरसरिकी विमलधारा प्रवाहित कर रहे हैं। विज्ञापन जगसे अत्यंत दूर अपरिचित यह साधक जनता ही नहीं अपने विषयके विद्वद्वर्गसे भी अपरिचित बना रहता है। 'चिन्दी' पाकर बजाजखाना खोल देने वाले, बिना पूंजीके सम्पन्न (?) व्यापारीके सम्पर्कसे सुदूर यह विद्वान् आज ज्योतिर्विज्ञानमें कितना श्रम और साहित्य-प्रदान कर चुका है उसे बहुत ही कम या यों कहिए कि लोग नहीं ही जानते हैं।

एक दिन सहसा एक ग्रामीण-वसनधारी स्मित-विमल-मण्डल वाले पर्वतीय-प्रथा-प्रथित पुरुषको अपने घरके सामने तांगेसे उतरते देखा, और साथमें शीतकालीन यात्रीके बिस्तरेकी भांति गहरी-वजनी-गठरी साथमें।

जो सज्जन इनके साथमें थे वे मेरे परिचित-प्रोफेसर थे, अन्दर आकर उन्होंने उक्त समागत सज्जनका परिचय दिया तो मैं क्षण भर उस बिपुल

साधनाके भारसे विनम्र, सादगी लिए हुए, सौजन्य मूर्तिको देखकर विस्मित सा रह गया। पंडित मुकुन्द जी ने विमलहास्य-धाराके साथ सरलतापूर्वक मेरे प्रति अपने आंतरिक सद्भावोंका प्रकटीकरण करते हुए साथमें लाई हुई गठरीको खोलना प्रारम्भ किया, देखता हूँ कि सैंकड़ों नहीं, हजारों-पृष्ठ मौक्तिकपंक्तिकी भांति लिखित है। महाभारतकी भांति कोई विशाल ग्रन्थ-राशिका पुलिन्दा है, पर जानते देरी न लगी कि यह महान्-श्रम इन्हीं पंडित जीकी रचनाका है। इस युगमें इस भांति कौन बिना लोभ-लाभकी आशा-विश्वास लिए यह गहन कार्य-भार वहन करनेका साहस करेगा? परन्तु वास्तवमें मेरे तो आश्चर्यका पारावार ही नहीं रहा कि ज्योतिष जैसे उपेक्षित और रुक्ष कहे माने जाने वाले विषय पर यह तपस्वी इतना महत्त्वपूर्ण समय और त्यागमय श्रम समर्पित कर चुका है।

ज्योतिष-शास्त्रके अनेक आचार्य, अनेक मत, विधान, और पद्धतियां हैं त्रिस्कंधमें विभाजित। और अनेक मतान्तरोंमें विभक्त इस शास्त्रका समीकरण सामान्य विषय नहीं। नवीन और पुरातनोंके बीचकी खन्दक इन्हीं कारणोंसे विभिन्न दिशाओंमें विभक्तीकरण किए हुये है। श्री० पंडित मुकुन्द जी की अपनी रचनाओं की यही विशेषता है कि सागर-मन्थन कर उन्होंने अनेकत्वमें एकता लानेका दुर्धर्ष और भीष्मश्रम किया है।

पंडितजी की पद्धतिसे और निर्विकृत-विचार-परम्परासे भी चहे तो किसीको मतभेद हो जाए, पर उनके रचना-पाटव, और अगाध-श्रमसे प्रत्येकको उनके प्रति हार्दिक-श्रद्धावनत होना ही पड़ेगा। अनेक सहस्र श्लोकोंकी रचनामें जो साहित्यिक सामर्थ्य, और महती-प्रासादिक प्रतिभाकी देन है, उसमें बृहत्संहिताकारके बाद उपलब्ध ज्योतिःशास्त्रमें पंडित मुकुन्दजीका ही द्वितीयस्थान हो सकता है। ज्योतिषके चतुर्मुखी ज्ञानके साथ साहित्य व्याकरणका समन्वय वास्तवमें सुवर्णमें सुगन्धकी भांति ही है, इस पर भी निर्विकार सरलता और निःस्वार्थ साधना, शीलता तो निःसंदेह हिमालयवासी पंडितजीके हिम-मुकुटवत् उत्तुंग ही है।

निरभिमान-मूर्ति मुकुन्द-दैवज्ञजीने आज तक अनेक ग्रंथोंका प्रणयन किया है, जिनमें कुछेक ही प्रकाशनमें आ सके हैं।

१—दशामंजरी (निर्णय सागर प्रेससे प्रकाशित) २—पंचांग मंजूषा (निर्णयसा०) ३—आर्यासप्तति की आशुबोध टीका (जयपुरकी आचार्यमें स्वीकृत) ४—मुकुन्द-पद्धति (टिहरी नरेश को समर्पित निर्णय सागर प्रेससे प्रकाशित) ५—ज्योतिश्शास्त्र-प्रवेशिका बृहद् होड़ाचक्र (प्रकाशित) तथा ६—ज्योतिषरत्नाकरका एक भाग जो चार सौ पृष्ठोंमें लाहौरसे प्रकाशित हुआ है।

किन्तु यह तो उस रत्नराशिका नगण्य जैसा अंश है। अभी जो प्रकाशनकी प्रतिक्षामें विस्तरोंकी शोभा बढा रहा है, वह साहित्य विशाल और पण्डित जीकी वास्तविक प्रतिभाका प्रदर्शक है। ६०० श्लोकों की "बालबोध दीपिका" (जो ३०० पृष्ठोंमें लिखित रूपमें है) इसी भांति 'आयुर्दाय' के लिए सभी मतों का दोहनकर एक प्रामाणिक वस्तु एक स्थल पर संचित कर देने वाला 'आयुर्निर्णय ग्रन्थ' ६००श्लोकों में निर्मित हो गया है, सुरक्षित है। पत्रिकाओंमें अष्टवर्गोंकी योजना तो प्रायः होती है, किन्तु उनका उचित महत्त्व न जाननेके कारण रेखाचित्रोंके सौन्दर्य समन्वित कुण्डलियोंको विनोदसे देखा जाता है। परन्तु पण्डितजीने उस पर भी ४३४ पृष्ठोंके एक बृहत् निबन्धकी रचना कर रक्खी है। दिनचर्या आदि विषयक सुन्दर चर्चाकी खोजकर बहुत नवीनता प्रदर्शक ग्रन्थ 'जातकभूषण' भी ३५० श्लोकोंमें अपने ढंगका स्वतन्त्र और मननीय हो गया है।

इसी प्रकार एक सहस्र श्लोकोंमें "बृहज्ज्योतिष-शास्त्र-प्रवेश" नामक ग्रन्थ इस शास्त्रकी नवीन पुरातन विभिन्न पद्धतियोंका एक समीकरण संग्रह है, जो

अपने ... तीन मासका दैनिक ...

...जीने सुन्दर... निर्णय

प्रस्तुत किया है।

१—मकरन्दतति (पृष्ठ ७०)
२—पोषक संग्रह (श्लोक ३००)
३—बृहत् मुकुन्दपद्धति (श्लोक १२६)
४—व्यापाररत्न (श्लोक १०००)
५—पद्धतिकल्पवल्ली (श्लोक ६५)
६—ज्योतिषरत्नाकर (श्लोक १२००० पृष्ठ ४००० जो आठ भागोंमें विभक्त है इसका केवल एक भाग मुद्रित हुआ है)

इस 'रत्नाकर' पुस्तकके ४००० पृष्ठोंके साथ ही पण्डितजी जिस दूसरी मूल्यवान् कृतिको अपने साथ लिए उज्जैन आये थे, जो १७२३ पृष्ठों और ५५०० श्लोकोंमें निर्मित 'ज्योतिस्तत्व' नामक महान् ग्रन्थ था, जिसमें ज्योतिश्शास्त्रके आरम्भिक ज्ञानसे लेकर सभी प्रकारसे संक्षेपमें व्यापकरूपका प्रदर्शन किया जा सका है। इस ग्रन्थमें अधिकांश प्रचलित ग्रन्थोंके मतोंको अपनाकर स्वीय दृष्टिकोणसे प्रदर्शित किया है। ज्योतिषके फल-जिज्ञासुओंके लिए तथा ज्ञान-पिपासुओंके लिए इसका प्रकाशन वास्तवमें एक विशिष्ट बात हो जाएगी। फलादेशका विभाग तो पण्डितजीके व्यापक ज्ञानका प्रतीक ही बन गया है। विभिन्न दृष्टिकोणोंको लक्ष्यमें रखकर जिस प्रकार प्रकट किया है, ... जाती है। वराहमिहिर, जैमिनी, पराशर ... आचार्योंके मतोंका समीकरण करना और तथ्यके रूपमें स्वमतके साथ निर्णयप्रदर्शक पद्धतिसे निरूपित करना पाण्डित्यका ही काम है। एक ही ग्रन्थमें जातक ताजिक, फल-निष्पत्ति और प्रश्न मुहूर्तादि विविध प्रकारोंका सामञ्जस्य ज्योतिर्विज्ञान रसिकोंके लिए निःसन्देह बहुमूल्य कार्य हैं। पण्डितजीने २५-३० हजार श्लोकोंमें ज्योतिषकी सर्वाङ्गीण शास्त्र सेवा की है और वह भी निष्पृहताके साथ ही। अतएव ज्योतिर्विज्ञानानुरागियोंके लिए तो वे एक साधक तपस्वी ही हैं। हिमांचलकी छायामें गिरिगह्वरमें आवासकर जो तपोनिष्ठजन योग-साधना द्वारा अपनी और जन-कल्याणकी साधना किया करते थे, उन्हींकी भांति हिमधौत शिखरपर देवप्रयागका यह विमल विद्वान् मुकुन्द दैवज्ञ अपनी साधनामें सिद्धि प्राप्त कर रहा है। भगवद्गीताके "मा फलेषु कदाचन" ही इस विरल विद्वान्की सम्पत्ति है—जो आगे चलकर अनेकों ... इस त्यागी तपस्वीके कर्म द्वारा सम्पन्न बना सकनेमें समर्थ होगी। हम सरल-विनम्र निरभिमान-शान्त-तेजस्वी सज्जन-शिरोमणि विद्वद्रत्न मुकुन्द दैवज्ञ महोदयको और उनकी साधनाको नमस्कार करते हैं।

———

साहित्य-समालोचना



[जिन पुस्तकोंकी दो-दो प्रतियां प्राप्त होंगी उन्हींकी समालोचना 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित हो सकेगी। एक प्रतिका केवल संक्षिप्त परिचय मात्र (नाममूल्यादि) प्राप्ति-स्वीकार रूपमें प्रकाशित होगा। —सम्पादक]

"संस्कृत पाठशालाओंका वर्तमान स्वरूप और उसमें परिवर्तनकी आवश्यकता"—

लेखक तथा प्रकाशक — श्रीमान् पं० वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री, साहित्याचार्य। यह पुस्तिका यू० पी०, पंजाब, विहार प्रभृति प्रान्तोंकी संस्कृत पाठशालाओंका भ्रमण कर उनकी वर्तमान दयनीय स्थिति और उसमें सुधारकी आवश्यकता पर लिखी गई है। संस्कृत पाठशालाओंको आदर्श शिक्षाकेन्द्र बनानेकी यह योजना बहुत ही

साधनाके भारसे विनम्र, सादगी लिए हुए, सौजन्य मूर्तिको देखकर विस्मित सा रह गया। पंडित मक्खन- जी ने विमलहास्य-धुंघट में मूल्य-केवल टिकट व्यय -)। प्राप्तिस्थान—ग्राम-भवानी-छापर—पो० भिंगारी जिला गोरखपुर।

संस्कृतशिक्षासुधारके पन्द्रह रचनात्मक कार्यक्रम— लेखक तथा प्रकाशक— श्रीमान् पं० वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री, साहित्याचार्य। इसमें संस्कृत पाठशालाओंको आदर्श शिक्षाकेन्द्र बनानेके लिए उनके सामने १५ रचनात्मक कार्यक्रम रखे गये हैं। यथा— १. पाठ्यक्रममें परिवर्तन, २. अध्यापनपद्धति में सुधार, ३. समयका समुचित उपयोग, ४. आदर्श वेषभूषा, ५. आदर्श आचार व्यवहार, ६. पाठशालोचित आवश्यक उपकरणोंका प्रबन्ध, ७. दैनिक शिक्षाधर्म, ८. पाक्षिक छात्रपरिषद्, ९. पाक्षिक धर्मप्रचार, १०. वार्षिकोत्सव, ११. आर्थिक स्थितिका सुधार, १२. कठिनाइयोंका निराकरण, १३. सतत निरीक्षण की व्यवस्था, १४. परीक्षामें सुधार, १५. जीविका क्षेत्रोंका विस्तार। यह प्रत्येक पाठशालाके लिए संग्रहणीय पुस्तिका है। मूल्य तथा प्राप्तिस्थान—उपर्युक्त।

संस्कृतपाठशालाओंमें दैनिक धर्मशिक्षाकी आवश्यकता और उसकी योजना— लेखक— तथा प्रकाशक—श्रीमान् पं० वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री, साहित्याचार्य। गत लगभग १ हजार वर्षसे हमारी भारतीय संस्कृति पर विदेशी विधर्मियों द्वारा अनेक आक्रमण होने पर भी उसे हमारी संस्कृत भाषा और उसकी पाठशालाओंने जीवित और सुरक्षित रखा है, यह किसी भी विद्वान् व्यक्तिसे छिपा नहीं है। परन्तु आजकल वर्तमान संस्कृत परीक्षा पाठ्यपद्धतिका अनुसरण करने वाले संस्कृत पाठशाला के अध्यापकों और छात्रोंने 'ब्राह्मणेन निष्कारणः वास्तवमें सुवर्णमें सुगन्धकी भांति ही है, इस पर भी धर्म और संस्कृतिका अध्ययनाध्यापन भुला दिया गया है। अतः पाठशालाओंमें अन्यान्य विषयोंके साथ भारतीय संस्कृतिके अध्ययन और अध्यापनकी यह योजना बहुत ही प्रशंसनीय है। इस योजनाको कार्यान्वित कर पाठशालाएं जाति, समाज और राष्ट्रकी बहुत अंशोंमें सेवा कर सकती हैं। मूल्य पता—उपरोक्त।

कर्मयोग—गीतामन्दिर आगराका पाक्षिक मुखपत्र मूल्य ४) वार्षिक। सम्पादक—श्रीयुत पं० हरिशंकर शर्मा (गीता मन्दिर, आगरा)। कर्मयोग प्रथमवर्ष का चौथा अंक हमारे सामने है। 'कर्मयोग' किसी मतमतान्तर अथवा सम्प्रदाय विशेषका प्रचारक नहीं। यह मानवताके निम्नस्तरको ऊंचा उठानेवाला भारतीय संस्कृतिका अग्रदूत है। उक्त गीता मन्दिरने विश्वमान्य पुस्तक गीताके सारभूत 'कर्मयोग' का सन्देशवाहक इस पत्रको प्रकाशित कर मानवजाति मात्रका कल्याण किया है। लेख उच्चकोटिके और सराहनीय हैं। हिन्दी-संसारके लिए एक ऐसे पत्रकी आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति 'कर्मयोग' ने की है। हम सहयोगीकी सफलताकी हार्दिक कामना करते हैं और आशा करते हैं कि यह हमारे सामाजिक रहन सहन, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक धरातलको उन्नत करेगा।

कविवर श्री बच्चनजीकी दो पुस्तकें 'खैयामकी मधुशाला' और 'बंगालका काल' तथा 'साकोरीका सन्त' 'मुखाकृति-रहस्य' 'मुकुन्दपद्धति' 'पूजाभास्कर' एवं 'श्रीविष्णुमहायज्ञ स्मारक ग्रन्थ' भी हमें प्राप्त हो गये हैं। इनमेंसे नियमानुसार जिनकी दो-दो प्रतियां आई हैं उनकी समालोचना आगामी 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित होगी।

—सम्पादक

...व्रतादि निर्णय

ज्योतिर्विज्ञान परिशिष्टांक

(ग्रीष्मांक सं० २००३ वि०)

(वाणिज्य व्यवसाय तेजी-मन्दी विचार, राशिफल, पर्वव्रत निर्णय, संसारचक्र आदि)

प्रधान सम्पादक—
पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

सहायक सम्पादक—
पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य

ग्राहकोंसे आवश्यक निवेदन

गत दो अङ्कोंमें हमने प्रेमी पाठकोंसे निवेदन किया था कि "आषाढ़के अनन्तर 'श्रीस्वाध्याय' के ज्योतिर्विज्ञान परिशिष्टाङ्कको हम मासिकरूपमें निकालना चाहते हैं" वार्षिक मूल्य ८) रु० पांचसौ ग्राहकोंकी ओरसे पहले प्राप्त होने पर यह कार्य आरम्भ करनेका विचार था। परन्तु अभी तक पूरे १०० ग्राहकोंने भी मासिकका मूल्य हमारे पास नहीं भेजा। कई ग्राहकोंने तो वर्तमान पंचमवर्षका मूल्य समाप्त होने पर आषाढके अनन्तर नये (छठे) वर्षके मूल्यके साथ ही भेजने के लिए लिखा है और कुछ ग्राहकोंने वी० पी० भेजनेकी स्वीकृति दी है। किन्तु, केवल थोड़ेसे ग्राहकोंकी स्वीकृति मात्रसे ही इतना विपुल-व्यय-साध्य कार्य हम आरम्भ करना नहीं चाहते, जिसकी आधार शिला सुदृढ न होने पर दो चार महीने मासिक निकालकर फिर त्रैमासिककी ही शरण लेनी पड़े।

इस 'ग्रीष्माङ्क' के साथ ही वर्तमान पंचम वर्ष समाप्त हो रहा है और पिछले सब ग्राहकोंका मूल्य भी समाप्त है। अतः आशा है कि अब प्रत्येक ग्राहक अधिकसे अधिक सम्मान्य ग्राहक या साधारण ग्राहक बनाकर अपने अग्रिमवर्ष के मूल्यके साथ ही उनका मूल्य भी मनीआर्डर द्वारा यथा शीघ्र कार्यालयमें भिजवाकर अपने इस प्रिय पत्रको पूरा सक्रिय सहयोग देंगे, ताकि छठे वर्षमें यह मासिकरूपमें प्रकाशित हो सके। हम इसके लिए पूर्ण प्रयत्नशील हैं, आवश्यकता है केवल ग्राहकोंके सक्रिय आर्थिक सहयोगकी। गताङ्ककी सूचनानुसार जिन सज्जनोंने ८) रु० मासिक संस्करणके लिए भेजे हैं और हमारी खुर्जा शाखाके द्वारा जो कुछ व्यापारी ग्राहक बने हैं उन सबको बीचके दो मासका परिशिष्टाङ्क (व्यापारिक मासिक रिपोर्ट) प्रतिमास साइक्लोस्टाईल मशीन पर निकालकर भी पं० विशुद्धानन्दजीकी ओरसे निरन्तर भेजी जा रही है।

सब प्रकारका पत्र व्यवहार और वार्षिक मूल्य प्रधान कार्यालय (श्रीस्वाध्यायसदन सोलन, शिमला) के पते पर भेजना चाहिये।

निवेदक—
व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

साधनाके भारसे विनम्र, सादगी लिए हुए, सौजन्य मूर्तिको देखकर विस्मित सा रह गया। पंडित मक्खन जी ने विमलहास्य-युक्त मूल्य-केवल टिकट व्यय -)। प्राप्तिस्थान—ग्राम-भवानी-छापर—पो० भिंगारी जिला गोरखपुर।

संस्कृतशिक्षासुधारके पन्द्रह रचनात्मक कार्यक्रम—

लेखक तथा प्रकाशक— श्रीमान् पं० वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री, साहित्याचार्य। इसमें संस्कृत पाठशालाओंको आदर्श शिक्षाकेन्द्र बनानेके लिए उनके सामने १५ रचनात्मक कार्यक्रम रखे गये हैं। यथा— १. पाठ्यक्रममें परिवर्तन, २. अध्यापनपद्धति में सुधार, ३. समयका समुचित उपयोग, ४. आदर्श वेषभूषा, ५. आदर्श आचार व्यवहार, ६. पाठशालोचित आवश्यक उपकरणोंका प्रबन्ध, ७. दैनिक शिक्षाधर्म, ८. पाक्षिक छात्रपरिषद्, ९. पाक्षिक धर्मप्रचार, १०. वार्षिकोत्सव, ११. आर्थिक स्थितिका सुधार, १२. कठिनाइयोंका निराकरण, १३. सतत निरीक्षण की व्यवस्था, १४. परीक्षामें सुधार, १५. जीविका क्षेत्रोंका विस्तार। यह प्रत्येक पाठशालाके लिए संग्रहणीय पुस्तिका है। मूल्य तथा प्राप्तिस्थान—उपर्युक्त।

संस्कृतपाठशालाओंमें दैनिक धर्मशिक्षाकी आवश्यकता और उसकी योजना— लेखक— तथा प्रकाशक—श्रीमान् पं० वासुदेव द्विवेदी, वेदशास्त्री, साहित्याचार्य। गत लगभग १ हजार वर्षसे हमारी भारतीय संस्कृति पर विदेशी विधर्मियों द्वारा अनेक आक्रमण होने पर भी उसे हमारी संस्कृत भाषा और उसकी पाठशालाओंने जीवित और सुरक्षित रखा है, यह किसी भी विद्वान् व्यक्तिसे छिपा नहीं है। परन्तु आजकल वर्तमान संस्कृत परीक्षा पाठ्यपद्धतिका अनुसरण करने वाले संस्कृत पाठशाला के अध्यापकों और छात्रोंने 'ब्राह्मणेन निष्कारणः वास्तवमें सुवर्णमें सुगन्धकी भांति ही है, इस पर भी धर्म और संस्कृतिका अध्ययनाध्यापन भुला दिया है। अतः पाठशालाओंमें अन्यान्य विषयोंके साथ भारतीय संस्कृतिके अध्ययन और अध्यापनकी यह योजना बहुत ही प्रशंसनीय है। इस योजनाको कार्यान्वित कर पाठशालाएं जाति, समाज और राष्ट्रकी बहुत अंशोंमें सेवा कर सकती हैं। मूल्य पता—उपरोक्त।

कर्मयोग—गीतामन्दिर आगराका पाक्षिक मुखपत्र मूल्य ४) वार्षिक। सम्पादक—श्रीयुत पं० हरिशंकर शर्मा (गीता मन्दिर, आगरा)। कर्मयोग प्रथमवर्ष का चौथा अंक हमारे सामने है। 'कर्मयोग' किसी मतमतान्तर अथवा सम्प्रदाय विशेषका प्रचारक नहीं। यह मानवताके निम्नस्तरको ऊंचा उठानेवाला भारतीय संस्कृतिका अग्रदूत है। उक्त गीता मन्दिरने विश्वमान्य पुस्तक गीताके सारभूत 'कर्मयोग' का सन्देशवाहक इस पत्रको प्रकाशित कर मानवजाति मात्रका कल्याण किया है। लेख उच्चकोटिके और सराहनीय हैं। हिन्दी-संसारके लिए एक ऐसे पत्रकी आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति 'कर्मयोग' ने की है। हम सहयोगीकी सफलताकी हार्दिक कामना करते हैं और आशा करते हैं कि यह हमारे सामाजिक रहन सहन, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक धरातलको उन्नत करेगा।

कविवर श्री बच्चनजीकी दो पुस्तकें 'खैयामकी मधुशाला' और 'बंगालका काल' तथा 'साकोरीका सन्त' 'मुखाकृति-रहस्य' 'मुकुन्दपद्धति' 'पूजाभास्कर' एवं 'श्रीविष्णुमहायज्ञ स्मारक ग्रन्थ' भी हमें प्राप्त हो गये हैं। इनमेंसे नियमानुसार जिनकी दो-दो प्रतियां आई हैं उनकी समालोचना आगामी 'नववर्षाङ्क' में प्रकाशित होगी।

—सम्पादक

... निर्णय

ज्योतिर्विज्ञान परिशिष्टांक

(ग्रीष्मांक सं० २००३ वि०)

(वाणिज्य व्यवसाय तेजी-मन्दी विचार, राशिफल, पर्वव्रत निर्णय, संसारचक्र आदि)

प्रधान सम्पादक—
पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

सहायक सम्पादक—
पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य

ग्राहकोंसे आवश्यक निवेदन

गत दो अङ्कोंमें हमने प्रेमी पाठकोंसे निवेदन किया था कि "आषाढ़के अनन्तर 'श्रीस्वाध्याय' के ज्योतिर्विज्ञान परिशिष्टाङ्कको हम मासिकरूपमें निकालना चाहते हैं" वार्षिक मूल्य ८) रु० पांचसौ ग्राहकोंकी ओरसे पहले प्राप्त होने पर यह कार्य आरम्भ करनेका विचार था। परन्तु अभी तक पूरे १०० ग्राहकोंने भी मासिकका मूल्य हमारे पास नहीं भेजा। कई ग्राहकोंने तो वर्तमान पंचमवर्षका मूल्य समाप्त होने पर आषाढ़के अनन्तर नये (छठे) वर्षके मूल्यके साथ ही भेजने के लिए लिखा है और कुछ ग्राहकोंने वी० पी० भेजनेकी स्वीकृति दी है। किन्तु, केवल थोड़ेसे ग्राहकोंकी स्वीकृति मात्रसे ही इतना विपुल-व्यय-साध्य कार्य हम आरम्भ करना नहीं चाहते, जिसकी आधार शिला सुदृढ न होने पर दो चार महीने मासिक निकालकर फिर त्रैमासिककी ही शरण लेनी पड़े।

इस 'ग्रीष्माङ्क' के साथ ही वर्तमान पंचम वर्ष समाप्त हो रहा है और पिछले सब ग्राहकोंका मूल्य भी समाप्त है। अतः आशा है कि अब प्रत्येक ग्राहक अधिकसे अधिक सम्मान्य ग्राहक या साधारण ग्राहक बनाकर अपने अग्रिमवर्ष के मूल्यके साथ ही उनका मूल्य भी मनीआर्डर द्वारा यथा शीघ्र कार्यालयमें भिजवाकर अपने इस प्रिय पत्रको पूरा सक्रिय सहयोग देंगे, ताकि छठे वर्षमें यह मासिकरूपमें प्रकाशित हो सके। हम इसके लिए पूर्ण प्रयत्नशील हैं, आवश्यकता है केवल ग्राहकोंके सक्रिय आर्थिक सहयोगकी। गताङ्ककी सूचनानुसार जिन सज्जनोंने ८) रु० मासिक संस्करणके लिए भेजे हैं और हमारी खुर्जा शाखाके द्वारा जो कुछ व्यापारी ग्राहक बने हैं उन सबको बीचके दो मासका परिशिष्टाङ्क (व्यापारिक मासिक रिपोर्ट) प्रतिमास साइक्लोस्टाईल मशीन पर निकालकर भी पं० विशुद्धानन्दजीकी ओरसे निरन्तर भेजी जा रही है।

सब प्रकारका पत्र व्यवहार और वार्षिक मूल्य प्रधान कार्यालय (श्रीस्वाध्यायसदन सोलन, शिमला) के पते पर भेजना चाहिये।

निवेदक—
व्यवस्थापक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

साधनाके भारसे विनम्र, सादगी लिए हुए, सौजन्य वास्तवमें
मूर्तिको देखकर विस्मित सा रह गया। पंडि
जी ने विमलहा

...के भविष्य-प्रकाश

सोना, चांदी, रुई, अलसी, ग्वार, मक्की, तारामीरा आदिकी तेजी मंदी

[लेखक—श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

(१) प्रथम सप्ताह ता० ८ से १५ जुलाई तक

इस सप्ताह में ३॥ दिन तेजी ४ दिन मंदी। ता० ८ को चांदी, सोना, रुई खरीदो, १० को डबल खरीदो लाभ हो जायगा। सावधान ता० ८ को खरीदनेके बाद १४ घंटेमें बाजार माफिक न आवे तो डबल बेचो। अलसी, सरसों, गुवार, अरहर, बाजरा, चावल वायदा भाद्रपद आश्विन बेचना ठीक हैं, कालीमिर्च, तारामीरा, मक्की, जुवारके भाव इस हफ्तेमें साधारण तेजी मंदीमें चलेंगे। बारदाना लाख, चमड़ा, जूटकी तेजी रहेगी। बराबर ता० ८ को खरीदो १३ तक लाभ लेकर बेचो। अलसीके भावों में ज्यादा फेर फार होनेके योग हैं, पहिले दो दिन में तेजी, ५ दिन मंदीके होंगे।

(२) द्वितीय सप्ताह ता० १६ से २३ जुलाई तक

इस सप्ताहमें वेस्ट मंदीमें चांदी, सोना, रुई खरीदो। ता० २० नफा मिलेगा चांदीमें ४) सोनेमें ३) रुईमें १०) टकेकी तेजी मंदी होगी, बराबर ता० १६।१७ को खरीद करके २० को डबल बेचो, किन्तु अधिक गिरनेकी सम्भावना नहीं है, घटे भावोंमें डबल खरीदो। बाजरा, गुवार, मक्की, मूंग, चावल की आखरी तेजी होगी। बाजार थम जायेंगे, बेचाण ही लाभकारी रहेगा। बिनौला, मूंगफली, सींगदाना, बारदाना जूटके भावों की विदेशी डिमान्ड अधिक होगी। ता० १८ के बाद तेजी आवेगी, लाख चमड़ा के भाव साधारण टिके रहेंगे।

(३) तृतीय साप्ताह २४ से ३१ जुलाई तक—

इस साप्ताहकी ग्रह चाल इकतरफा मंदी रुख बता रही है। चांदी सोना रुई ता० २४ को बेचो, २६ को डबल खरीदो। ता० ३१ तक डबल लाभ उठानेका मौका है। अलसी, बारदाना, गुवार, बाजरा, मक्की, शींगदानाके भाव प्रायः मंदीकी तरफ रहेंगे। वायदा अगस्त बेचना ठीक है। सींगदाना, कालीमिर्च, धनिया, जीरा, औषधि, तारामीरा इत्यादि मंदीमें आकर थम जायेंगे।

(४) चतुर्थ साप्ताह ता० १ से ८ अगस्त तक

इस साप्ताहके ग्रहयोग प्रारम्भ माससे तेजीकी आशा लगा रहे हैं। ता० १ को १२ से ३ बजे तक मंदीके रियेक्शनमें खरीदो, ता० ३ को डबल बेचो, ता० ५ तक लाभ सामने होगा। ता०६ को फिरसे मंदीमें चांदी खरीदो, रुई, सोना, सम भावों में पड़े रह जायेंगे। अलसी सींगदाना, मक्की, बाजरा गुवार, चावल फिरसे तेजीमें रहेंगे, कहीं २ देशमें वर्षाका अति उपद्रव तथा कहीं देशोंमें अनावृष्टि रहेगी। तेजीकी ताकत कम होना नहीं जानती, मन्दीमें घटे भाव फिरसे कालीमिर्च, तारामीरा, जौ चना, अरहर, बिनौला खरीदना ठीक है। सावधान मंदेमें फंसे मत रह जाना स्टेडी रुख मजबूत गल्लेके ग्रह भारी तेजीमें हैं।

(५) पंचम सप्ताह ता० ८ से १५ अगस्त तक

इस साप्ताहमें चांदी सोना, वेस्ट मंदीमें, रुई तेजीमें रहेगी। तारीख ८ को रुई खरीदो चांदी, सोना बेचो, २। दिन मंदीकी चाल होगी। बाजरा मक्की, जौ, चना, शींगदाना, बिनौला तेज और अलसी, पाट, बारदाना, शेअर बैंक मिल्स वगैरामें मन्दे होंगे। कालीमिर्च, तारामीरा, गुवारका रुख स्टेडी थम जायेंगे। शेयर बाजारोंमें तूफानी तेजी मन्दी होगी, शेयर बेचो।

... निर्णय

(६) छठा साप्ताह १६ से २३ अगस्त तक—

इस साप्ताहमें वर्षा अधिक, तूफानी वायुके कारण उपद्रव, कहीं २ नदियोंमें बाढ़से फसलको हानि होना सम्भव है। चांदी सोना, रुई ता० १६ को खुलते बाजार खरीदो, १६ को डबल बेचो, ता० २१ तक लाभ सामने होगा। बेंकोंके बेचान चालू होनेके योग हैं। ३ दिनकी मंदी मंडियोंके छक्के छुटा देगी, किन्तु १६ को बेचाण करनेके बाद २४ घण्टेकी चाल बाजारकी देखो, लिखे मुताबिक टोन मिले तो सौदा खड़ा रखो वरना ता० २० को खरीदमें हो जाओ। बाजरा, मक्की, जौ शींगदाना, अलसी, सरसों, गुवारके भाव एक प्रखर मंदे जायें। सावधान स्टाक नुकसान देगा।

(७) सातवाँ साप्ताह २४ से ३१ अगस्त तक—

इस साप्ताहमें ग्रहयोगानुसार सब बाजार थम जायेंगे। तेजीकी चाल पुनः अपना असर करेगी। ता० २६ को चांदी सोना रुई खरीदो, ता० ३१ को डबल बेचो। अलसी, सरसों, गुवार, मक्की, जौ, तिलहनके भाव कुछ मंदे जाकर तेजीकी ओर बढ़ेंगे। सावधान घटे भाव खरीदना मत भूलो। कालीमिर्च, तारामीरा, शेयर पुनः तेजीकी तरफ। मिलोंके शेयर खरीदो, लाभ होगा।

(८) आठवां साप्ताह ता० १ से ८ सितम्बर तक

इस साप्ताहमें सिर्फ दो दिन मन्दी ६ दिन तेजीके होंगे। ता० ३१ की बेचाणका चांदी सोना ता० २ को डबल खरीदो। ता० ७ तक मुनाफा देगा। रुईके बाजारमें २०) टकेकी मंदी आकर २५) टके तेजीमें जायगी। सावधान रुईका बेचाण ता० ४ तक पोते कर लेना ही सच्चा व्यापार है। अलसी सरसों आखिरी तेजीमें होगी, बेचान अक्टूबर अच्छा है। मक्की, चावल, बाजरा, तारामीराके भाव थमे रहेंगे।

(९) नवम साप्ताह ता० ६ से १८ सितम्बर तक

इस सप्ताहमें ता० ६ को चांदी सोना खरीदो रुई बेचो, ता० १३ तक लाभ उठाओ, तूफानी मंदी तेजी नजर ... सोनेमें १०) रुईमें १५) टकोंकी तेजी ... सावधान, खुलासा पूरा ध्यानमें नहीं जचा समय पर स्पेशल रुख जवाबी कार्ड भेजकर कार्यालयसे प्राप्त कर लें। बाजरा, मक्की, गुवार, जौ, चना, अलसी, सरसों, तारामीरा, कालीमिर्चके भाव बम्बई रुख नरम होकर तेजीमें जायेंगे बराबर। ता० १२ को खरीदो छः दिनमें लाभ उठाओ।

(१०) दशवां सप्ताह ता० १६से २५ सितम्बर

इस साप्ताहमें एक प्रखर मन्दीका रियेक्शन रहेगा। सिर्फ दो दिन तेजी बादको मन्दी। ता० १६ को चांदी सोना खरीदो, ता० २१ को डबल बेचो। अलसी, रुई, चांदी, सोना इन चारोंमें मन्दीका उल्कापात होगा, डबल बेचो। ता० २१ को सावधान, ता० २३ को चाल बाजारकी पकड़ो। ठीक ४ बजे बेचाणसे कितना नीचा बाजार रहता है, विपरीत चले तो सम्हल जाओ, तारामीरा, कालीमिर्च, बाजरा मक्की, जौ, चावल चना, सरसों इन वस्तुओंका बाजार तेनीमें रहेगा। वायदा अक्टूबर खरीदो, बीचमें नफा मिले तो छोड़ना नहीं।

(११) ग्यारहवां सप्ताह ता० २६ से ५ अक्टूबर तक—

इस सप्ताहमें विदेशोंकी खबरों व देशी राजनैतिक हलचलोंके कारण सर्व वस्तुके भावोंमें मोटी घटा बढ़ी होगी। सावधान, चांदी, सोना, रुई पर विशेष पाबंदी होना पाया जाता है। पहिले तेजी फिर तूफानी मंदी जंचती है। ता० २६ को खरीदो, ता० १ अक्टूबरको डबल बेचो, ता० ५ तक तूफानी तेजी मन्दी होगी, सावधान बेचाणका बाजारसे सामना करो। ता० २ की रातको तेजी रही तो चांस खाली जायगा वरना गोली की तरह ठीक रहेगा। मक्की, ज्वार, गुवार, अलसी, सरसों, चावलके भाव प्रायः मन्दीमें रहेंगे, वायदा नवम्बर बेचो।

———

...निर्णय

११ इ० प्रायवेटमें तेजीकी चमक दिखायगी।

१२ सो० खुलते बाजार चांदी सोना रुई खरीदो।

१३ मं० बढ़ते हुए भावोंमें नफा लेकर सोदा बर कर लो।

१४ बु० बाजार अनिश्चित दो बजे तक तेजी बाद मंदी।

१५ गु० बम्बईमें ५) बढ़ेंगे १०) घटेंगे, नजराना लगाओ।

१६ शु० सवा दो दिनकी चाल छक्के छुड़ा देगी, डबल बेचो।

१७ श० सावधान मंदीमें फंसे मत रह जाना, रोजाना नफा लेते रहो।

१८ इ० प्रायवेटमें दोतरफा पहिले तेजी बाद मंदी।

१९ सो० मंदीका टोन १॥ बजे तक बादको स्टेडी रुख तेजी।

२० मं० बैंकोंका बेचान मंदीकी हवा बांध देगा।

२१ बु० तारोंका रुख दैनिकसे मिलान करें तो खेला खेलो।

२२ गु० ता० १९ को बैंकका ऐलान हो तो २॥ दिनमें २०) की मंदी होगी।

२३ शु० गिरे हुए भाव फिरसे उठेंगे रुकने पर घटे भावोंमें खरीदो।

२४ श० तेजीके योग फिरसे चमकेंगे माल पकड़ लो।

२५ इ० प्रायवेटमें बाजार अच्छी घट बढ़में चलेगा।

२६ सो० चांदी सोनेका रुख स्टेडी मजबूत खरीद चालू करो।

२७ मं० दिशावरोंसे तेजीके तार, दो बजे तेज ४ बजे मंदी।

२८ बु० दो तरफा रुख पहिले तेजी पीछे मंदी गली लगाओ।

२९ गु० ... समझो।

३० शु० तेजीका टोन बराबर १२ से ४ तक रहेगा।

३१ श० नफा लेकर २॥ बजे बेचू हो जानेकी राय है।

सितम्बर

१ इ० प्रायवेटमें अच्छा रियेक्शन मंदीका होगा।

२ सो० दो बजे तक मंदी खतम खरीदो डबल।

३ मं० आजके योग २) तीन टकेकी तेजी बता रहे हैं।

४ बु० ढाई बजे बाद मंदीका असर होगा बेचो।

५ गु० दोतरफा तूफानी घटबढ़ तेजी मंदीकी गली लगाओ।

६ शु० ऊंचे भावों ४॥ बजे बाद बेचने पर २॥ दिनमें लाभ।

७ श० मंदीकी चाल १२ घण्टे तक, खरीदो।

८ इ० प्रायवेटमें तेजी पर तेजी क्या समझे।

९ सो० ग्रह इकतरफा तेजीमें जाना चाहते हैं।

१० मं० घटे भाव खरीदेगा वही नफा उठायगा।

११ बु० तेजीकी ताकत चिम्मन मोती कम नहीं होने देगा।

१२ गु० सिलवर किंगको दूसरी पार्टी मात देगी।

१३ शु० तेजीका टोन दो बजे तक, बादको मंदी, बेचो।

१४ श० मंदीका टोन ३ बजे तक बादको तेजी।

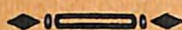
१५ इ० प्रायवेटमें बाजार स्टेडी रुख तेजीमें रहेगा।

१६ सो० खुलते बाजार खरीदो १६ घंटेमें लाभ।

साधनाके भारसे विनम्र, सादगी लि... वास्तवमें ...
मूर्तिको देखकर विस्मित सा रह गया।
जी ने विश्...

...वान मासका दैनिक भविष्य-प्रकाश

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य]



जुलाई

ता०	वार	दैनिक विचार
८	सो०	१२ से २ बजे तक चांदी सोना रुई खरीदो।
९	मं०	रात्रिके ७ बजे तक नफा लेकर बेचो।
१०	बु०	तेजी रुककर मंदीको मौका देगी।
११	गु०	ज्यादा घट बढ़ तेजी मंदीकी गली लगाओ।
१२	शु०	तेजीका भड़का घटे भाव खरीदो।
१३	श०	खास चांस दो पहर बाद मंदीका रियेक्शन बेचो।
१४	इ०	प्राइवेटमें हलचल पगर पर नफा लो।
१५	सो०	मंदीकी चाल दो बजे तक बाद तेजी का काम करो।
१६	मं०	खास तेजीका भड़का ऊंचे भावोमें बेचो।
१७	बु०	छै घण्टेमें बढिया चांस पहिले खरीदो पीछे बेचो।
१८	गु०	आखिरी मंदीमें खरीदना सच्चा व्यापार है।
१९	शु०	तेजीका माल दो बजेसे १० बजे तक नफा देगा।
२०	श०	शुरुसे मंदीकी चाल बेचाण मुनाफा देगा।
२१	इ०	प्राईवेट बाजार थम जायेंगे स्टेडी रुख मजबूत।
२२	सो०	एक घंटेकी मंदी खरीदना बता रही है।
२३	मं०	बढ़े हुए भावोंमें नफा लो और बल बेचो।
२४	बु०	दो तरफा लाईनसे डरनेकी जरुरत नहीं है।
२५	गु०	खास मंदीका चांस तीन बजे तक नफालो खरीदो।
२६	शु०	दो तरफा हलचल छक्के छुटादेगी, लेकर बैठना नहीं।
२७	श०	बाजारकी चालको डेलीरुखसे मिलाकर बेचो।
२८	इ०	प्राईवेटमें बड़े सटोरिये अच्छी मंदीके रुखमें बैठे हैं।
२९	सो०	फोन वालोंकी चाल मंदीकी होगी दो बजे तक खरीदो।
३०	मं०	कलकी खरीदका आज नफा लेकर नीचेमें खरीदो।
३१	बु०	तेजीकी आखिरी चाल ४ बजे तक बाद मंदी।

अगस्त

ता०	वार	दैनिक विचार
१	गु०	गिरे हुवे भावोंमें १२ से ४ तक खरीदो रातको नफा लो।
२	शु०	हिमालय पर चढ़े भावगिरना चाहते हैं।
३	श०	चांदी सोनेमें जबरदस्त मंदी नजराना लगाओ।
४	इ०	प्राईवेटमें बाजार काबूसे बाहर रहेगा।
५	सो०	दो बजे तक विदेशी तारोंसे तेजी आजायगी।
६	मं०	तेजीका भड़का ४ बजे तक बादको मंदी रहेगी।
७	बु०	तेजीकी ताकत खतम हो रही है।
८	गु०	आजकी मंदी अच्छा करारा नफा देगी।
९	शु०	यदि १२ से २॥ बजे तक मंदी देखो तो और बेचो।
१०	श०	मंदीका मुकाबला न करो ४ बजे बिदा हो जायगी।

...निर्णय

११ इ० प्रायवेटमें तेजीकी चमक दिखायगी।
१२ सो० खुलते बाजार चांदी सोना रुई खरीदो।
१३ मं० बढ़ते हुए भावोंमें नफा लेकर सोदा बर कर लो।
१४ बु० बाजार अनिश्चित दो बजे तक तेजी बाद मंदी।
१५ गु० बम्बईमें ५) बढ़ेंगे १०) घटेंगे, नजराना लगाओ।
१६ शु० सवा दो दिनकी चाल छक्के छुड़ा देगी, डबल बेचो।
१७ श० सावधान मंदीमें फंसे मत रह जाना, रोजाना नफा लेते रहो।
१८ इ० प्रायवेटमें दोतरफा पहिले तेजी बाद मंदी।
१९ सो० मंदीका टोन १॥ बजे तक बादको स्टेडी रुख तेजी।
२० मं० बैंकोंका बेचान मंदीकी हवा बांध देगा।
२१ बु० तारोंका रुख दैनिकसे मिलान करें तो खेला खेलो!
२२ गु० ता० १९ को बैंकका ऐलान हो तो २॥ दिनमें २०) की मंदी होगी।
२३ शु० गिरे हुए भाव फिरसे उठेंगे रुकने पर घटे भावोंमें खरीदो।
२४ श० तेजीके योग फिरसे चमकेंगे माल पकड़ लो।
२५ इ० प्रायवेटमें बाजार अच्छी घट बढ़में चलेगा।
२६ सो० चांदी सोनेका रुख स्टेडी मजबूत खरीद चालू करो।
२७ मं० दिशावरोंसे तेजीके तार, दो बजे तेज ४ बजे मंदी।
२८ बु० दो तरफा रुख पहिले तेजी पीछे मंदी गली लगाओ।
२९ गु० ... समझो।
३० शु० तेजीका टोन बराबर १२ से ४ तक रहेगा।
३१ श० नफा लेकर २॥ बजे बेचू हो जानेकी राय है।

सितम्बर

१ इ० प्रायवेटमें अच्छा रियेक्शन मंदीका होगा।
२ सो० दो बजे तक मंदी खतम खरीदो डबल।
३ मं० आजके योग २) तीन टकेकी तेजी बता रहे हैं।
४ बु० ढाई बजे बाद मंदीका असर होगा बेचो।
५ गु० दोतरफा तूफानी घटबढ़ तेजी मंदीकी गली लगाओ।
६ शु० ऊंचे भावों ४॥ बजे बाद बेचने पर २॥ दिनमें लाभ।
७ श० मंदीकी चाल १२ घण्टे तक, खरीदो।
८ इ० प्रायवेटमें तेजी पर तेजी क्या समझे।
९ सो० ग्रह इकतरफा तेजीमें जाना चाहते हैं।
१० मं० घटे भाव खरीदेगा वही नफा उठायगा।
११ बु० तेजीकी ताकत चिम्मन मोती कम नहीं होने देगा।
१२ गु० सिलवर किंगको दूसरी पार्टी मात देगी।
१३ शु० तेजीका टोन दो बजे तक, बादको मंदी, बेचो।
१४ श० मंदीका टोन ३ बजे तक बादको तेजी।
१५ इ० प्रायवेटमें बाजार स्टेडी रुख तेजीमें रहेगा।
१६ सो० खुलते बाजार खरीदो १६ घंटेमें लाभ।

साधनाके भारसे विनम्र, सादगी लि[illegible]
मूर्तिको देखकर विस्मित सा रह [illegible] घंटेमें लाभ।
जी ने [illegible]तरफा बाजार देखकर काम करो।

१९ गु० ढाई बजे मंदीके रियेक्शनमें खरीदना सच्चा काम है।
२० शु० तेजीकी चाल पांच बजे तक बादको मंदी।
२१ श० दो बजे बेचो १२ घण्टेमें लाभ सामने होगा।
२२ इ० प्रायवेटमें रुख मुलायम।
२३ सो० विदेशी खबरोंसे १ बजे तेजीकी चाल खरीदो।
२४ मं० स्टेडी रुख मजबूत रातको बेचो।
२५ बु० बाजारका रुख पहिले तेजी फिर मंदी।
२६ गु० तीन टके की मंदी एक दिनमें।
२७ शु० घटे भाव बाजार खुलनेके बाद खरीदो।
२८ श० तेजीकी सरगर्मी मन्दीको मौका देगी।
२९ इ० प्रायवेटमें बाजार मंदीसे तेजीमें खरीदो।
३० सो० तेजीकी चमक छः घंटेमें नफा देगी।

अक्टूबर

१ मं० आखिर तेजी क्या रंग लायेगी।
२ बु० खरीदो पहिले तेजी फिर मंदी।
३ गु० बराबर दो बजे मंदीमें खरीदो।
४ शु० तेजीके टोनसे ५ बजे तक नफा लो।
५ श० दो बजे तक तेजी बादको मंदी रहेगी।

मन्दिरका देवता

(पृष्ठ ३२ का शेष)

किन्तु जब हजारों नर-मुण्डोंके बीचमें आनन्दी के पतिका शव उसके द्वार पर लाकर रखा गया और आनन्दीको उसके पतिके बलिदानका इतिहास सुनाया गया, तो उस अर्थी पर सोये हुए—जैसे गाढ़ निद्रामें लीन पतिकी ओर देख, आनन्दीके मुंह पर दुःख और क्षोभका आवरण नहीं आ पाया, अपितु एक अपूर्व ज्योतिसे उसका मुंह चमचमा गया। उसने पतिके चरणों पर अपने मस्तकको रख दिया और प्रणाम कर लिया। उस समय उसकी आंखोंमें आंसूका एक बूंद भी नहीं दिखाई दिया। उसे जीवनमें पहली बार यह ज्ञात हुआ कि जिसे वह अपना देवता समझती थी, वह केवल उसीका नहीं था, वह जनताका था—जनता जनार्दन का। वह एकाकी भी नहीं था, वह हजारोंका समूह उसके चरणों पर झुका हुआ था। भला वह आनन्दीके लिए कितना बड़ा गर्व था और सम्मान, जिसे पाकर बरबस ही उसका सिर झुक गया था।

❃　❃　❃　❃

श्मशानसे लौटकर आनन्दीने घरमें पैर रखा। सन्ध्या हो गयी थी। चारों ओर अन्धेरा फैल गया था। उसी समय मन्दिरमें घण्टे घड़ियाल बज उठे। आरती करनेका स्वर भी सुनाई देने लगा था। आनन्दीने धीरे-धीरे अपने पैरोंको बढ़ाकर घरसे मन्दिरमें पहुँच कर देखा कि मन्दिर जग-मग कर रहा था। उस समय भी मन्दिरका देवता जैसे मुस्करा रहा था और हंस रहा था।

आनन्दीने अपना सिर झुका लिया और झर-झर कर आंसुओंको बहाना आरम्भ कर दिया।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]



आषाढ़ शुक्ल १० सोमवार ता० ८ जुलाई	श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना दिवस और श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराजका जन्म दिवसोत्सव
आषाढ़ शु० ११ मंगलवार ता० ९ जुलाई	देवशयनी एकादशी व्रत स्मार्त्तगृहस्थोंके लिए, चतुर्मासारम्भ
,, १२ बुधवार ता० १० ,,	देवशयनी एकादशी व्रत वैष्णवोंका
,, १२ गुरुवार ता० ११ ,,	प्रदोष व्रत
,, १४ शनिवार ता० १३ ,,	सत्यव्रत वायुपरीक्षा ध्वजारोपण
,, १५ रविवार ता० १४ ,,	श्रीगुरुपूजा व्यास पूजा शबरात
श्रावण कृष्ण २ मंगलवार ता० १६ ,,	कर्क संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल १२।१६ या०
३ बुधवार ता० १७ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टै० टा० ९।४४
१० बुधवार ता० २४ ,,	कामदा एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए
१२ गुरुवार ता० २५ ,,	एकादशी व्रत वैष्णवोंका
१३ शुक्रवार ता० २६ ,,	प्रदोष व्रत
३० रविवार ता० २८ ,,	हरियाली अमावस
श्रावण शुक्ल १ सोमवार ता० २९ ,,	चन्द्रदर्शन
३ बुधवार ता० ३१ ,,	मधुश्रवा ३ मेला तीज
५ शुक्रवार ता० २ अगस्त	नाग पञ्चमी
७ रविवार ता० ४ ,,	श्री गो० तुलसी दास जयन्ती
८ सोमवार ता० ५ ,,	मेला श्री नयनादेवी व चिन्तपूर्णी
११ गुरुवार ता० ८ ,,	पुत्रदा एकादशी व्रत
१३ शनिवार ता० १० ,,	शनिप्रदोष व्रत
१५ सोमवार ता० १२ ,,	सत्य व्रत उपाकर्म ऋषितर्पणी रक्षाबन्धन रक्षड़ी स्टै० टा० मध्याह्नोत्तर ३।६ उप० श्री अमरनाथ (काश्मीर) यात्रा
भाद्रपद कृ० ३ गुरुवार ता० १५ ,,	कज्जली ३
४ शुक्रवार ता० १६ ,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टै० टा० ९।३० सिंह संक्रान्ति मु०४५ पुण्यकाल दूसरे दिन
७ सोमवार ता० १९ ,,	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए चन्द्रोदय स्टै० टा० घं० ११ मि० २७
८ मंगलवार ता० २० ,,	श्रीकृष्ण जन्म ८ व्रत वैष्णवोंका चं० उ० १२।४
९ बुधवार ता० २१ ,,	गुग्गा नवमी

भाद्रपद कृ० ११ शुक्र० ता० २३ अगस्त	अजा एकादशी व्रत
१२ शनिवार ता० २४ ,,	शनिप्रदोष व्रत गोवत्सा १२
३० सोमवार ता० २६ ,,	कुशोत्पाटिनी सोमवती अमावस सतीपूजा
भाद्रपद शु० २ बुधवार ता० २८ अगस्त	चन्द्रदर्शन
३ गुरुवार ता० २६ ,,	हरितालिका ३ व्रत, ईद उल्फितर
४ शुक्रवार ता० ३० ,,	पत्थर (कलंक) चौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त स्टे० टा० घं० ६ मि० ६
५ शनिवार ता० ३१ ,,	ऋषिपंचमी जैन पर्यूषणोत्सवारम्भ
७ मंगलवार ता० ३ सितम्बर	श्रीराधाष्टमी श्रीदधिची जयन्ती
६ गुरुवार ता० ५ ,,	श्रीचन्द्र नवमी, भागवत सप्ताहारम्भ
११ शनिवार ता० ७ ,,	पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत
१२ रविवार ता० ८ ,,	प्रदोष व्रत वामन जयन्ती मेला अम्बाला व पटियाला
१४ मंगल० ता० १० ,,	अनन्त १४ व्रत सत्यव्रत मेला छपार
१५ बुधवार ता० ११ ,,	प्रौष्ठपदी श्राद्ध भागवत सप्ताह समाप्ति
आश्विन कृ० १ गुरुवार ता० १२ ,,	महालया (पितृपक्षा) रम्भः
३ शनिवार ता० १४ ,,	श्रीगणेश चौथ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।३६
४ रविवार ता० १५ ,,	श्री १०५ मान् बघाट नरेश महोदयका जन्मोत्सव
७ मंगल ता० १७ ,,	कन्या संक्रान्ति पुण्यकाल पूर्वाह्न पर्यन्त
६ गुरु० ता० १६ ,,	सौभाग्यवती ६ श्राद्ध
११ शनि० ता० २१ ,,	इन्दिरा एकादशी व्रत
१२ रवि० ता० २२ ,,	प्रदोष व्रत, सन्यासी श्राद्ध
१४ मंगल ता० २४ ,,	शस्त्र अग्नि जल विषादिसे मृत व्यक्तियोंका श्राद्ध
३० बुध० ता० २५ ,,	सर्वपितृ ३० श्राद्ध महालय समाप्ति
आश्विन शु० १ गुरु० ता० २६ ,,	चन्द्रदर्शन शारदीय नवरात्रारम्भ घटस्थापन मातामह श्राद्ध
५ सोम० ता० ३० ,,	ललिता ५ शान्ति पंचमी
७ बुधवार ता० २ अक्टूबर	श्री सरस्वती आवाहन
८ गुरुवार ता० ३ ,,	महाष्टमी दुर्गा ८ श्री सरस्वती-पूजन मेला श्री ज्वालामुखी व तारादेवी
६ शुक्रवार ता० ४ ,,	श्री सरस्वती बलिदान नवरात्रोत्थापन
१० शनि० ता० ५ ,,	श्री सरस्वती विसर्जन विजयादशमी, दशहरा

त्रैमासिक व्यापारिक राशिफल

[ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य]



ता० ८ जुलाईसे ७ अगस्त तक किस राशि वालोंको व्यापार कैसा रहेगा—

मेष—चांदी, रुई, शेयर फीचर श्रेष्ठ। ता० ८।१२। १५।२३।३०।१।५ लाभकारी। सोना, अलसी, गुवार, मध्यम, कालीमिर्च लोह तेल घृत कपड़ा गल्ला हानिप्रद।

बृषभ—चांदी, सोना, पीतल, जस्त, रुई, अलसी श्रेष्ठ। ता० ६।१३।१६।२४।३१।२।६ लाभकारी। गुवार बाजरा मक्की चावल साधारण, शेयर लाख कपड़ा जूटका व्यापार हानिप्रद रहेगा। मिलता नफा छोड़ने पर ठिकाना नहीं बनेगा।

मिथुन—चांदी, रूई, शेयर, फ्यूचर जूट, वारदाना श्रेष्ठ। ता० १०।१४।२५।२८।३।५ श्रेष्ठ। तिल्ली बारदाना, अलसी, सोना, मध्यम, बाकी नेष्ट।

कर्क—चांदी, सोना रूई जूट शेयर श्रेष्ठ। ता० १२।१६।२८।३०।१।४६ लाभकारी, बाकी सब साधारण।

सिह—चांदी अलसी शेयर सरसों रूई बिनौला शींगदाना गुवार मक्की चावल श्रेष्ठ। ता० ८।१४। १७।२१।२५।२७।३०।५ लाभकारी, बाकी सब साधारण।

कन्या—सोना रूई मूंग अरहर तिलहन जौ चना मक्की गुवार श्रेष्ठ। ता० ९।१४।२१।२९।३१।३।५ श्रेष्ठ। शेयर बारदाना जूट अलसी साधारण।

तुला—चांदी रुई सोना अलसी शेयर हैसीयन सरसों श्रेष्ठ। ता० ८।११।१५।१७।२१।२३।२७।३०।२।४ श्रेष्ठ। चावल मक्की बाजरा साधारण, कालीमिर्च बारदाना नेष्ट।

वृश्चिक—बाजरा मक्की चावल सरसों एरंडा अलसी सोना श्रेष्ठ, चांदी रूई पीतल जस्त साधारण। ता० १०।१६।१८।२५।३१।४ श्रेष्ठ, बाकी वस्तु हानिप्रद रहेगी।

धनु:—रूई चांदीं सोना जूट बारदानासे लाभ। ता० ८।११।१८।२१।२४।२६।३०।३।५ श्रेष्ठ। मक्की बाजरा अलसी मध्यम, बाकी हानिप्रद। स्टाक खतम करना ठीक रहेगा।

मकर—चांदी सोना रुई लोहा स्टील शेयर रेशलाटरीसे लाभ। ता० १०।११।१९।२३।३०।२।४।५ श्रेष्ठ। बारदाना जूट अलसी हानिप्रद, मिलता हुआ मुनाफा छोड़ो नहीं।

कुंभ—जूट शेयर बारदाना रूई चांदी श्रेष्ठ। ता० ८।१४।२१।२९।५ श्रेष्ठ। सोना अलसी मक्की चावल मध्यम। तारामीरा गुवार कालीमिर्च नेष्ट।

मीन—चांदी रूई अलसी गुवार श्रेष्ठ। ता० ८।१२। २६।३ श्रेष्ठ। सोना जूट हैसीयन बारदाना मध्यम। मूंग अरहर सरसों हानिप्रद रहेगा। सोच विचार कर काम करना।

ता० ७ अगस्तसे ६ सितम्बर तक किस राशि वालेको कैसा रहेगा—

मेष—चांदी रूई बाजरा अलसी श्रेष्ट। ता० ७। १३ २१। २८। ६ श्रेष्ठ। सोना गुवार सरसों शेयर जूट साधारण।

बृषभ--सोना चांदी शेयर जूट गुवार श्रेष्ठ। ता० ८। १२। १४। २०। २२। २८। ३ श्रेष्ठ। रूई बारदाना अलसी मध्यम बाकी नेष्ट।

मिंथुन--अलसी बारदाना शेयर मूंग अरहर जौ मक्की चावल श्रेष्ठ। ता० ११। १७। २७। ५ श्रेष्ठ। चांदी सोना रूई मध्यम।

कर्क—रुई चांदी मूंगफली एरंडा शींगदाना श्रेष्ठ। ता० ६। १४। २१। २५। २६। ४। ६ श्रेष्ठ। मक्की चावल गुवार बाजरा मध्यम।

सिंह—सोना मोती तिलहन रस अलसी रुई श्रेष्ठ। ता० ७। ६। १५। १८। २४। २७। २८ श्रेष्ठ। चांदी गुवार बारदाना जूट मध्यम। कालीमिर्च शींगदाना बिनौला नेष्ट।

कन्या—मूंग अरहर बारदाना चांदी रुई सोना श्रेष्ठ। ता० ७। १०। १७। २३। २८। ३। ६ लाभकारी, बाकी मध्यम रहेगी।

तुला—चांदी रुई सोना श्रेष्ठ। ता० ६। ८। २०। २४। ३०। ४ श्रेष्ठ। जुट गुवार अलसी मध्यम बाकी नेष्ट।

वृश्चिक—चांदी अलसी गुवार शेयर बारदाना श्रेष्ठ। ता० ८। १३। १६। २७। २८। १। ३। ५ श्रेष्ठ। बाकी सब मध्यम।

धनु—सोना रुई जूट लाख चपड़ा गुवार श्रेष्ठ। ता० ८। १५। २२। २७। ३१। ४ श्रेष्ठ। चांदी तारामीरा चावल मक्की मध्यम।

मकर—गुवार चांदी रुई शेयर जूटसे लाभ। ता० ११। १७। २३। २८। ३०। ४। ५ श्रेष्ठ। सोना अलसी गुवार मध्यम।

कुंभ—चांदी सोना रुई अलसी पाट शेयर मध्यम। ता० ८। १२। १४। १६। १८। २२। २८। ३। ४ श्रेष्ठ। गुवार कालीमिर्च बाजरा मध्यम, बाकी नेष्ट।

मीन—चांदी रुई गुवार श्रेष्ठ। ता० ७। १२। २१ २८। ४ श्रेष्ठ। अलसी पाट शेयर बाजरा मक्की चावल साधारण।

ता० ६ सितम्बर से ५ अक्तूबर तक किस राशि वालेको कैसा रहेगा—

मेष—चांदी, सोना, रुई बारदाना शेयर रेश लॉटरी श्रेष्ठ। ता० ६। १०। १३ १७। १८। २१। २४ श्रेष्ठ। गुवार अलसी तारामीरा चावल मध्यम।

वृषभ—रुई, सोना गुवार अलसी श्रेष्ठ। ता० ७। ११ १४। १६। २३। २६। ३ श्रेष्ठ। चांदी सरसों चावल मक्की बाजरा तारामीरा मध्यम।

मिथुन—सोना शेयर जूट बारदाना मूंग अरहर श्रेष्ठ। ता० ६। १५। १८। २४। २६। २८। ३० ३ श्रेष्ठ। अलसी बिनौला शींगदाना मध्यम।

कर्क—रुई चांदी अलसी शींगदाना बिनौला श्रेष्ठ। ता० १०। १६। १६। २१। २४। २६। २९। ३०। ४ श्रेष्ठ। सोना बारदाना गुवार मध्यम।

सिंह—सोना अलसी रुई शेयर बारदानासे लाभ। ता० ८। १२। १७। २१। २६। २९। ३०। ४ श्रेष्ठ। अलसी बारदाना जूट मध्यम।

कन्या—रुई चांदी सोना शेयर मूंग चावल अरहर से लाभ। ता० ७। १०। १७। २१। २७। ३०। ४ श्रेष्ठ। कालीमिर्च तरामीरा अलसी हानिप्रद। व्यापार मंदीका लाभकारी।

तुला—रुई चांदी शेयर जूट लाटरीसे लाभ। ता० १५। २२। ३०। ३। ४। ५। श्रेष्ठ। सोना, अलसी चावल मक्की मध्यम।

वृश्चिक—सोना रुई अलसी मसूर कतीरा मोती ऊनसे लाभ। ता० ८। १३। १८। २०। २७। ३०। ३। ६ श्रेष्ठ, बाकी मध्यम।

धनु—चांदी, सोना रुई मक्की गुवार अलसी जूट शेयरसे लाभ। ता० ६। २०। २४। ३। ५ श्रेष्ठ, बाकी मध्यम।

मकर—चांदी तिल तेल धनिया अलसी बाजरा श्रेष्ठ ता० १३। १६। १८। २२। २६। २९। २। ५ श्रेष्ठ, बाकी सब मध्यम।

कुंभ—सोना मूंग मसूर मोती अलसी शींगदाना गुवार चावलसे लाभ। ता० १०। १५। २०। २४। २८। ३०। ४ श्रेष्ट, बाकी मध्यम।

मीन—चांदी रुई पाट लाख चपड़ा अरेंडा शींगदाना श्रेष्ठ। ता० ६। १३। १८। २३। २६। ३०। ४ श्रेष्ठ, बाकी नेष्ट।

———

त्रैमासिक तेजी-मन्दी विज्ञान

[लेखक— श्री पं० विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्यौतिषाचार्य]

श्रावण कृष्णपक्षका सारांश

इस पक्षमें कर्क राशिमें सूर्यका प्रवेश मंगलवारको हुआ है। सूर्य बुध, शनि इन तीनों ग्रहोंकी युति कर्क राशिमें होनेसे श्वेत वस्तुओंमें अच्छी घटा बढ़ी बनती है। रुई २०, २५ टका, चांदीमें ८) १०) रु० की तेजी बनती है। घृत भी तेज होगा। तिल, तैल, अलसीके भावोंमें भी रुख तेजीका रहेगा। बुधकी वक्रगति रुई, सोना चांदीमें घटा बढीके साथ तेजीका रुख बनाती हैं। गेहूँ, चना, मूंग, जौ, मटर, बाजरा, खाण्ड, गुड़, शक्करके भावोंमें तेजीका रुख बनेगा। हल्दी, बिनौला, तोरिया, सरसोंमें भी इस पक्षमें भाव तेजीमें रहेगा। श्रावण वदी २ द्वितीया भौम वारसे ही बाजार रुख साधारण तेजीकी ओर रहेगा। और यह तेजी सप्तमीसे १५ पूर्णिमा तक स्थायी रह सकती है। श्रावण कृष्णपक्षमें प्राय: तेजीके ही योग पाये जाते हैं। शनि, सूर्य, बुध, इन तीन ग्रहोंका योग एक राशि पर वर्षाकी कमीको भी सिद्ध करता है।

एक राशि गता ह्येते शनिबुधदिनाधिपाः।
सर्वधान्य महर्घत्वं मेघास्वल्पाः जलप्रदाः॥ १॥

अधिकतर खण्डवृष्टिका योग है। भारतवर्षके कतिपय प्रान्तोंमें वर्षाएं अधिक भी हो जाएंगी इसलिए किसी-किसी प्रान्तमें बाढ़ आनेका भय होगा। अधिकतर प्रान्तोंमें वर्षाकी कमी रहेगी। सभी वस्तुओंमें तेजी रहेगी।

श्रावण शुक्लपक्षका सारांश

इस पक्षमें सुदी ६ सप्तमी तक बाजार भाव कुछ तेजीमें रहेंगे। चन्द्रदर्शन भी तेजीका सूचक है। कन्या राशिमें भौम-गुरु-शुक्रका योग लाल वस्तुओंमें, रेशम, सूतमें तेजी बनाता है। खाण्ड गुड़ शक्कर सोना चांदी चन्दनमें काफी घटाबढ़ीके योग हैं। श्रावण सुदीमें बदीकी अपेक्षा सभी चीजोंमें मन्दीके योग पाये जाते हैं। सोने चांदीका बाजार इस पक्षके आरम्भके ५ दिन तक तेजीका रुख, बीचके पांच दिनोंमें मन्दीका योग, बादमें फिरसे तेजीका रूप-धारण करेगा। ३-४ अगस्त तक बाजार भाव तेज रह सकता है, फिर मन्देका योग बना कर ११ अगस्तसे फिर तेजी में आजाना पूर्ण संभव है। रुई, कपास, रेशम, कपड़ा, सूत, सन आदि वस्तुओंका भाव प्रथम सप्ताहमें तेजीका रहेगा। द्वितीय सप्ताहमें मन्दीमें जावेगा। द्वितीय सप्ताहके अन्तके दो दिन तेजीमें आ सकते हैं। गेहूँ, जौ, चना, चावल, मूंग गुवार बाजराकी मारकेट पञ्चमी तक तेजी, १२ तक मन्दी, फिर तेजीमें रहेगा।

श्रावण मासकी दैनिक तेजी मन्दी—

श्रा० कृ० १ चं० ता० १५ रुई सोना चान्दीमें आज दिन मन्दीका योग है। गुवार बाजरा मंदा खाण्ड गुड शक्कर मन्दे वारदाना मन्दा।

श्रावण कृ० २ भौमवार ता० १६ जुलाई आज दिन कर्कसंक्रन्ति भौमवारी तेजी कारक है। रुई सोना चान्दीमें तेजीका योग है। गुवार बाजरा तेज। खाण्ड गुड़ शकर तेज, बिनौला तेज।

श्रावण वदी ३ बुधवार ता० १७ जुलाई सोना चान्दी पहिले मन्दे बादमें तेज। रुई तेज, खाण्ड गुड शक्कर तेज, बिनौला तेज गुवार बाजरा तेज।

श्रावण बदी ४ गुरु० ता० १८ जुलाई सोना, चान्दी पहिले तेज, फिर मन्दा। रुई मन्दी, सरसों

मन्दी, खाण्ड गुड़ शक्कर मन्दे, बिनौला मन्दा, गुवार बाजरा मन्दा।

श्रावण बदी ५ शुक्रवार ता० १९ जुलाई सोना चान्दी तेज, रुई तेज, सरसों घी मन्दे, खाण्ड गुड़ शक्कर मन्दे, गुवार बाजरा मन्दा, रुई मन्दी।

श्रावण बदी ६ शनिवार ता० २० जुलाई बुध बक्री हुआ है, सोना चांदी मन्दे, रुई मन्दी, खाण्ड गुड़ शक्कर मन्दे, सरसों बिनौला मन्दा, घी मन्दा।

श्रावण बदी ७ रविवार ता० २१ रुई तेज, खाण्ड गुड शक्कर तेज, सरसों तेज, बिनौला तेज, गुवार बाजरा मन्दा।

श्रावण वदी ८ सोमवार ता० २२ जुलाई सोना चान्दी मन्दे, खाण्ड गुड शक्कर मन्दे, रुई तेज, सरसों घी मन्दें, बिनौला तेज, गुवार बाजरा मन्दा।

श्रावण बदी ९ भौम० २३ जुलाई प्रातः सोना चान्दी तेज, रुई तेज, सरसों तेज, गुवार बाजरा तेज।

श्रावण बदी ९ भौम २३ जुलाई सायं रुई मन्दी, सोना मन्दा, चान्दी तेज, घी तेज, गुवार बाजरा सरसों मन्दा, गुड शक्कर तेज।

श्रावण बदी १० बुध ता० २४ जु० रुई सोना चांदी मन्दे, गुवार बाजरा मन्दा, गुड़ शक्कर मन्दें, सरसों मन्दी।

श्रावण बदी १२ वृहस्पति २५ जुलाई रुई तेज सोना चांदी तेज, खाण्ड गुड शक्कर तेज, गुवार बाजरा तेज।

श्रावण बदी १३ शु० ता० २६ जु० रुई सोना चांदी तेज घटाबढी ज्यादा रहे। बाजरा तेज गुवार तेज, खाण्ड गुड़ शक्कर तेज हो।

श्रावण बदी १४ शनि ता० २७ जुलाई रुई सोना चांदी मन्दे, बाजरा मन्दा, गुवार तेज, खाण्ड गुड़ शक्कर सरसों मन्दे।

श्रावण वदी ३० ता० २८ जु० रविवार सोना चांदी पहिले मंदे, बादमें रुख तेजी पर खाण्ड गुड़ शक्कर तेज बारदाना मन्दा।

श्रावण सुदी १ ता० २९ जुलाई सोम० चन्द्रदर्शन रुई सोना चांदीमें मन्दा चाहता है। गुवार बाजरा मन्दा, बारदाना मन्दा, सरसों मन्दी।

श्रावण सुदी २ भौम० ३० जुलाई रुई तेज सोना चांदी तेज, बारदाना तेज, गुवार बाजरा तेज, सरसों घी मन्दा।

श्रावण सुदी ३ बुध० ३१ जुलाई सोना चांदी ताम्बा कांसी तेज, गुवार बाजरा मन्दा बारदाना तेज, घी मंदा, सरसों बिनौला मंदा।

श्रावण सुदी ४ बृ० ता० १ अगस्त रुई सोना चांदी मन्दे गुवार बाजरा मंदा, सरसों मन्दी बारदाना तेज, गुड़ शक्कर मन्दे।

श्रावण सुदी ५ शुक्रवार २ अगस्त सोना चांदी मंदे, रुई तेज, सरसों तेज, खाण्ड गुड शक्कर मदें, गुवार बाजरा मंदा।

श्रावण सुदी ६ शनिवार ३ अगस्त रुई तेज, सोना चांदी तेज, सरसों बिनौला तेज, खाण्ड गुड़ शक्कर तेज, बारदाना तेज।

श्रावणसुदी ७ रविवार ४ अगस्त रुई तेज, बारदाना तेज, खाण्ड गुड शक्कर मन्दे गुवार बाजरा तेज।

श्रावण सुदी ८ सोमवार ५ अगस्त—सोना चांदी में घटाबढ़ीका योग है। रुख भाव मुलायम होगा। रुई मन्दी, खाण्ड गुड़ शक्कर मन्दे, गुवार बाजरा सरसों मन्दी, बारदाना बिनौला तेज।

श्रावण सुदी ९ भौमवार ६ अगस्त—सोना चांदी खाण्ड गुड़ शक्कर सरसों बारदाना बिनौला गुवार बाजरा मन्दा। रुई घी तेज।

श्रावण सुदी १० बुधवार ७ अगस्त—रुई सोना चांदी खाण्ड गुड़ शक्कर गुवार बाजरा मन्दे सरसों तेज।

श्रावण सुदी ११ गुरुवार ८ अगस्त—सोना रुई चांदी बाजरा सरसों तेज। खाण्ड गुड़ शक्कर मन्दा।

श्रावण सुदी १२ शुक्रवार ९ अगस्त—रुई सोना चांदी खांण्ड गुड़ शक्कर बारदाना सरसों गुवार बाजरा मन्दा।

श्रावण सुदी १३ शनिवार १० अगस्त—रुई खांड गुड़ शक्कर तेज। सोना चांदी गुवार बाजरा सरसों मन्दी। बारदाना तेज।

श्रावण सुदी १४ रविवार ११ अगस्त—पहले सोना चांदी मन्दी—बादमें तेज। गुवार बाजरा रुई तेज। खाण्ड गुड़ शक्कर मन्दे।

श्रावण सुदी १५ सोमवार १२ अगस्त—सोना चांदी सरसों बिनौला मन्दे। रुई बारदाना खांड गुड़ शक्कर तेज।

भाद्रपद मासका सारांश

इस मासमें प्रथम पक्षमें सिंहकी संक्रांति ४५ मूहूर्त्ती बनी है। तुला राशिमें बृहस्पति आया है। शुक्र मङ्गल नेपचूनका भी योग बनता है। इसलिए इस पक्षमें "तुलाराशिं गतो जीवो विदधाति समर्घताम्। सुभिक्षं तत्र ज्ञातव्यं क्वचित्क्वापि महर्घता" इस प्रमाणसे इस पक्षमें रुई सोना चांदी विशेषकर धान्योंमें मन्दीके योग पाये जाते हैं। सुभिक्ष कारक योग है, तेजी स्थायी नहीं रहेगी, भाव बाजार रुख मुलायम होगा। प्रतिपदासे ६ तक मन्दा, फिर ६ से १० तक साधारण तेज, फिर १० से ३० तक मंदी। पीतल सरसों बारदानामें इस पक्षमें अधिकतर तेजी पाई जाती है। शेयर बाजार इस पक्षमें मन्दे होंगे। वर्षा की कमी पायी जाती है।

भौमस्य पृष्ठतो यायाद्भानुश्चेज्जल शोषकः॥
भौमस्याग्रतो भानुर्नियतं हि बहु तोयदः॥

सुदीमें बुधका अस्त होना, गुरु-शुक्र-योग देव दानव योग कलह-कारक क्रान्तिकारक दोषकारक बन जाता है। इस योगसे रसादिक सम्पूर्ण पदार्थों में रुई तथा सोना चांदीमें एवं धान्यादिकोंमें प्रथम सप्ताहमें केवल साधारण मन्दी रह कर बादमें तेजी के ही योग पाये जाते हैं।

रुई—२०) २५) रुपये की चांदी १०) १२) की सोने में ६) ७) की घटा बढ़ी के योग हैं।

गुरुशुक्रौ गतावेकराशौ दुर्भिक्ष दुःखदौ"

इससे व्यापारिक वस्तुओंमें तेजीके योग पाये जाते हैं। इस पक्षमें घटा बढ़ी अच्छी चलेगी। बिनौला,पाट हैशियन, तृण, अफीम, शस्त्र, घोड़े, बैल, पशु आदि भी तेज रहेंगे। प्रथम पक्षमें मन्दी द्वितीय पक्षमें तेजीके शास्त्रीय योगोंसे व्यापारमें काफी परिवर्तन होंगे।

आश्विन मासका सारांश

इस मासमें कन्याकी संक्रान्ति ३० मुहुर्ती है, भाव सम रहेंगे। मङ्गल गुरुका योग बुध नेपचूनका योग रुई, सूत, रेशम, तोरिया, चणा, गेहूं, सोना, चान्दी में प्रथम पक्षके प्रथम सप्ताहमें पहिले तेजी लाकर फिर द्वितीय सप्ताहसे मन्दीके योग बनाते हैं।

विशेष मन्दी तेजी इस पक्षमें प्रतीत नहीं होती है, तो भी सोना, चांदी, गुवार, बाजरा, ताम्बा, पीतल प्रथम पक्षमें ९ नवमी दशमी तक साधारण रुख तेजी ही बनावेगा, बादमें बाजार भाव रुख मन्दीकी ओर होगा। इसी प्रकार उड़द, मूंग तथा कपास सूतमें तेजी अच्छी रहेगी।

"भूमिपुत्रस्तुले यातः सर्वधान्य महर्घता। माषा मुद्गास्तथा सूत्रं महर्घं शालि तण्डुलाः।" इसलिये धान्योंमें भी साधारण तेजीका योग है।

आश्विन सुदीमें स्वाति नक्षत्र पर मङ्गलके जाने से अन्न, धान्य, अलसी, चान्दी, अफीम, सोना द्वितीय पक्षसे मन्दे होंगे। विजयादशमीसे सोना चांदी तेजी पकड़ेगा।

———

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]



विज्ञ पाठकोंको यह तो भली भांति विदित ही है कि आजसे पांच वर्ष पूर्व 'श्रीस्वाध्याय' के प्रथम वर्षके प्रथमाङ्कमें हमने स्पष्ट लिखा था कि—"........अब अधिक समय तक भारत वर्तमान (पददलित दासताकी) स्थितिमें नहीं रहेगा। स्वराज्य या स्वतन्त्रता भिक्षामें प्राप्त होने जैसी वस्तु नहीं और न आज तक मांगनेसे किसीको स्वराज्य मिला ही है, अपितु कालचक्रानुसार (ग्रहयोग अनुकूल आने पर) राष्ट्रशक्ति उसे स्वयं प्राप्त कर लेती है। 'श्रीस्वाध्याय' के जन्मदाता या संस्थापक सवतन्त्रस्वतन्त्र महामहिमश्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराजने अपने 'श्रीराष्ट्रालोक' में ठीक ही लिखा है—

स्वातन्त्र्यं भिक्षया नैव कदाचिदपि लभ्यते।
योगक्षेमसमर्थैका राष्ट्रशक्तिः प्रभाविनी ॥

तदनुसार अब वह कालचक्र या ग्रहयोग क्रमशः अनुकूल आता जा रहा है और प्रभाविनी राष्ट्रशक्ति अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होती जा रही है। गतवर्ष अपने 'श्रीविश्वविजय पंचांग' और गत 'साहित्यांक' में हमने सं० २००३ का जो राजनैतिक सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रियभविष्य प्रकाशित किया था उसका पाठक प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। वर्तमान वर्षके लिए स्पष्ट लिखा था कि—"..........यद्यपि इस वर्षमें भारतको पूर्ण स्वातन्त्र्य प्राप्तिका योग नहीं है, तथापि चिरकालसे स्वातन्त्र्यके लिए जो अथक परिश्रम और बलिदान किये जा रहे हैं, वे सफल होते प्रतीत होंगे और कुछ आंशिक अधिकार भारतको अवश्य प्राप्त होंगे।........राजनैतिक समस्याएं विकटरूपमें उपस्थित होंगी।...........यह योग बृटिश शासकोंके लिए उत्तम नहीं है, भारतकी स्थिति उनके लिए चिन्ताकारक होती जायगी। राष्ट्रियताके शत्रुओंकी शक्ति क्षीण होगी और राष्ट्रहितचिन्तकों एवं राष्ट्रियमहासभाकी प्रतिष्ठा सर्वत्र बढ़ेगी। आषाढ़से पूर्व ही ब्रिटिश शासकोंकी ओरसे भारतीयोंके हाथमें कुछ सत्ता सौंपी जायगी, किन्तु राष्ट्रियदल उससे पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट न होगा।........श्रमजीवियों और प्रजातन्त्रका बल निरन्तर बढ़ता जाएगा। संसारकी महाशक्तियोंके सामने अनेक विषम समस्याएं उत्पन्न होंगी।" इत्यादि।

ये सब घटनाएं पाठकोंके सामने आ चुकी हैं। अब भी हम अपनी उसी विचारधारा पर दृढ़ हैं जो पांच वर्ष पूर्व थी। अर्थात् सं० २००५ तक संसारमें पूर्णरूपेण सुख शान्ति और भारतके पूर्ण स्वतन्त्र होनेका योग हमें प्रतीत नहीं होता। इस अवधिमें अभी भारतको कई प्रकारके संघर्ष और उत्पातोंका सामना करना पड़ेगा। इस वर्षके प्रधान मन्त्री शनिदेव गत ज्येष्ठ शुक्ला ६ को शत्रुक्षेत्र कर्क राशिमें आ गये हैं, जगल्लग्न कुण्डलीमें इन्होंने दशम (राज्य) स्थानमें नीचस्थ मंगलके साथ प्रवेश किया है अतः अपने प्रकृतिसिद्ध स्वभावानुसार आर्य (राष्ट्रिय) दलको असन्तुष्ट करके मि०जिन्नाके द्वारा अन्तःकालीन सरकारकी स्थापनामें तो ये बाधक बन ही गये हैं। परन्तु भारतकी राशि पर गुरुकी मित्रदृष्टि होनेसे विधान निर्मात्री परिषद्के चुनावमें आर्यपक्ष या राष्ट्रियदलको विशेष सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही शनिराहुका कुचक्र वहां भी चलेगा, फलतः कार्यारम्भ होनेपर विपक्षियोंकी ओरसे विघ्न डालनेका असफल प्रयास किया जायेगा। भाद्रपदसे तुलाका गुरु आने पर भारतकी कामचलाऊ नई सरकार अपने आपको कई विषम समस्याओंमें उलझा पायेगी, राष्ट्रकी सहानुभूति एवं सद्भाव प्राप्त करनेमें

वह असमर्थ रहेगी। तुलाके गुरुमें ही बृटिश उच्चाधिकारियोंकी ओरसे पुनः अन्तःकालीन सरकार बनानेकी चर्चा प्रारम्भ होगी। परन्तु अभी इन तीन महीनोंमें आश्विन तक नयी अन्तःकालीन सरकारकी स्थापनाका योग नहीं है। इस अवधिमें यूरोप और अमेरिकामें भी कई प्रकारकी वैधानिक विषम समस्याएं उत्पन्न होंगी। स्पेन, रूमानिया, फ़िलस्तीन, बाल्कनप्रदेश, अरबराष्ट्र पूर्वीयएशिया श्याम जावा सुमात्रा और प्रशान्त महासागरमें विशेष अशान्ति व्याप्त होगी। कार्तिकसे आगे संसारमें कई प्रकारकी महत्त्वपूर्ण नवीन घटनाएं घटित होंगी, भारतके राजनैतिक एवं व्यापारिक क्षेत्रोंमें भी क्रान्ति होगी। सोना चांदी रुईके व्यापारमें भयंकर उलटफेर होगा। उन सबका विस्तृत विवेचन आगामी 'नववर्षाङ्क' में दिया जावेगा।

शनिकी कुटिल नीति

नेपच्यून हर्शल राहुसे तृतीयैकादशयोगकारिणी कर्क-राशिमें शनिकी स्थिति अनार्य आततायी लोगोंकी ओरसे राजनैतिक एवं सामाजिक प्रगतिके सम्बन्धमें कई प्रकारकी कुटिल चालें चलावेंगी। उन सबसे भारतीय आर्य जनताको सावधान रहना चाहिए। हमारी उदारता सहनशीलता सज्जनता या शान्तिसे आततायी अनार्य दलको अनुचित लाभ उठानेका अवसर न मिले। जिस शान्तिसे हमारे अधिकार और राष्ट्रकी स्वतन्त्रताका अपहरण होता हो वह शान्ति नहीं, अपितु निर्बलता या नपुंसकता है। श्रीराष्ट्रालोकमें ठीक ही लिखा है—

यया शान्त्या पराधीनं राष्ट्रं भवति, सा नहि—
शान्तिः, किन्तु नितान्तं सा केवलं क्लीबता मता ॥

अतः मनुष्य मात्रका कर्तव्य है कि वह प्रत्येक उपायसे अन्यायका प्रतीकार करे। आर्यसिद्धान्तानुसार अन्याय करनेवालेकी अपेक्षा जो चुपचाप अन्याय सहन करता रहता है वह अधिक पातकी है। इसी लिए श्रीराष्ट्रालोकमें अन्यायी आततायियोंको दण्ड देनेके लिए की जाने वाली क्रान्तिका नाम 'श्रेष्ठ क्रान्ति' और दूसरे राष्ट्रकी स्वतन्त्रता धनादि अपहरणके लिए अराष्ट्रियों द्वारा की जाने वाली क्रान्तिको 'दुष्टक्रान्ति' के नामसे निरूपित किया है। दुष्ट क्रान्ति अशान्तिकारिणी और दोनों लोकोंकी विनाशक तथा श्रेष्ठक्रान्ति परिणाममें शान्तिदायिनी और दोनों लोकोंके लिए कल्याणकारक होती है। यथा—

"या क्रान्तिः क्रियते लोके दण्डनायाततायिनाम्।
सा शान्तिदायिनी श्रेष्ठा लोकद्वयशुभावहा ॥

महामान्य श्री नेताजी इसी सनातन श्रेष्ठ क्रान्ति के अग्रदूत थे; इसी लिए आज वे आबाल वृद्ध भारतीयोंके लिए परम श्रद्धास्पद बने हुए हैं। नेताजी ही क्यों, आदि शक्ति श्रीजगदम्बा, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम, भगवान् श्रीपरशुराम और भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रने अन्यायविनाशक इस श्रेष्ठ क्रान्तिका मार्ग भारतको बतलाया था। यदि भारत आज वास्तविक रूपमें इस मार्ग पर आरूढ हो जावे तो संसारकी कोई भी शक्ति उसे परतंत्र नहीं रख सकती। अस्तु।

चांदी और शेयर बाजारकी अनुभूत रिपोर्ट

[श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्मा दैवज्ञ]



[यह तीन मास का चांदी और शेयर बाजारका अनुभूत विचार रामगढके सुप्रसिद्धज्योतिषी श्री पं० गिरिधारीलाल जी शर्माने 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंके लाभार्थ हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजा है। आप भारतके सुप्रसिद्ध ज्योतिषी मानवपंचांगके संस्थापक स्व० श्री पं० श्रीवल्लभ मनीरामजीके वंशज हैं। तेजी मंदी विज्ञानमें आपने अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। आगामी अंकसे प्रत्येक वस्तु पर आपने अनुभूत विचार 'श्रीस्वाध्याय' में भेजनेका आपने निश्चय किया इस सौजन्य पूर्ण सहयोगके लिए हम आपके आभारी हैं। —सम्पादक]

१—प्रथम सप्ताह ता० ८ से १४ जुलाई तक

इस हफ्तेमें ३ दिन तेजी २ दिन मंदी और २ दिन सामान्य भाव रहेंगे। इनमें ता० ८-११-१३ तेज, ता० ९-१० मन्दी, शेष सामान्य। ता० १३ से १७ तक शेयरोंमें तेजी। ता० ९-१० एकसे दूसरी विपरीत।

२—दूसरा सप्ताह ता० १५ से २१ जुलाई तक

इस सप्ताहमें ज्यादा झुकाव तेजीकी तरफ रहेगा, प्रायः दिन घट बढ़से या एक तरफी तेजीसे ही गुजरेंगे। ता० १५-१८-१९ को २) २॥) रु० बढ़ने का योग है। ता० १६ घट बढ़ होके तेजी रहेगी।

३—तीसरा सप्ताह ता० २२ से २८ जुलाई तक

इस सप्ताहमें घट बढ़का साम्राज्य भिन्न २ प्रकार का रहेगा। ता० २२-२३-२४ में विकट समस्या उत्पन्न हो जायगी, व्यापारियोंको कुछ समझमें नहीं आयेगा, हमारा ध्यान मंदीका है, बढ़के मंदी होगी। बढ़े उस दिन बेचो। ता० २२ तेजी। २३ मंदी। २४-२५ बढ़ के मंदी।

४—चौथा सप्ताह ता० २८ जुलाई से ५ अगस्त तक

इस सप्ताहमें ता० ३१ तक तो १ दिन घटेगा, दूसरे दिन बढ़ेगा। ता० १ अगस्तसे ५ तक बढ़ने का योग है। २) ३) रु० शेयरोंमें अच्छी तेजी। ता० २ घट बढ़ खूब होगी १) घटने पर लेवें ।॥) बढ़ने पर बेचो। जनरल तेजीका ध्यान रखो।

५—पांचवां सप्ताह ता० ६ से १२ अगस्त तक

यह हफ्ता ३ दिन तेजीका ४ दिन मंदीका है ऐसा ध्यान रखो। इस हफ्तेमें शेयरोंके लिए मंदा ध्यानमें रखना। ता० ७-८-९ को चांदी शेयरोंमें तेजी। ता० १०-११ मंदी। ता० १२ तेज होके मंदी, यहांसे शेयरोंमें अच्छी मंदी।

६—छठा सप्ताह ता० १३ से १९ अगस्त तक

यह हफ्ता घटाबढ़ीका है, पहले मंदा होके तेजी होगी। ता० १३-१६-१७ घटबढ़ होके मंदा। ता० १४-१५-१८-१९ तेजीमें रहेगी। ता० १३-१६-१७ इनमें तो जरूर मंदी होके तेजी होगी।

७—सातवां सप्ताह ता० २० से २६ अगस्त तक

यह हफ्ता सामान्य भाव दिखाके मंदा रहेगा, अतः बाजार देखके कार्य करनेका है। मंगल शुक्र का योग तो चांदी तेजी चाहता है अन्य सब ग्रह मंदी चाहते हैं। ता० २३-२४-२५-२६ ज्यादा करके मंदीमें ही गुजरेगी। ता० २४ को घटा बढ़ी बहुत है। केवल मंदा ध्यान नहीं रखता, तेजी भी इस दिन होगी।

८—आठवां सप्ताह ता० २७ से ३ सितम्बर तक

यह हफ्ता घटा बढीमें रहेगा, विशेष रूप मंदी का रहेगा। ता० २७-२८-२९ इनमें एक तेजी